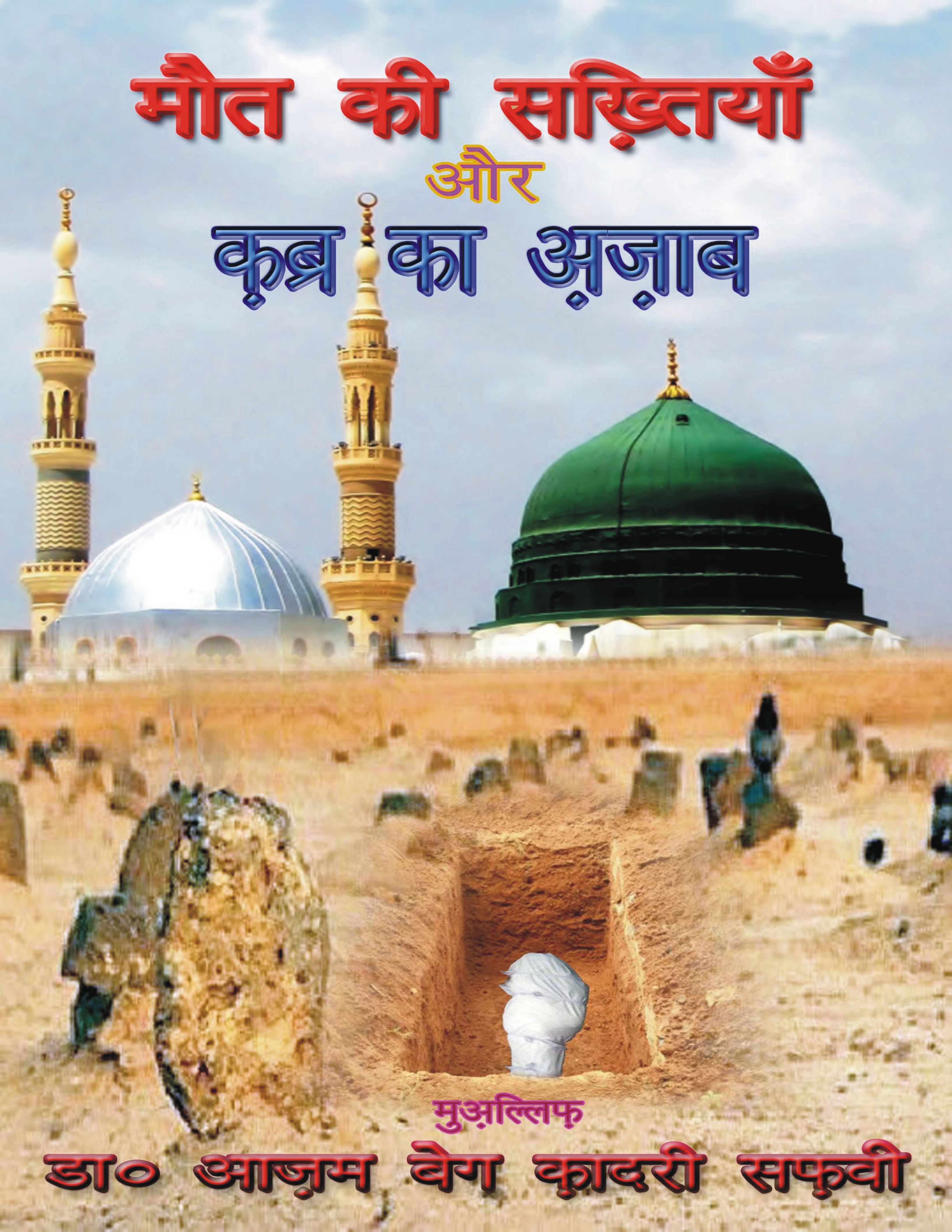
मौत की सख़्तियाँ
और
क़ब्र का अ़ज़ाब



मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

मौत की सख़्तियाँ
और
क़ब्र का अज़ाब

मुअल्लिफ़
डॉ०-आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
09897626182

नाम किताब– मौत की सख़्तियाँ और क़ब्र का अ़ज़ाब

मुअ़ल्लिफ़–डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

सने इशाअ़त–अप्रैल– **2020**

कम्पोज़िंग–जुनैद अ़ली सफ़वी &
जै़नुल आ़बदीन सफ़वी

नाशिर–सय्यद ज़हीरउद्दीन साहब

क़ीमत– **30/-** रूपये

–: मिलने के पते :–

मदार बुक डिपो मकनपुर (कानपुर) 09695661767	जावेद बुक सेलर करहल (मैनपुरी) 09634447000
अनवार उर्दू बुक डिपो बिसात खाना मैनपुरी 09319086703	उर्दू बुक हाउस तलाक महल (कानपुर) 09389837386,09559032415

-: फ़ेहरिस्त मज़ामीन :-

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरूदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया–किराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया–ए–किराम व सूफ़िया–ए–इज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद :-

मौत एक ऐसी शैः है जिसका मज़ा हर जानदार को चखना है और मौत हर जानदार पर अपने वक़्त मुअ़इयन पर वारिद हो जाती है और हर इन्सान को ये बात ज़हन नशीन रखना चाहिये कि जो भी दुनियाँ में पैदा हुआ है उसे एक दिन मरना भी है और ये अल्लाह तबारक व तआ़ला का निज़ाम है और मौत से ना कोई बच सका है और न कोई बच सकेगा इसलिये हर इन्सान को चाहिये कि हमा वक़्त अपनी आख़िरत की तैयारी में लगा रहे और आख़िरत की याद और उसकी तैयारी ही से निजात और कामयाबी है वरना हलाकत और बर्बादी और सख़्त अ़ज़ाब के सिवा उसे कुछ भी हासिल न होगा

आख़िरत की याद व उसकी तैयारी दुनियाँ से बेरग़बती और नेक आअ़माल की तरफ़ राग़िब करती है मौत की सख़्तियाँ और क़ब्र के अ़ज़ाब का तसव्वुर हमें गुनाहों से किनारा कश रहने और अल्लाह व रसूल की इताअ़त की तरफ़ माइल करता है और इन्सान की हक़ीक़ी और दायमी मन्ज़िल व रिहाइश गाह दुनियाँ नहीं बल्कि आख़िरत है और दुनियाँ महज़ चन्द दिनों का सफ़र है और सफ़र कभी न कभी ख़त्म होने वाली शैः है जो क़ब्र में जाकर ख़त्म हो जाता है और दुनियाँ फ़ानी है और आख़िरत हमेशगी का घर है जहाँ इन्सान को कभी मौत न आयेगी।

ऐ ग़फ़लत में ज़िन्दगी जीने वाले ऐ बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी को फ़ानी के बदले फ़रोख़्त करने वाले क्या तू नहीं जानता कि मौत के फ़रिश्ते तेरी रुह क़ब्ज़ करने के इन्तिज़ार में खड़े हैं पस जैसे ही तेरी मौत का वक़्त आयेगा वो तेरी रुह क़ब्ज़ कर लेंगे फिर ज़रा सोच कि तेरे साथ क्या होगा क्या तेरे घर वाले तेरे काम आयेंगे या तेरा माल तेरे काम आयेगा ऐ- ज़मीन की पुश्त पर इतराकर चलने वाले एक दिन तुझे ज़मीन के पेट में भी जाना है तो उस दिन के लिये तेरी क्या तैयारी है क्या तू क़ब्र में फ़रिश्तों के सवालों के जवाब दे सकेगा क्या तू क़ब्र के सख़्त अ़ज़ाब को बर्दाश्त कर सकेगा जब तुझे रात के अंधेरों से डर लगता है तो क्या क़ब्र के ख़ौफ़नाक अंधेरों में तू रह सकेगा नेक लोगों की ज़िन्दगी ऐशो इशरत में नहीं गुज़री बल्कि उन्होंने अपनी रातें इबादत व ज़िक्रे इलाही और तिलावते कुरान के साथ गुज़ारी और अपने रब के लिये सज्दे और क़याम में रातें गुज़ारी और अपना दिन अल्लाह व रसूल की इताअ़त और नेक आअ़माल में सर्फ़ किया।

ऐ ग़ाफ़िल तू बग़ैर सामाने सफ़र के आख़िरत का सफ़र कैसे तय करेगा जब रेहलत का वक़्त आयेगा तब तू पछतायेगा और शर्मिन्दा होगा और गुनाहों के बोझ से लदा हुआ तू क़ब्र की तरफ़ हाँका जायेगा और तंग व तन्हा क़ब्र में तुझे दफ़न कर दिया जायेगा जिससे बाहर निकलने का कोई रास्ता न होगा फिर मैदाने हश्र की तरफ़ हाँका जायेगा उससे बाद सिर्फ़ हौलनाकियाँ ही हौलनाकियाँ होगी

और फिर तुम्हें दोबारा दुनियाँ में न भेजा जायेगा ऐ ग़फ़लत में ज़िन्दगी जीने वाले क्या तुझे मालूम है कि तेरे कितने गुनाह लिखे जो चुके हैं ऐ दुनियाँ को अपना घर समझने वाले और अपने असल ठिकाने से नावाक़िफ़ क्यो तू ग़फ़लत के समुन्दर में गोते खा रहा है और अपनी आख़िरत बर्बाद कर रहा है अब भी वक़्त है अल्लाह से तौबा कर और अपनी आख़िरत की तैयारी में लग जा और कसरत से नेक आअ़माल कर व गुनाहों से इजतिनाब कर और इस दुनियाँ को तलाक दे दे और मौत के सफ़र व क़ब्र के अंधेरों के लिये कसीर नेक आअ़माल कर।

अल्लाह तबारक व तअ़ाला अपने प्यारे महबूब सरवरे कायनात रहमते दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) के सद्क़े व तुफ़ैल इस किताब को अपनी मुक़द्दस बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और इस किताब को उम्मते मुस्लिमा की इस्लाह व फ़ैज़ान का ज़रिया बनाये–आमीन।

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

09897626182

-: मुसलमान के मुसलमान पर हुक़ूक़ :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- कि मुसलमान के मुसलमान पर पाँच हक़ हैं-
(1) दावत कुबूल करना (2) सलाम का जवाब देना (3) बीमार की अ़यादत करना (4) छींकने पर अल्हम्दुलिल्लाह के जवाब में यरहमुकल्लाह कहना (5) जनाज़े में शरीक होना।
(इब्ने माजा-सुनन-1/490-ह०-1435)
(बुख़ारी-सही-2/60-ह०-1240)
(अबू दाऊद-सुनन-6/769-ह०-5030)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-4/626-ह०-6616)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर नेकी में छः हुक़ूक़ हैं-
(1) जब मुलाक़ात करे तो सलाम करे (2) उसकी दावत कुबूल करे (3) छींकने का जवाब दे (4) बीमार हो तो अ़यादत करे (5) मर जाये तो उसके जनाज़े के पीछे चले (6) और उसके लिये वही चीज़ पसंद करे जो अपने लिये पसंद करता है।
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/475-ह०-2736)
(मुस्लिम-सही-5/337-ह०-5651)

-: क़रीबुल मौत के अहवाल :-

➡हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- कि अल्लाह तआ़ला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे बीमारियों व तकलीफ़ों और मसाइबो आलाम और आज़माइशों में मुब्तिला कर देता है।
(बुख़ारी-सही-5/422-ह०-5645)
(इब्ने हिब्बान-सही-4/64-ह०-2907)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- कि अल्लाह तआ़ला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे उसके गुनाहों की सज़ा (बीमारी या कोई तकलीफ़ की शक्ल में) दुनियाँ में ही देता है ताकि वो आख़िरत के अ़ज़ाब से बच जाये।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-1/703-ह०-1291)
(इब्ने हिब्बान-सही-4/67-ह०-2911)

-: बीमारी व दीगर तकलीफ़ो परेशानी के सबब गुनाहों में तख़फ़ीफ़ होती है :-

➡हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने-

फ़रमाया कि बुख़ार को बुरा मत कहो क्योंकि वो दूर करता है इन्सान के गुनाहों को जैसे भट्टी लोहे का मैल दूर करती है।
(मुस्लिम–सही–6/204-ह०–6570)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/533-ह०–10915)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/605-ह०–6561)
(हाकिम–अलमुस्तदरक–1/698-ह०–1279)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/85-ह०–2936)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक मरीज़ की अ़यादत की (जिसको बुख़ार था) तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि खुशख़बरी हो बेशक अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ये (बुख़ार) मेरी आग है जो मैं मोमिन बन्दे पर दुनियाँ में इसलिये मुसल्लत करता हूँ ताकि वो आख़िरत की आग के बदले में उसका हिस्सा हो जाये।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/531-ह०–10907)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन की मिसाल लोहे की तरह है कि जब उसे बुख़ार या दीगर तकलीफ़ पहुँचती है तो उसका मैल (गुनाह) ख़त्म हो जाते हैं और पाकीज़गी बाक़ी रह जाती है यानी जिस तरह लोहे को आग में डालने से मैल कुचैल ख़त्म हो जाता है और असल लोहा बच रहता है।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/599-ह०–6544)

-: बुख़ार को पानी से ठंडा करो :-

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बुख़ार जहन्नुम की भाप से है पस इसे पानी ठंडा करो।
(मुस्लिम-सही-5/362-ह०-5755)

-: बीमारी व दीगर तकलीफ़ो परेशानी गुनाहों का कफ़्फ़ारा है :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि जब ये आयत उतरी ''जो कोई बुराई करेगा उसको उसका बदला मिलेगा''(सू०-निसा-123) तो मुसलमानों पर बहुत सख़्त गुज़रा कि हर गुनाह के बदले ज़रुर अज़ाब होगा तो सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ क्योंकि मुसलमान को जो भी तकलीफ़ पहुँचती है तो वो उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है यहाँ तक कि जो उसे ठोकर लगती है या उसे कोई काँटा भी चुभता है तो वो भी उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है। (मुस्लिम-सही-6/203-ह०-6569)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-4/595-ह०-6525)
(इब्ने हिब्बान-सही-4/76-ह०-2923)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब-2/409-ह०-1725)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमाते हैं कि मोमिन की हर बीमारी उसके लिये गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/701-ह०–1286)

–: बीमारियाँ गुनाहों को ख़त्म करने का बेहतरीन ज़रिया हैं :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमाते हैं कि किसी मुसलमान को जब किसी बीमारी से तकलीफ़ पहुँचे या किसी और तरह तकलीफ़ पहुँचे तो अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को गिरा देता है जैसे दरख़्त अपने पत्ते गिराता है।
(मुस्लिम–सही–6/202-ह०–6559)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/530-ह०–10905)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/593-ह०–6531)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/409-ह०–1724)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/79-ह०–2927)

–: मुसलसल मुसीबतों से तमाम गुनाह ख़त्म हो जाते हैं :–

➡ हज़रत मुस्अ़ब बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) लोगों में सबसे ज़्यादा तकलीफ़ किस पर आती है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अम्बिया किराम पर फिर उन लोगों पर जो इन्के मिस्ल हैं और जिन बन्दों पर मुसलसल मुसीबतें आती हैं तो वो बन्दा अपने रब से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उस पर कोई गुनाह न होगा।

(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/537-ह०–10933)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब किसी मुसलमान को तकलीफ़ या बीमारी में मुब्तिला फ़रमाता है तो फ़रिश्ते को हुक्म फ़रमाता है कि इसके लिये नेक अ़मल लिख दो जो ये तन्दरुस्ती की हालत में किया करता था फिर अगर अल्लाह तआ़ला उसको शिफ़ा अ़ता करे तो उसको गुनाहों से पाको साफ़ फ़रमाता है और अगर उस तकलीफ़ या बीमारी में उसे मौत दे दे तो अल्लाह तआ़ला उसकी मग़फिरत फ़रमाता है और उससे रहमत का मुआ़मला फ़रमाता है।

(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/537-ह०–10936)

➡ हज़रत उम्मे अ़ला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती है कि मैं बीमार हो गई तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) मेरी अ़यादत के लिये तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ऐ उम्मे अ़ला तुम्हें खुशख़बरी हो कि बिला शुबा मुसलमान की बीमारी के ज़रिये से अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों को ख़त्म कर देता है जैसे कि आग सोने और चाँदी का खोट को निकाल देती है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/498-ह०–3092)

–: बीमारियों के सबब से दरजात बुलन्द होते हैं :–

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है हत्ता कि उसे काँटा भी चुभे तो इसके सबब से अल्लाह तआ़ला उसका दर्जा बुलन्द करता है और उसके गुनाह में तख़फ़ीफ़ करता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/539-ह०–965)
(अबू दाऊद–सुनन–3/498-ह०–3093)
(मुस्लिम–सही–6/202-ह०–6561)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/531-ह०–10906)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/596-ह०–6541)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/497-ह०–1278)

-: बीमारियों के न होने में ख़ैर नहीं :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक देहाती से पूछा कि क्या तुझे कभी बुख़ार आया है उसने जवाब दिया नहीं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने पूछा क्या तुझे कभी सर में दर्द हुआ है उसने जवाब दिया नहीं जब वो देहाती चल दिया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने सहाबा-किराम से फ़रमाया कि जो शख़्स किसी जहन्नुमी को देखना चाहे वो इसे देख ले (हाकिम-अल मुस्तदरक-1/699-ह०-1283)

-: बीमारी में दवा का इस्तेअ़माल करना मगर शिफ़ा अल्लाह की तरफ़ से :-

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर बीमारी की एक दवा है जब वो दवा पहुँचती है तो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से शिफ़ा हो जाती है।
(मुस्लिम-सही-5/360-ह०-5741)

➡ हज़रत उसामा बिन शरीक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि (बीमारी में) दवा लिया करो बिला शुबा अल्लाह तआ़ला ने कोई ऐसी बीमारी पैदा नहीं की कि जिसकी दवा पैदा न की हो

(यानी अल्लाह तआ़ला ने हर बीमारी की दवा पैदा की है) सिवाये बुढ़ापा के (यानी इसका कोई इलाज नहीं है) (अबू दाऊद–सुनन–5/30-ह०–3855)

➡ हज़रत उसामा बिन शरीक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के बन्दो (बीमारी में) दवा का इस्तेअ़माल किया करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने हर मर्ज़ के लिये शिफ़ा या दवा रखी सिवाये एक मर्ज़ के और वो बुढ़ापा है। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1087-ह०–2038)

–: हराम चीज़ों से इलाज की मुमानियत :–

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा अल्लाह तआ़ला ने बीमारी और दवा दोनों नाज़िल फ़रमाई और हर बीमारी के लिये दवा है लिहाजा दवा का इस्तेअ़माल किया करो लेकिन हराम चीज़ों से इलाज न किया करो। (अबू दाऊद–सुनन–5/40-ह०–3874)

➡ हज़रत सुवैद बिन तारिक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्ललललाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने शराब से मुमानियत फ़रमाई नीज फ़रमाया ये दवा नहीं बल्कि बीमारी है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1093-ह०–2046)
(अबू दाऊद–सुनन–5/39-ह०–3873)

–: बीमार शख़्स का खाना पीना :–

➡ हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया अपने बीमारों पर खाने के लिये जबरदस्ती न किया करो क्योंकि अल्लाह तआ़ला उनको खिलाता और पिलाता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1089-ह०–2040)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/453-ह०–9229)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक मर्द की अ़यादत की तो उससे पूछा कि किस चीज़ की ख़्वाहिश है वो कहने लगा कि मुझे गन्दुम की रोटी की ख़्वाहिश है तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जिसके पास गन्दुम की रोटी हो तो वो अपने भाई के यहाँ भेज दे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुम में से किसी बीमार को किसी चीज़ की ख़्वाहिश हो तो वो चीज़ उसको खिलाये।
(इब्ने माजा–सुनन–1/491-ह०–1439)

–: बीमारी व सफ़र में छूट जाने वाले नेक आअ़माल लिखे जाते हैं :–

➡ हज़रत अबू मुसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई बन्दा जो नेक अ़मल करता रहा हो मगर बीमारी या सफ़र की वजह से वो न कर सके तो अल्लाह तआ़ाला उसके लिये वो अ़मल उसी तरह लिखता है जिस तरह तन्दरुस्ती या मुक़ीम होने की हालत में उसका अ़मल लिखा जाता था।
(अबू दाऊद–सुनन–3/497-ह०–3091)
(बुख़ारी–सही–3/317-ह०–2996)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमानों में से किसी को कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह तआ़ाला फ़रिश्तों को हुक्म देता है कि मेरे बन्दे का आअ़माल नामे में वो अ़मल लिखो जो अ़मल वो सहीह होने की हालत में किया करता था (और अब बीमारी या तकलीफ़ की वजह से नहीं कर पा रहा)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/531-ह०–10909)

–: चार बीमारियों को बुरा न जानो :–

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया चार बीमारियों को बुरा न जानो (1)–आँखों की तकलीफ़ को बुरा न जानो बेशक वो नाबीना पन की जड़ों को ख़त्म करती है यानी इन्सान को नाबीना होने से बचाती है

2–जुकाम को बुरा न जानो बेशक वो कोढ़ की जड़ों को ख़त्म करता है यानी इन्सान कोढ़ी नहीं होता।
3–खाँसी को नापसंद न करो बेशक वो फ़ालिज़ की जड़ों को ख़त्म करती है यानी इन्सान फ़ालिज़ से महफ़ूज़ रहता है।
4–फोड़े फुन्सियों को बुरा न जानो बेशक वो सफ़ेद दागों की जड़ों को ख़त्म करता है यानी इन्सान सफ़ेद दागों से महफ़ूज़ रहता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/451-ह०–9212)

–: बीमारी में सब्र करने वाले को अ़ज़ीम अज्र की बशारत :–

➡ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई बन्दा बीमार होता है तो अल्लाह तआ़ला उस बीमार बन्दे की तरफ़ दो फ़रिश्तों को भेजता है कि देखो मेरा बीमार बन्दा अ़यादत करने वालो से शिकवा शिकायत करता है या मेरी हम्द व सना बयान करता है (यानी सब्र व शुक्र पर क़ायम रहता है) अगर वो अपनी बीमारी पर अल्लाह का शुक्र अदा करता है और सब्र पर क़ायम रहता है तो फिर वो दोनों फ़रिश्ते उस (हम्दो सना बग़ैराह) को लेकर अल्लाह तआ़ला के पास हाज़िर होते हैं हालाँकि अल्लाह तआ़ला खूब जानने वाला और खूब सुनने वाला है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैंने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है कि अगर मैंने इसे मौत दी तो मैं इसे जन्नत में दाख़िल करूँगा और अगर मैंने इसे शिफ़ा दी तो मैं

इसके गोस्त के बदले बेहतरीन गोस्त और खून के बदले बेहतर खून अ़ता करुँगा और इसके गुनाह माफ़ फ़रमाऊँगा।
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/410-ह०–1727)
(मौता इमाम मालिक–2/940)

–: अ़यादत के फ़ज़ाइल व अहकाम :–

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक एक मुसलमान जब अपने किसी मुसलमान भाई की अ़यादत करता है तो वहाँ से लौटने तक वो बराबर जन्नत के बाग़ में रहता है।
(मुस्लिम–सही–6/200-ह०–6551)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/540-ह०–967)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/538-ह०–10937)
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/612-ह०–6580)

➡ हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मुसलमान मरीज़ की अ़यादत करता है तो वो अल्लाह तआ़ला की रहमत में ग़ोते लगाता है और जब वो उस मरीज़ के पास बैठता है तो वो रहमत में डूब जाता है।
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/419-ह०–1746)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अच्छी तरह वुज़ू किया और सवाब की नियत से अपने मुसलमान भाई की अ़यादत के लिये गया तो उसे जहन्नुम से सत्तर साल की मुसाफ़त पर दूर कर दिया जाता है। (अबू दाऊद–सुनन–3/501-ह०–3097)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स शाम के वक़्त किसी मरीज़ की अ़यादत के लिये निकलता है तो उसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते भी निकलते हैं जो उसके लिये सुबह तक बख़्शिश तलब करते रहते हैं और जन्नत में उसे एक बाग़ भी हासिल होगा और जो कोई सुबह के वक़्त अ़यादत को निकले तो उसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते निकलते हैं जो उसके लिये शाम तक बख़्शिश माँगते रहते हैं और जन्नत में उसे एक बाग़ भी हासिल होता है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/502-ह०–3098)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/541-ह०–969)
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/613-ह०–6584)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/690-ह०–1264)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है फ़रमाती हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम बीमार के पास जाओ या मय्यत के पास जाओ तो–

अच्छी बात कहो क्योंकि फ़रिश्ते तुम्हारी बात पर आमीन कहते हैं।
(मुस्लिम–सही–2/378-ह०–2129)
(अबू दाऊद–सुनन–3/513-ह०–3115)
(नसाई–सुनन–1/597-ह०–1828)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स किसी की अ़यादत को जाता है तो गोया वो जन्नत के बाग़ में चलता है जब वो बैठता है तो रहमत उसे ढाँप लेती है और अगर ये सुबह का वक़्त हो तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते शाम तक उसके लिये रहमत की दुआ़ करते हैं और अगर शाम का वक़्त हो तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिये रहमत की दुआ़ करते हैं।
(अबू दाऊद–सुनन–3/502-ह०–3098)
(इब्ने माजा–सुनन–1/492-ह०–1442)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/104-ह०–2958)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/689-ह०–1264)
(तबरानी–अल मुअ़जम औसत–5/605-ह०–7464)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/444-ह०–9173)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/539-ह०–10941)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ इब्ने आदम मैं बीमार हुआ और तूने मेरी अ़यादत न की बन्दा अ़र्ज़

करेगा कि ऐ मेरे रब मैं तेरी अ़यादत कैसे करता जबकि तू खुद तमाम जहानों का पालने वाला है इरशाद होगा क्या तूझे मालूम नहीं कि मेरा फुलाँ बन्दा बीमार हुआ और तूने उसकी अ़यादत न की क्या तू नहीं जानता की अगर तू उसकी अ़यादत करता तो मुझे उसके पास मौजूद पाता।
(मुस्लिम–सही–6/201-ह०–6556)
(इब्ने हिब्बान–सही–1/426-ह०–269)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/446-ह०–9182)
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/418-ह०–1742)

–:बीमार को ज़िन्दगी की उम्मीद दिलाना:–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम बीमार की अ़यादत को जाओ तो उसे ज़िन्दगी की उ़म्मीद दिलाओ क्योंकि ये किसी चीज़ को लौटा तो नहीं सकती लेकिन बीमार के दिल को खुशी देती है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/491-ह०–1438)

–: बीमार से दुआ़ कराना :–

➡हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम बीमार के पास जाओ तो उससे कहो कि वो तुम्हारे हक़ में दुआ़ करे क्योंकि बीमार की दुआ़ फ़रिश्तों की दुआ़ के मिस्ल होती है। (इब्ने माजा–सुनन–1/491-ह०–1441)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/451-ह०–9214)

हिस्सा दोम

गुस्ल, कफ़न व जनाज़े के अहकाम

-: गुस्ल के अहकाम :-

➡ हज़रत उम्मे अ़तिया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) हमारे यहाँ तशरीफ़ लाये हम आपकी साहबज़ादी उम्मे कुलसुम को नहला रही थी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया अगर तुम मुनासिब समझो तो पानी में बेरी के पत्ते डालकर तीन या पाँच या इससे ज़्यादा मर्तबा इनको गुस्ल दो और आखिरी मर्तबा थोड़ा-सा काफ़ूर भी मिला लेना और जब गुस्ल से फ़ारिग़ हो जाओ तो मुझे इत्तिलाअ़ कर देना जब हम फ़ारिग़ हुये तो हमने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को इत्तिलाअ़ दी आपने अपना तहबन्द हमारी तरफ़ फेंका और फ़रमाया- इससे अन्दर का कपड़ा बना दो (एक रिवायत में है कि गुस्ल को दाँयी जानिब से शुरु करो और आज़ा-ए-वुज़ू से इब्तिदा करो)
(इब्ने माजा-सुनन-1/496-ह०-1458)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/550-ह०-990)
(बुख़ारी-सही-2/66-ह०-1253)
(मुस्लिम-सही-2/391-ह०-2186)
(अबू दाऊद-सुनन-3/531-ह०-3142)
(नसाई-सुनन-1/616-ह०-1884)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- कि अपनी रान नंगी न करो

और किसी ज़िन्दा या मुर्दे की रान पर नज़र न डालो। (इब्ने माजा–सुनन–1/497-ह०–1460)
(अबू दाऊद–सुनन–3/530-ह०–3140)

औऱत अपने शौहर को गुस्ल दे सकती है

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि अगर मुझे पहले ये ख़्याल आ जाता जो बाद में आया तो हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) को आपकी अज़वाजे मुत्हरात ही गुस्ल देतीं।
(इब्ने माजा–सुनन–1/498-ह०–1464)
(अबू दाऊद–सुनन–3/530-ह०–3141)

➡ उम्मे जाअ़फर बयान करतीं है कि फ़ातिमा बिन्ते रसूल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने कहा ऐ अस्मा जब मैं फ़ौत हो जाऊँ तो तुम और मौला अ़ली मिलकर मुझे गुस्ल देना सो उनको मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) और अस्मा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने गुस्ल दिया।
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/645-ह०–6660)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अस्वद बयान करते हैं कि बेशक अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अपनी बीवी को गुस्ल दिया जब वो फ़ौत हो गई फिर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) कहते हैं कि खाविन्द ज़्यादा हक़दार है कि बीवी को गुस्ल दे।
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/646-ह०–6662)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुम मुझसे क़ब्ल फ़ौत हो जाओ तो मैं तुम्हें गुस्ल दूँगा और तुम्हारा जनाज़ा पढ़कर दफ़न कर दूँगा।
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/645-ह०–6659)

(हज़रत मौला अ़ली रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को गुस्ल दिया)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने ये वसीअ़त की थी कि उन्हें गुस्ल उनकी बीबी अस्मा बिन्ते उमैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) दें लेकिन उनकी मौत के वक़्त वो बहुत कमज़ोर हो चुकी थीं इसलिये उनका ताअ़व्वुन अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने किया।
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/646-ह०–6663)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस शख़्स पर रहम फ़रमाये जिसे उसकी बीबी ने गुस्ल दिया और वो अपने पुराने कपड़ों में कफ़न दिया गया ऐसा अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के साथ किया गया उन्हें गुस्ल उनकी

बीबी हज़रत अस्मा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने दिया और कफ़न उन्हीं कपड़ों में दिया गया जो उन्होंने पुराने कर लिये थे।
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/647-ह०–6664)

–: हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का गुस्ल व कफ़न :–

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैह वसल्लम) को गुस्ल देने लगे तो अन्दर से किसी पुकारने वाले ने पुकारा कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की कमीस न उतारना (इससे पहले सहाबा किराम तरद्दुद (पसो पेश) में थे कि गुस्ल के लिये कपड़े उतारें या नहीं)।
(इब्ने माजा–सुनन–1/499-ह०–1466)
(अबू दाऊद–सुनन–3/531-ह०–3141)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/712-ह०–1306)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) को तीन सफ़ेद कपड़ो में कफ़नाया गया।
(इब्ने माजा–सुनन–1/499-ह०–1469)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/553-ह०–996)
(बुख़ारी–सही–2/74-ह०–1271)
(मुस्लिम–सही–2/394-ह०-2179)
(अबू दाऊद–सुनन–3/535-ह०–3151)
(नसाई–सुनन–1/620-ह०–1901)

–: छोटे बच्चों का कफ़न :–

➡ हज़रत हसन (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैह) फ़रमाते हैं कि दूध पीते बच्चे या दूध छुड़वाये हुये बच्चे को ख़िरक़ा में कफ़न देंगे और अगर इससे बड़ा है तो उसको कमीस और दो खिरक़ों में कफ़न देंगे।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/585-ह०–11209)

–: हज़रत उम्मे कुलसुम का कफ़न :–

➡ हज़रत लैला बिन्ते क़ानिफ़ सक़ाफ़िया (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) बयान करती हैं कि मैं उन औ़रतों में शामिल थी जिन्होंने हज़रत उम्मे कुलसुम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) दुख़्तर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को उनकी वफ़ात के वक़्त गुस्ल दिया था आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने हमें (उनके कफ़न के लिये) सबसे पहले अपना तहबन्द इनायत फ़रमाया, फिर कमीस, फिर ओढ़नी, फिर एक चादर उनको लपेटने के लिये फिर उन (कपड़ों) के बाद उन (मुहतरमा) को एक दूसरे कपड़े में लपेटा गया बयान करती हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) कफ़न के लिये दरवाज़े के तशरीफ़ फरमां थे और हमें एक–एक कपड़ा देते जाते थे।
(अबू दाऊद–सुनन–3/537-ह०–3157)

–: गुस्ल व कफ़न देने के फ़ज़ाइल :–

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने मय्यत को गुस्ल दिया और उसके ऐब को छुपाया तो उसकी चालीस मर्तबा मग़फ़िरत की जायेगी और जिसने मय्यत को कफ़न दिया तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत का बारीक और रेशम का लिबास पहनाऐगा और जिसने मय्यत के लिये क़ब्र खोदी और उसको उसमें दफ़न किया तो उसको रोज़े क़यामत तक ऐसे अज्र मिलेगा जैसे किसी को घर और ठिकाना देने का अज्र होता है।
(बैहक़ी–शअ़बुल ईमान–7/24-ह०–9265)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/712-ह०–1307)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने मय्यत को गुस्ल दिया और उसके ऐब व नक़्स को छुपाया तो उसके गुनाह और ख़ताऐं ऐसे नेस्त व नाबूद हो जायेंगी जैसे उसकी माँ ने उसे आज ही जना हो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/24-ह०–9266)

➡ हज़रत सईद बिन मुसय्यब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स

मय्यत को कफ़न पहनाऐगा तो अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत का रेशमी लिबास पहनाऐगा।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/775-ह०–12202)
(हाकिम–अल मुस्तदरक)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो किसी मय्यत को नहलाऐ, कफ़न पहनाऐ, खशबू लगाऐ और उसको उठाऐ, नमाज़ जनाज़ा पढ़े और कोई ऐब बग़ैराह देखे तो उसे ज़ाहिर न करे तो वो अपनी खताओं से ऐसे पाक व साफ़ हो जाता है जैसे पैदाइश के दिन था।
(इब्ने माजा–सुनन–1/497-ह०–1462)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/595-ह०–11268)

–: जनाज़े के अहकाम :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो कोई जनाज़े के साथ चले तो चारपाई की चारो जानिब से (बारी–बारी) उठाऐ तो अल्लाह तआ़ला उसके चालीस कबीरा गुनाह माफ़ फ़रमायेगा और ये सुन्नत है फिर इसके बाद अगर चाहे तो निफ़िल के तौर पर छोड़ दे।
(इब्ने माजा–सुनन–1/502-ह०–1478)
(कंजुल उम्माल–8/257-ह०–42365)

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने देखा एक जनाज़े को लोग जल्दी जल्दी ले जा रहे हैं तो फ़रमाया तुम पर सुकून और वक़ार की कैफ़ियत होनी चाहिये।
(इब्ने माजा–सुनन–1/502-ह०–1479)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक जनाज़े में कुछ लोगों को सवारियों पर सवार देखा तो फ़रमाया– क्या तुमको हया नहीं आती कि अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्ते पैदल चल रहे हैं और तुम सवार हो।
(इब्ने माजा–सुनन–1/502-1480)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/561-ह०–1012)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मरीज़ की अ़यादत करो और जनाज़े के साथ चलो ये तुम्हें आख़िरत की याद दिलाती हैं।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/540-ह०–10946)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि

जनाज़े के पीछे चलना चाहिये जनाज़े के आगे नहीं जो जनाज़े के आगे चला वो जनाज़े के साथ नहीं।
(इब्ने माजा–सुनन–1/503-ह०–1484)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/560-ह०–1011)

–: जनाज़ा देखकर खड़ा होना :–

➡ हज़रत आमिर बिन रबीअ़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम जनाज़ा देखो तो उसके लिये खड़े हो जाओ यहाँ तक कि वो तुम से आगे निकल जाये या ज़मीन पर रख दिया जाये।
(इब्ने माजा–सुनन–1/522-ह०–1542)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/575-ह०–1042)
(बुख़ारी–सही–2/93-ह०–1307)
(मुस्लिम–सही–2/206-ह०–2217)
(अबू दाऊद–सुनन–3/546-ह०–3172)
(नसाई–सुनन–1/625-ह०–1918)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हमारे पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) (उस मय्यत के एहतराम में) खड़े हो गये और आपके साथ हम भी खड़े हो गये फिर हम अ़र्ज़ गुज़ार हुये या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ये तो यहूदी का जनाज़ा है तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–

जब तुम जनाज़े को देखो तो खड़े हो जाया करो।
(बुख़ारी–सही–2/95-ह०–1311)
(मुस्लिम–सही–2/406-ह०–2217)
(नसाई–सुनन–3/625-ह०–1918)
(मुस्लिम–सही–2/407-ह०–2222)
(अबू दाऊद–सुनन–3/547-ह०–3174)
(नसाई–सुनन–1/626-ह०–1925)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/718-ह०–1321)

➡ हज़रत सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पास से जब कोई जनाज़ा गुज़रता तो जब तक वो जनाज़ा गुज़रता रहता आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) खड़े रहते।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/717-ह०–1318)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि अगर हमारे क़रीब से कुफ़्फ़ार का जनाज़ा गुज़रे तो क्या हमें खड़े होना चाहिये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ और इसलिये भी खड़े हो क्योंकि तुम्हारा खड़ा होना उस काफ़िर मय्यत के लिये नहीं बल्कि उन तमाम मलायका के एहतिराम के लिये होगा जिन्होंने उसकी रूह क़ब्ज़ की है। (हाकिम–अल मुस्तदरक–1/718-ह०–1320)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू लैला (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ और हज़रत क़ैस बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) बैठे हुये थे कि उनके पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो वो दोनों खड़े हो गये उनसे कहा गया ये तो यहाँ के काफ़िर ज़िम्मी शख़्स का जनाज़ा है तो उन दोनों ने बयान फ़रमाया कि (एक मर्तबा) हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के पास से जनाज़ा गुज़रा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) खड़े हो गये और आपसे अ़र्ज़ किया गया कि ये तो यहूदी का जनाज़ा है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया क्या ये इन्सानी जान नहीं है।

(बुख़ारी–सही–2/95-ह०–1312)
(मुस्लिम–सही–2/408-ह०–2225)
(नसाई–सुनन–3/626-ह०–1924)
(नसाई–सुनन–1/626-ह०–1924)

–: नमाज़े जनाज़ा :–

➡ हज़रत अबू ग़ालिब फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने एक मर्द का जनाज़ा पढ़ा तो उसके सर के मुक़ाबिल खड़े हुये फिर औ़रत का जनाज़ा आया तो लोगों ने कहा ऐ अबू हज़्ज़ा इसका जनाज़ा पढ़ा दीजिये तो आप चारपाई के दरमियान में खड़े हुये इस पर इब्ने ज़ियाद ने उनसे कहा कि ऐ अबू हज़्ज़ा क्या आपने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को इसी

तरह देखा कि मर्द और औ़रत के जनाज़े में इसी जगह खड़े हुये थे जहाँ–जहाँ आप खड़े हुये हैं तो उन्होंने फ़रमाया जी हाँ फिर हमारी तरफ़ मुतव्वजे होकर फ़रमाया कि इस बात को याद रखना। (अहनाफ़ मर्द और औ़रत दोंनों के सीने के बराबर खड़े होने को बेहतर ख़्याल करते हैं)
(इब्ने माजा–सुनन–1/506-ह०–1494)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/571-ह०–1034)
(अबू दाऊद–सुनन–3/558-ह०–3194)

➡ समुरा बिन जुन्दुब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक औ़रत की नमाज़े जनाज़ा वस्त (दरमियान) के मुक़ाबिल में खड़े होकर पढ़ायी।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/571-ह०–1035)
(मुस्लिम–सही–2/411-ह०–2235)
(अबू दाऊद–सुनन–3/561-ह०–3195)

➡ समुरा बिन जुन्दुब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैंने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पीछे एक औ़रत की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जो बा हालते निफ़ास फ़ौत हो गई थी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) उसके वस्त (दरमियान) में (यानी क़मर के मुक़ाबले) खड़े हुये थे।
(बुख़ारी–सही–2/104-ह०–1332)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो बच्चा पैदा होने के बाद रोये नहीं उसकी नमाज़े जनाज़ा नहीं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/570-ह०–1032)

➡हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने ग़जवा उहद के शुहदा की न नमाज़ पढ़ाई और न ही उनको गुस्ल दिया और खून समेत उनको दफ़न किया गया।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/570-ह०–11119)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/701-ह०–6795)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/734-ह०–1352)

➡ सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि शहीद की नमाज़ जनाज़ा नहीं है और न गुस्ल और न ही कफ़न।
(बुख़ारी–सही–2/109-ह०–1343)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/571-ह०–1036)
(बुख़ारी–सही–4/240-ह०–4079)
(अबू दाऊद–सुनन–3/527-ह०–3133,1334)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस मय्यत पर सौ (100) मुसलमानों का गिरोह नमाज़ पढ़े और वो सब उसकी बख़्शिश की दुआ़ करें तो उनकी

शफ़ाअ़त (उस मय्यत के हक़ में) कुबूल की जाती है।
(मुस्लिम–सही–2/399-ह०–2198)
(नसाई–सुनन–3/647-ह०–1995)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/568-ह०–1029)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/553-ह०–6039)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/20-ह०–9248)
(नसाई–सुनन–1/647-ह०–1995)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस मुसलमान के जनाज़े में चालीस आदमी ऐसे हों जिन्होंने अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न किया हो तो अल्लाह तअ़ाला उस मय्यत के हक़ में उनकी शफाअ़त ज़रुर कुबूल फ़रमाता है।
(मुस्लिम–सही–2/399-ह०–2199)

➡ हज़रत मालिक बिन हुबैर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस मय्यत पर तीन सफ़ों ने नमाज़ पढ़ी उसके लिये जन्नत वाजिब हो गई हज़रत मालिक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) जब किसी जनाज़े में लोगों की ताअ़दाद कम पाते तो उन्हें तीन सफ़ों में तक़सीम कर दिया करते थे। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/568-ह०–1028)
(अबू दाऊद–सुनन–3/542-ह०–3166)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/728-ह०–1341)

-: नमाज़े जनाज़ा का सवाब :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो किसी जनाज़े में शामिल हुआ तो उसके लिये एक क़ीरात सवाब है और जो दफ़न होने तक साथ रहा उसके लिये दो क़ीरात का सवाब है अ़र्ज़ किया गया कि दो क़ीरात क्या है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो अज़ीम पहाड़ों की मिस्ल (सवाब अ़ता होता है) एक रिवायत में है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि (उनमें यानी दो पहाड़ों में) से छोटा उहद पहाड़ के बराबर है।

(बुख़ारी–सही–2/101-ह०–1325)
(मुस्लिम–सही–2/397-ह०–2189)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/574-ह०–1040)
(अबू दाऊद–सुनन–4/543-ह०–3168)
(नसाई–सुनन–3/475-ह०–5038)
(इब्ने माजा–सुनन–1/522-ह०–1539)

-: क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि एक ख़ातून मस्जिद में झाड़ू दिया करती थी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने जब उनको न देखा तो कुछ रोज़ बाद उनके मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो अ़र्ज़ किया

गया कि उनका इन्तिक़ाल हो गया है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुमने मुझे इत्तिलाअ़ क्यों न दी फिर नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) उनकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गये और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।
(इब्ने माजा–सुनन–1/514-ह०–1527)
(मुस्लिम–सही–2/405-ह०–2215)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/572-ह०–1037,1038)
(बुख़ारी–सही–2/106-ह०–1337)
(अबू दाऊद–सुनन–3/566-ह०–3203)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/197-ह०–3087)

➡ हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआला अ़लैह वसल्लम) एक दिन उहद पहाड़ पर तशरीफ़ ले गये और अह्ले उहद पर नमाज़ पढ़ी जैसे कि किसी मय्यत पर पढ़तें हैं फिर वापस तशरीफ़ लाये। (अबू दाऊद–सुनन–3/577-ह०–3223) (बुख़ारी–सही–6/47-ह०–6426)

➡ हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) शुहदा–ए–उहुद पर (दोबारा) आठ साल बाद तशरीफ़ ले गये और अह्ले उहुद पर इस तरह नमाज़ पढ़ी जिस तरह मय्यत पर पढ़ी जाती है फिर आप मिम्बर पर जलवा अफरोज़ हुये और फ़रमाया मैं तुम्हारा पेशरू (आगे आगे चलना वाला) हूँ और तुम पर गवाही दूँगा और हमारी–

मुलाक़ात की जगह हौज़े कौसर है और मैं इस जगह से हौज़े कौसर को देख रहा हूँ और अल्लाह की क़सम मुझे तुम्हारे मुताअ़ल्लिक़ इस बात का डर नहीं कि तुम मेरे बाद शिर्क करने लगोगे बल्कि मुझे इस बात का डर है कि तुम दुनियाँ की मुहब्बत में मुब्तिला हो जाओगे और मुझे ये अन्देशा ज़रुर है कि तुम हुसूले दुनियाँ को पाने के लिये एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करोगे।
(बुख़ारी-सही-6/47-ह०-6426)
(मुस्लिम-सही-6/23-ह०-5976)
(अबू दाऊद-सुनन-3/577-ह०-3224)
(तबरानी-अल मुअ़जम कबीर-17/279-ह०-768)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि नजाशी का इन्तिक़ाल हो गया है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वस्ल्लम) और सहाबा बक़ीअ़ तशरीफ़ ले गये और हमने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वस्ल्लम) के पीछे सफ़ें बनाई और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वस्ल्लम) ने आगे बढ़कर चार तकवीरें कहीं।
(इब्ने माजा-सुनन-1/520-ह०-1534)
(मुस्लिम-सही-2/205-ह०-2215)
(अबू दाऊद-सुनन-3/566-ह०-3204)
(नसाई-सुनन-1/642-ह०-1974)

➡ हज़रत शुअ़बा (रह०) से रिवायत है कि उन्होंने कहा मुझे उस शख़्स ने हदीस बयान की है जो-

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के हमराह एक अलग-अलग क़ब्र के पास से गुज़रा तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने और सहाबा ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।
(बुख़ारी-सही-2/105-ह०-1336)
(अबू दाऊद-सुनन-3/561-ह०-3196)
(नसाई-सुनन-1/655-ह०-2027)

➡ हजरत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) एक शख़्स की अ़यादत किया करते थे वो शख़्स रात के वक़्त फ़ौत हो गया तो लोगों ने उसे रात को ही दफ़्न कर दिया जब सुबह हुई तो उन्होंने उसके मुताअ़ल्लिक़ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) को इत्तिलाअ़ दी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे (रात के वक़्त ही) ख़बर देने से तुम्हें किस चीज़ ने रोका था तो उन्होंने ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) रात का वक़्त था और सख़्त अंधेरा था इसलिये हमने आपको तकलीफ़ देना मुनासिब न समझा चुनांचा आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गये और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।
(बुख़ारी-सही-2/64-ह०-1247)
(बुख़ारी-सही-2/99-ह०-1321)
(मुस्लिम-सही-2/404-ह०-2211)

–: गायबाना शख़्स की नमाज़े जनाज़ा :–

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा बिन असीद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) सहाबा को लेकर निकले और फ़रमाया कि अपने उस भाई का जनाज़ा पढ़ो जो तुम्हारे वतन के अलावा किसी और जगह इन्तिक़ाल कर गये हैं लोगों ने अ़र्ज़ किया कि वो कौन हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–नजाशी।
(इब्ने माजा–सुनन–1/521-ह०–1537)

➡ हज़रत इमरान बिन हसीन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हारे नजाशी का इन्तिक़ाल हो गया है तो उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ो फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) खड़े हुये और हमने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी और मैं दूसरी सफ़ में था और उनकी नमाज़ में दो सफ़े थी।
(इब्ने माजा–सुनन–1/520-1535)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/573-ह०–1039)
(बुख़ारी–सही–2/63-ह०–1245)

➡ हज़रत मुजम्मअ़ बिन जारिया अन्सारी से रिवायत है कि ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हारे भाई नजाशी का

इन्तिक़ाल हो गया तो उठो और उसका जनाज़ा पढ़ो हमने आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के पीछे दो सफ़े बनाई।
(इब्ने माजा–सुनन–1/520-ह०–1535)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने नजाशी का जनाज़ा पढ़ाया तो चार तकबीरें कहीं।
(इब्ने माजा–सुनन–1/521-ह०–1538)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि आज मुल्क हबशा का एक सालेह शख़्स फ़ौत हो गया है आओ उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ो हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि हमने सफ़ें दुरस्त कीं और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी हम आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के पीछे सफ़ वस्ता थे।
(बुख़ारी–सही–2/98-ह०–1320)

(इमाम आज़म के नज़दीक गायबाना शख़्स की नमाज़े जनाज़ा जाइज़ नहीं है और इमाम शाफ़ई के नज़दीक गायबाना शख़्स की नमाज़े जनाज़ा जाइज़ है)

–: क़र्ज़दार की नमाज़े जनाज़ा :–

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) किसी ऐसे शख़्स का जनाज़ा नहीं पढ़ाया करते थे जिस पर क़र्ज़ बाक़ी होता था एक बार एक मय्यत को लाया गया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने पूछा क्या इस पर कर्ज़ है सहाबा ने कहा हाँ इस पर दो दीनार क़र्ज़ है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोग अपने साथी का जनाज़ा पढ़ लो फिर अबू क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अन्हु) ने कहा या रसूलल्लाह इसके क़र्ज़ की अदायगी मेरे ज़िम्मे है तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उसका जनाज़ा पढ़ाया फिर जब अल्लाह तआ़ाला ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के लिये फुतूहात का दरवाज़ा खोल दिया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मैं हर मोमिन के लिये उसकी जान से ज़्यादा क़रीब तर हूँ सो जिसने कोई क़र्ज़ा छोड़ा उसकी अदायगी मेरे ज़िम्मे है और जिसने कोई माल छोड़ा हो तो वो उसके वारिसों का है।

(अबू दाऊद–सुनन–4/656-ह०–3343)

(नसाई–सुनन–1/599-ह०–1581)

नेक मय्यत कहती मुझे जल्दी ले चलो

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब जनाज़ा (तैयार करके) रख दिया जाता है और लोग अपने काँधों पर उठा लेते हैं फिर अगर वो नेक होता तो कहता है कि मुझे जल्दी ले चलो और अगर वो नेक नहीं होता है तो कहता है कि हाय अफ़सोस मेरी बर्बादी मुझे कहाँ लिये जा रही है उसकी आवाज़ इन्सान के अलावा हर चीज़ सुनती है अगर इन्सान सुन ले तो (मारे दहशत के) बेहोश हो जाये।
(बुख़ारी–सही–2/96-ह०–1314)

➡ सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब जनाज़े को उठाकर लोग चलते हैं तो अगर वो नेक होता है तो कहता है कि मुझे जल्दी ले चलो और अगर वो नेक न हो तो कहता है कि मुझे कहाँ लिये जा रहे हो और उसकी आवाज़ सिवाये इन्सान के हर शैः सुनती है अगर इन्सान उस आवाज़ को सुन ले तो बेहोश हो जाये।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/258-ह०–42374)

तीन औक़ात में मुर्दों को दफ़न न करना

➡ हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि तीन औक़ात ऐसे हैं जिनमें

आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने नमाज़ पढ़ने और मुर्दे को दफ़नाने से मना फ़रमाया है- 1-कि जब सूरज तुलूअ़ हो रहा हो 2-ठीक दोपहर के वक़्त यहाँ तक कि ज़वाल हो जाये 3-और जब सूरज डूबने के क़रीब हो जाये यहाँ तक कि डूब जाये। (अबू दाऊद-सुनन-1/515-ह०-1519)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/569-ह०-1030)
(अबू दाऊद-सुनन-3/557-ह०-3192)
(नसाई-सुनन-1/653-ह०-2017)

-: तीन लप मिट्टी देना :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक जनाज़े पर नमाज़ पढ़ी फिर मय्यत की क़ब्र पर आये और सर की जानिब तीन लप मिट्टी डाली।
(इब्ने माजा-सुनन-1/529-ह०-1565)

-: क़ब्र पर मिट्टी डालने का सवाब :-

➡ ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने किसी मुसलमान मर्द या औ़रत की क़ब्र पर वक़्ते दफ़ीना सवाब की नियत से मुट्ठी भरके मिट्टी डाली तो अल्लाह तआ़ला उसे हर मुट्ठी के बदले एक नेकी लिखता है।
(कंज़ुल उ़म्माल-8/261-ह०-42411)

हिस्सा सोम

(मौत का बयान)

-: तख़्लीके़ मलाइका :-

इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैह) फ़रमाते हैं कि बेशक अल्लाह तअ़ाला ने फ़रिश्तों को पैदा फ़रमाया और उन तमाम फ़रिश्तों में से एक मीकाइल दूसरे इसराफ़ील और तीसरे जिबराईल और चौथे इज़राइल (अ़लैहिमुस्सलाम) हैं और इन चारों को मख़लूक़ के उमूर और अ़ालम की तदाबीर का सबब बनाया पस जिबराईल को साहिबे वही व पैग़ाम और मीकाइल के ज़िम्मे बारिश और रिज़्क़ और इज़राइल को अरवाह क़ब्ज़ करने और इसराफ़ील के ज़िम्मे रोज़े क़यामत सूर फूँकने पर मामूर किया।

-: तख़्लीके़ मौत :-

हदीसे मरफ़ूअ़ में है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला ने जब मौत को पैदा फ़रमाया तो उसे दस लाख परदों में पोशीदा रखा और हर परदे की मोटाई सब आसमानों और ज़मीनों से बड़ी थी और मौत को सत्तर हज़ार ज़ंजीरों से बाँधा गया और हर ज़ंजीर की लंम्बाई एक एक हज़ार साल चलने की मुसाफ़त थी और मलाइका इसके क़रीब न जा सकते थे और न इसकी जगह जानते थे मगर इसकी आवाज़ हर तरफ़ से सुनते थे मगर ये नहीं

जानते थे कि वो क्या चीज़ है और फिर आदम (अ़लैहिस्सलाम) की पैदाइश तक यूँ ही रहा फिर जब अल्लाह तआ़ला ने आदम (अ़लैहिस्सलाम) को पैदा फ़रमाया और मल्कुल मौत के ज़िम्मे इस मौत को दिया तो मल्कुल मौत ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह ये मौत क्या है।

पस अल्लाह तआ़ला ने मौत से परदों को हटने का हुक्म दिया तो सारे परदे खुल गये यहाँ तक कि मल्कुल मौत ने मौत को देख लिया फिर अल्लाह तआ़ला ने तमाम फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि खड़े हो जाओ और मौत की तरफ़ देखो तो सब फ़रिश्तों ने खड़े होकर मौत को देखा फिर अल्लाह तआ़ला ने मौत को हुक्म दिया कि इन फ़रिश्तों पर अपने तमाम परों के साथ उड़ और अपनी आँखों को पूरी तरह से खोल दे।

पस जब मौत ने पूरी कुव्वत के साथ परवाज़ किया और मलाइका ने जब इसे देखा तो सब के सब बेहोश होकर गिर पड़े और दो हज़ार साल तक उन पर गशी तारी रही फिर जब उन्हें इफ़ाक़ा हुआ तो अ़र्ज़ किया ऐ मेरे परवरदिगार तूने कोई चीज़ मौत से भी बड़ी पैदा की है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मैंने इसे पैदा किया और मैं इससे बहुत बड़ा हूँ और मख़लूक़ में से हर एक को इसका ज़ायक़ा चखना है फिर अल्लाह सुब्हानहु व तआ़ला ने फ़रमाया इज़राईल मैंने तुझे इस मौत–

पर कुदरत दी है फिर उसने अ़र्ज़ किया ऐ परवर दिगार किस कुव्वत से मैं इस मौत पर काबू पाऊँगा क्योंकि वो तो बहुत बड़ी है तो अल्लाह तआ़ला ने उसे कुव्वत अ़ता फ़रमाई और मल्कुल मौत ने उस पर क़ाबू पा लिया तो वो साकिन हो गई तब मौत ने अ़र्ज़ किया ऐ परवर दिगार मुझे इज़्न ताकि मैं आसमान और ज़मीन में एक बार निदा कर लूँ फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे इज़्न दिया।

–: मौत का आसमान व ज़मीन को निदा करना :–

फिर मौत ने बा आवाज़े बुलन्द निदा दी कि मैं वो मौत हूँ जो प्यारों के दरमियान जुदाई कर देती हूँ और मैं वो मौत हूँ जो बेटों और बापों और माँओं और बेटों व शौहर और बीबी के दरमियान जुदाई कर देती हूँ और मैं वो मौत हूँ जो बनी आदम के क़वी और ज़ईफ़ यानी किसी से नहीं टलती हूँ और मैं वो मौत हूँ कि बनी आदम के भाइयों के भाई चारे को तोड़ देती हूँ और मैं घरों और शहरों को वीरान कर देती हूँ और मैं वो मौत हूँ जो हर जानदार को हलाक कर देती हूँ अगरचा वो मजबूत क़िलों में हो और मख़लूक़ में कोई भी मेरा ज़ायक़ा चखने से नहीं बचेगा।

–: मरने वालो को हर तरफ़ से मौत नज़र आना :–

पस जब किसी की मौत का वक़्त हो तो मौत अपनी सूरत में उसके सामने खड़ी हो जाती है फिर वो जान उससे पूछती है तू कौन है तब वो कहती है कि मैं वो मौत हूँ जो तुझे दुनियाँ से निकाल कर तेरी औलाद को यतीम कर दूँगी और तेरी बीवी को बेवा कर दूँगी और तेरा माल तेरे वारिसों के दरमियान मीरास कर दूँगी पस अगर तूने अपने लिये कुछ आगे भेजा तो वो आज तुझे मिलेगा और जो तूने पीछे छोड़ा है वो तेरे बाद तुझे फ़ायदा न देगा।

पस जब जान मौत का कलाम सुनती है तो अपना चेहरा उससे मोड़ लेती है फिर वो मौत को दूसरी जानिब पाती है तो जान फिर से अपना रुख दूसरी तरफ़ फेर लेती है मगर वो जान फिर दूसरी तरफ़ भी मौत को सामने खड़ा देखती है फिर मौत उससे कहती है कि ऐ जान क्या तू मुझे पहचानती नहीं है मैं वही मौत हूँ जिसने तेरे अपनों की रूह तेरे सामने क़ब्ज़ की और तू उन्हें बचा न सकी और आज मैं तेरी रूह क़ब्ज़ करती हूँ।

इरशादे बारी तआला हैः–

और वो ही अपने बन्दों पर ग़ालिब है और वो –

तुम पर (फ़रिश्तों को बतौर) निगेहबान भेजता है यहाँ तक कि जब तुममें से किसी को मौत आती है तो हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वो ख़ता (या कोताही) नहीं करते फिर वो सब अल्लाह तआ़ला के हुजूर लौटाये जायेंगे जो उनका हक़ीक़ी मालिक है जान लो हुक्म (फ़रमाना) उसी का (काम) है और वो सबसे जल्द हिसाब लेने वाला है।

(सू०–अनआ़म–61,62)

–: दुनियाँ बूढ़ी औ़रत की सूरत में :–

फिर अल्लाह तआ़ला दुनियाँ को बूढ़ी औ़रत की सूरत में पेश करता है और वो उससे कहती है ऐ आ़सी (गुनाहगार, मुजरिम) तू शर्म नहीं करता था तू मेरी तलब में गुनाह पर गुनाह किया करता था और गुनाहों से इजतिनाब नहीं करता था और तूने मेरी तलब में हराम व हलाल में इम्तियाज़ न रखा और तेरा गुमान था कि तू दुनियाँ से जुदा न होगा पस अब मैं तेरे अ़मल और तुझसे बेज़ार हूँ और वो अपने माल को दूसरों के हाथों में जाता देखता है तो उसका माल उससे कहता है ऐ गुनाह में मुब्तिला होने वाले तूने नाजाइज़ तरीक़े से मुझे हासिल किया और फ़क़ीरों व मिस्कीनों पर ख़र्च न किया आज मैं तेरे ग़ैर के हाथों में जा रहा हूँ इस पर अल्लाह तआ़ला का इरशादे गिरामी शहिद है–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

उस दिन कोई माल नफ़अ़ न देगा और न औलाद मगर वो शख़्स (नफ़अ़ मन्द होगा) जो अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सलामती वाले बे ऐ़ब दिल के साथ हाज़िर हुआ।
(सू०–शुअ़रा–88,89)

–: बदकारों को दुनियाँ में दोबारा आने की आरज़ू करना :–

फिर वो शख़्स कहेगा ऐ मेरे परवरदिगार मुझे दुनियाँ में एक बार फिर लौटा दे ताकि मैं अच्छे काम कर लूँ जो पहले न कर सका।

अल्लाह तआ़ला का इरशादे गिरामी हैः–

जब उनमें से किसी को मौत आयेगी तो वो कहेगा है ऐ मेरे रब मुझे (दुनियाँ में) वापस भेज दे ताकि मैं उस (दुनियाँ) में अच्छे काम और कुछ नेक अ़मल कर लूँ जिसे मैं छोड़ आया हूँ हरगिज़ नहीं ये वो बात है जिसे वो (बतौरे हसरत) कह रहा होगा और उनके आगे उस दिन तक एक पर्दा (हाइल) है (जिस दिन) वो (क़ब्रों से) फिर उठाये जायेंगे। (सू०–मोमिनून–23/99,100)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और हर गिरोह के लिये एक मियाद (मुक़र्रर) है फिर जब उनका (मुक़र्ररह) वक़्त आ जाता है तो–

वो एक घड़ी भी पीछे नहीं हट सकते और न आगे बढ़ सकते हैं। (सू०–आअ़राफ़–34)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और अल्लाह तअ़ाला किसी जान को हरगिज़ मुहलत नहीं देता जब उसकी मौत का वक़्त आ जाये और अल्लाह उन कामों से खूब आगाह है जो तुम करते हो। (सू०–मुनाफ़िक़ून–11)

फिर मल्कुल मौत उसकी रुह कब्ज़ करता है अगर मरने वाला मोमिन हो तो खुशखबरी पर मरता है और अगर मुनाफ़िक़ हो तो बदबख़्ती पर मरता है

जैसा कि अल्लाह तआला का इरशादे गिरामी है –

ये भी (हक़) है कि बेशक़ नेकोकारों का नामा–ए–आअ़माल (बुलन्द मरतबा लोगों के दफ़्तर) में है और आपने क्या जाना कि इल्लिईन क्या है लिखी हुई एक किताब है उस जगह अल्लाह के मुक़र्रब फ़रिश्ते हाज़िर रहते हैं बेशक़ नेकोकार (राहतों व मसर्रतों से) नेअ़मतों वाली जन्नत में होंगे (और) तख़्तों पर बैठे नज़ारे कर रहे होंगे।
(सू०–मुताफ़िफ़्फ़ीन–19 ता 23)

ये भी (हक़) है कि बदकारों का नामा–ए–आमाल सिज्जीन (क़ैद खाने के दफ़्तर) में है और आपने क्या जाना सिज्जीन क्या है (ये क़ैद खाना–ए–दोज़ख में) लिखी हुई (एक) किताब है।
(सू०–मुताफ़िफ़्फ़ीन–7 ता 9)

मल्कुल मौत के रुह निकालने का बयान

बेशक मल्कुल मौत (इज़राइल अ़लैहिस्सलाम) के लिये सातवें या चौथे आसमान में एक तख़्त है जिसे अल्लाह तआ़ला ने नूर से बनाया है जिसके सत्तर हज़ार पाये हैं और मल्कुल मौत (इज़राइल अ़लैहिस्सलाम) के चार पर हैं और उनका तमाम जिस्म परों से भरा हुआ है और उनकी ज़बानें हाथ और आँखें बा क़दरे तमाम मख़लूक़ इन्सानों और परिन्दों और दरिन्दों के हैं और सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–

कि तहक़ीक़ मल्कुल मौत के छः चेहरे हैं एक चेहरा उसके सामने है और एक चेहरा उसकी पीठ की तरफ़ है और एक चेहरा उसके सर पर है और एक चेहरा उसके क़दमों के नीचे है और एक चेहरा उसके दाँयी जानिब है और एक चेहरा उसकी बाँयी जानिब है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह मल्कुल मौत के इतने चेहरे क्यों हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फरमाया–

जो चेहरा दाँयी तरफ़ है उससे वो अहले मशरिक़ की रुह क़ब्ज़ करने पर मुतावज्जै होते हैं और जो चेहरा उनके बाँयी तरफ़ है उससे वो अहले मग़रिब की अरवाह क़ब्ज़ करने पर मुतावज्जै होते हैं और जो चेहरा उनके पीठ की तरफ़ है उससे वो अहले क़बाइर और अहले दोज़ख की रुहें

निकालने को मुतावज्जै होते हैं और वो चेहरा जो सामने की तरफ़ है उससे वो मेरी उम्मत के मोमिनीन व मोमिनात की रुहें निकालने को मुतावज्जै होते हैं और वो चेहरा जो उनके सर पर है उससे वो आसमान वालों की रुहें क़ब्ज़ करने को मुतावज्जै होते हैं और वो चेहरा जो उनके क़दमों की तरफ़ है उससे वो जिन्नात की रुहें निकालने को रुख करते हैं मौत के फ़रिश्ते का एक पाँव दोज़ख के पुल पर है और दूसरा जन्नत के तख़्त पर।
(कुर्रातुल अबसार-40)

-:मल्कुल मौत की जसामत की वुसअ़त:-

मल्कुल मौत की जसामत इस क़दर बड़ी है कि अगर तमाम दरियाओं और नहरों का पानी उनके सर पर डाला जाये तो एक क़तरा भी ज़मीन पर न गिरे और तमाम दुनियाँ मल्कुल मौत के पहलू में उस दस्तर ख़्वान की तरह है जिस पर हर क़िस्म के खाने रखे हों और वो दस्तर ख़्वान एक शख़्स के आगे रखा जाये ताकि वो उससे खाये तो उसने खाया जो चाहा ऐसे ही मल्कुल मौत की मिसाल तमाम मख़लूक़ में है और मल्कुल मौत दुनियाँ को अपनी हथेली पर ऐसे घुमाता है जैसे कोई आदमी दिरहम को अपनी हथेली में घुमाता है और जब किसी की मौत का वक़्त आता है तो अल्लाह तआ़ला मल्कुल मौत को उसकी ख़बर दे देता है और वो नेक है या बदकार ये भी ज़ाहिर फ़रमां देता है।

-: मल्कुल मौत को किसी की मौत का इल्म कैसे होता है :-

मल्कुल मौत पर उस दरख़्त का एक पत्ता गिरता है जो अ़र्श के नीचे है उस पर जिसे मौत आनी है उसका नाम लिखा होता है अल्लाह तआ़ला ने अ़र्श के नीचे एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है उस पर तमाम मख़लूक़ की ताअ़दाद के बराबर पत्ते हैं तो जब किसी की मौत क़रीब होती है और उसकी उ़म्र के चालीस रोज़ बाक़ी रह जाते हैं तो उस दरख़्त का एक पत्ता गिरता है जो इज़राईल (अ़लैहिस्सलाम) के पहलू में गिरता है पस वो मुत्तलाअ़ हो जाते हैं और उसी वक़्त उस मरने वाले का नाम आसमान पर मुर्दा शुमार किया जाता है हालाँकि वो ज़मीन पर चालीस दिन तक ज़िन्दा रहता है और मल्कुल मौत को जिसकी रुह क़ब्ज़ करने का हुक्म मिलता है तो साथ ये भी ख़बर दी जाती है कि उस जगह का नाम जिसमें उसकी रुह क़ब्ज़ की जायेगी और उसके सबब का भी ज़िक्र होता है।

-: सालिहीन बन्दों की रुह क़ब्ज़ होने के बारे में :-

हदीस पाक में है जब मल्कुल मौत किसी बन्दे की रूह क़ब्ज़ करने के लिये उसके मुँह की तरफ़ आता है ताकि उसकी रूह क़ब्ज़ करे तो उसके मुँह से ये आवाज़ आती है कि ऐ मल्कुल मौत इस तरफ़ से-

रूह निकलने पर तुम्हारा क़ाबू नहीं है क्योंकि इसमें मेरे रब का ज़िक्र जारी है फिर मल्कुल मौत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में लौट जाता है और अ़र्ज़ करता है ऐ मेरे परवर दिगार बेशक तेरा बन्दा ऐसे ऐसे कहता है फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

कि उसकी रूह किसी दूसरी तरफ़ क़ब्ज़ कर लो तो मल्कुल मौत उस बन्दे के हाथ की तरफ़ से आता है ताकि उसकी रूह क़ब्ज़ करे पस हाथ मल्कुल मौत से कहता है कि तुझे मुझ पर कुछ काबू नहीं कि मैं बा कसरत ख़ैरात करता हूँ और इ़ल्म लिखा करता हूँ और राहे खुदा में कुफ़्फ़ार की गर्दनों पर तलवार चलाता हूँ फिर मल्कुल मौत पैर की तरफ़ से रूह निकालने के लिये आता है तो पैर कहता है तेरा मुझ पर कोई ज़ोर नहीं चलेगा क्योंकि मेरे साथ वो जुमआ़ और जमाअ़त और मरीज़ की अ़यादत और मजलिसे इ़ल्म को चलकर जाना है फिर वो कानों की जानिब आता है तो वो कान कहता है कि तुझे मुझ पर कुछ काबू नहीं इसलिये कि मैं कुरान व ज़िक्रे इलाही सुनता हूँ।

फिर फ़रिश्ता आँखों की तरफ़ से आता है तो आँखें कहती हैं कि तेरे लिये हमारी तरफ़ से कोई रास्ता नहीं इसलिये मैं कुरान की ज़ियारत करती हूँ फिर मल्कुल मौत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में लौट जाता है और अ़र्ज़ करता है ऐ– मेरे परवर दिगार तेरे बन्दे के आ़ज़ा हुज्जत के साथ मुझ पर ग़ालिब आ गये और वो ऐसे–ऐसे

कहता है तो अब मैं उसकी रूह कैसे क़ब्ज़ करूँ तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरा नाम अपनी हथेली पर लिख लो और मेरे मोमिन बन्दे को दिखाओ ताकि वो उसे देखे पस मल्कुल मौत अल्लाह तआ़ला का नाम अपनी हथेली पर लिख लेता है और मोमिन बन्दे की रूह को दिखाता है तो वो अल्लाह तआ़ला का हुक्म मानकर मोमिन के जिस्म से निकल आती है।
(कुर्रातुल अबसार–53)

पस अल्लाह सुबहानहु व तआ़ला के नाम से मुहब्बत के सबब नज़अ़ की सख़्ती मोमिन बन्दे से टल जाती है और रूह खुशी–खुशी क़ब्ज़ हो जाती है तो फिर उन पर आख़िरत का अ़ज़ाब कैसे न टलेगा इसलिये अल्लाह तआ़ला ने अपने नेक बन्दों के दिलों पर अपना नाम लिख दिया है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
यही वो लोग हैं जिनके दिलों में उस (अल्लाह) ने ईमान सब्त फ़रमां दिया है और उन्हें अपनी रूह (यानी फ़ैज़े ख़ास) से तक़वियत बख़्शी है और उन्हें ऐसी जन्नतों में दाख़िल फ़रमायेगा जिनके नीचे से नहरें बह रही होंगी वो उनमें हमेशा रहने वाले हैं अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो गया है और वो अल्लाह से राज़ी हो गये हैं यही अल्लाह (वालों) की जमाअ़त है याद रखो बेशक अल्लाह (वालों) की जमाअ़त ही मुराद पाने वाली है।
(सू०–मुजादिला–22)

इसी तरह जब नेक बन्दा नज़अ़ की हालत में मुब्तिला होता है तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से निदा देने वाला निदा देता है कि इस बन्दे को छोड़ दो ताकि वो आराम पाये और निदा देने वाला कहता है कि तुझ पर क़यामत तक सलामती हो।

–: वक़्ते नज़अ़ शैतान के ईमान छीनने के बारे में :–

वक़्ते नज़अ़ बन्दे के पास शैतान आकर उसकी बाँयी जानिब बैठ जाता है और उससे कहता है कि तू इस दीन को छोड़ दे और कह खुदा दो हैं ताकि तू इस सख़्ती से निजात पा जाये और मोमिन उस वक़्त प्यासा होता है तो शैतान उसके सर के पास ठंडे पानी का प्याला लाता है और उसकी तरफ़ बढ़ाता है तो मोमिन उस पानी को माँगता है तो शैतान कहता है कि नबियों को झूठा कह तब मैं तुझे पानी दूँगा तो जिसको बदबख़्ती ने घेर लिया हो वो उस शैतान की बात को मान लेता है तो वो दुनियाँ से काफ़िर होकर मरता है और वो जिसको अज़ली (दायमी) सआ़दत दस्तगीरी करे तो वो शैतान की बात को रद्द कर देता है और वो दुनियाँ से मोमिन जाता है।

–: मौत के वक़्त बन्दे का हाल पाँच तरह से तक़सीम होना :–

जब बन्दे की मौत का वक़्त क़रीब होता है तो उसका हाल पाँच तरह से तक़सीम होता है।

1- माल उसके वारिसों के लिये
2- रूह मल्कुल मौत के लिये
3- गोस्त कीड़ों मकोड़ों के लिये
4- हड्डियाँ मिट्टी के लिये
5- और नेकियाँ हुकूक़ तलब करने वालों के लिये

और ईमान अगर सलामत रहे और शैतान न ले जाये पाये तो ये उस मय्यत के लिये नफ़ामन्द और बाइसे निजात है और शैतान वक़्ते मौत ईमान ले गया तो सिर्फ़ हलाकत ही हलाकत है क्योंकि ईमान का जाना रब से जुदाई है और बेशक रूह की जिस्म से जुदाई होती है रब से जुदाई नहीं होती

–: रूह का बयान :–

हदीस पाक में है:–

जब रूह बदन से जुदा होती है तो आसमान से तीन बार आवाज़ आती है कि ऐ इब्ने आदम तूने दुनियाँ छोड़ दी या दुनियाँ ने तुझे छोड़ दिया और क्या तूने दुनियाँ जमा की या दुनियाँ ने तुझे जमा किया और क्या तूने दुनियाँ कुबूल की या दुनियाँ ने तुझे कुबूल किया फिर जब मय्यत को तख़्ते गुस्ल पर रखा जाता है तो आसमान से तीन बार आवाज़

आती है कि ऐ इब्ने आदम तेरा क़वी बदन कहाँ है अब किस चीज़ ने उसे ज़ईफ़ कर दिया और तेरी फ़सीह जुबान कहाँ है उसे किस चीज़ ने ख़ामोश कर दिया और तेरे प्यारे दोस्त कहाँ हैं और किसने तुझे तन्हा कर दिया फिर जब उसे कफ़न में लपेटा जाता हे तो तीन आवाज़े आती हैं-

ऐ इब्ने आदम खुशी है तेरे लिये अगर तेरा ठिकाना जन्नत है और ख़राबी है तेरे लिये अगर तेरा ठिकाना आग है और ऐ इब्ने आदम तेरे लिये खुशबख़्ती है अगर तेरा साथी अल्लाह तअ़ाला की रज़ा है और तेरे लिये बर्बादी है अगर अल्लाह तअ़ाला तुझसे नाराज़ है और ऐ इब्ने आदम तहक़ीक़ तू तबील सफ़र की तरफ़ बग़ैर ज़ादे राह को जा रहा है और तू जिस घर से निकल रहा है उसकी तरफ़ फिर न लौटेगा और तू ख़ौफ़नाक घर की तरफ़ जा रहा है।

और जब क़ब्रिस्तान ले जाने के लिये चारपाई पर रखा जाता है तो तीन बार आवाज़ आती है कि ऐ इब्ने आदम तेरे लिये खुशी है अगर तेरे अ़मल अच्छे थे और तेरे लिये ख़राबी है अगर तेरे अ़मल बुरे थे और तेरे लिये खुशी है अगर तू तौबा करने वाला था कि तेरे लिये अल्लाह तअ़ाला की रज़ा है और तेरे लिये ख़राबी है अगर तुझसे अल्लाह तअ़ाला नाराज़ है और जब नमाज़े जनाज़ा के लिये रखा जाता है तो तीन बार आवाज़ आती है कि-

ऐ इब्ने आदम हर अ़मल जो तूने किया वो देख लिया अगर अच्छा था तो अच्छा देखा और बुरा था तो वो बुरा देखा और खुशी है तेरे लिये अगर तूने अपनी ज़िन्दगी खुद की इस्लाह और नेकी में गुज़ारी और ख़राबी है तेरे लिये अगर तूने अपनी ज़िन्दगी को ज़ाया कर दिया और जब मय्यत की चारपाई क़ब्र के किनारे पर रखी जाती है तो ज़मीन तीन बार आवाज़ देती है कि ऐ इब्ने आदम तू मेरी पुश्त पर था तो हंसता था और अब मेरे पेट में रोता हुआ जायेगा और जब तू मेरी पुश्त पर था तो खुश था मगर अब तू मेरे पेट में ग़मगीन होकर जायेगा और तू मेरी पुश्त पर नातिक़ (बोलने वाला, बात करने वाला) था अब तू मेरे पेट में ख़ामोश रहेगा मगर नेक लोगों के अहवाल मुख़्तलिफ़ होते है। (कुर्रातुल अबसार-63)

-: गुस्ल के वक़्त रूह की निदा :-

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि जिस वक़्त मय्यत को गुस्ल दिया जाता है और उसके कपड़े उतारे जाते तो रूह निदा देती है कि ऐ गुस्ल देने वाले तुझे अल्लाह की क़सम कि मेरे कपड़े नरमी के साथ उतार क्योंकि मैंनें अभी-अभी मल्कुल मौत के चुँगुल से आराम पाया है फिर जब उस पर पानी डाला जाता है तो रूह फ़रियाद करती है कि ऐ गुस्ल देने वाले ज़्यादा गर्म या ज़्यादा ठन्डा पानी न डाल क्योंकि मेरा जिस्म रूह निकलने की वजह से ज़ख़्मी हो गया है

फिर जब उसे गुस्ल दिया जाता है तो मय्यत कहती है ऐ गुस्ल देने वाले तुझे अल्लाह की क़सम मुझे ज़ोर से मत छू क्योंकि मेरा जिस्म रूह निकलने की वजह से ज़ख़्मी है फिर जब गुस्ल से फ़रागत हासिल करने के बाद जब मय्यत को कफ़न में लपेटा जाता है और उसके कफ़न को क़दमों की तरफ़ से बाँधा जाता है तो मय्यत उसे पुकार कर कहती है कि तुझे अल्लाह की क़सम कि कफ़न को मेरे सर की तरफ़ से न बाँध जब तक कि मेरे अह्ल व अयाल और अक़ारिब न देख लें क्योंकि आज बिछड़ने का दिन है फिर मैं इनको क़्यामत तक न देख सकूँगा और जब लोग मय्यत को घर से निकालते हैं तो वो पुकार कर कहती है कि मुझे ले जाने में जल्दी न कर बेशक मैं आज घर से निकाला जा रहा हूँ फिर कभी भी न लौटूँगा।

और ऐ मेरे दोस्त और ऐ मेरे भाइयो और ऐ मेरी औलाद तुमको दुनियाँ की ज़िन्दगी धोका न दे जैसे उसने मुझे धोका दिया और तुमसे दुनियाँ न खेले जैसे कि उसने मुझसे खेला तो ऐ आँखों वाले इससे इबरत हासिल कर ताकि तू फ़लाह पाये पस तहक़ीक़ कि मैंने जो कुछ जमा किया था अपने वारिसों के लिये पीछे छोड़ चला हूँ और क़र्ज़ ख़्वाह अपने क़र्ज़ के बाइस मुझे याद रखेंगे और तुम मुझे भूल जाओगे और मेरे छोड़े हुये माल पर तुम ऐश करोगे और मैं अपने गुनाहों के बोझ को खुद उठाये हुये इस फ़ानी दुनियाँ से कूच कर रहा हूँ और मय्यत कहती है तहक़ीक़ मैं जानता हूँ कि बेशक़

मय्यत को लोग भूल जाते हैं और ऐ मेरे वारिसो मैंने तुम्हारे लिये दुनियाँ में कसीर माल छोड़ा है जो मैंने जमा किया था तो मुझे न भूलना और तुम मुझे अपनी दुआ़ओं में याद रखना।

-: अल्लाह तआ़ला की रहमते वुसअ़त :-

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दों में से जिसे बख़्शना चाहता हूँ उसे दुनियाँ से उस वक़्त तक नहीं उठाता जब तक कि मैं उसकी बुराइयाँ और गुनाहों को जिस्मानी मर्ज़ के सबब या रोज़ी में तंगी के सबब या उसको पहुँचने वाले ग़मों तकलीफ़ों के सबब से मिटा न दूँ अगर फिर भी उसकी बुराइयों और गुनाहों में से कुछ बाक़ी रह जाये तो मैं उस पर नज़अ़ का वक़्त सख़्त कर देता हूँ यहाँ तक कि जब वो मुझसे मिलता है तो उसके पास कोई बुराई या गुनाह बाक़ी नहीं रहता।

और मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं अपने बन्दों में से जिसे बख़्शना नहीं चाहता उसे दुनियाँ से उस वक़्त तक नहीं उठाता जब तक कि मैं उसके अच्छे अ़मल का बदला दुनियाँ में ही न दे दूँ और मैं उसे उसकी नेकियों का बदला अच्छी सेहत की शक्ल में या खुशियों और राहतों या वुसअ़ते रिज़्क़ की शक्ल में अ़ता करता हूँ और-

अगर फिर भी उसकी नेकियों में कुछ बच जाये तो मैं उस पर नज़अ़ का वक़्त आसान कर देता हूँ यहाँ तक कि जब वो मुझसे मिलता है तो उसके पास कोई नेकी बाक़ी नहीं रहती।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमातीं हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस बदन में कोई ख़ैर नहीं जिसमें कोई बीमारी न पहुँचे और उस माल में कोई बेहतरी नहीं जिसमें हादसात से कोई नुकसान न हो। (कुर्रातुल अबसार–90,92)

नेक व बद मोमिन का वक़्ते मौत हाल

हज़रत बरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक़ जब मोमिन की मौत का वक़्त आता है तो उस पर आसमान से सफ़ेद रु फ़रिश्ते उतरते हैं गोया कि उनके चेहरों पर सूरज तुलूअ़ हो रहा हो और उनके पास जन्नत के कफ़नों में से कफ़न और जन्नत की खुश्बुओं में से खुश्बू होती है और वो फ़रिश्ते उसके पास बैठ जाते हैं फिर मल्कुल मौत फ़रिश्ता आता है जो उसके सर के पास बैठ जाता है और कहता है कि निकल ऐ नफ़्से मुतमइन्ना अपने रब की बख़्शिश और उसकी रज़ा की तरफ़ फिर वो रुह बदन से निकल आती है और इस तरह बाहर निकलती है–

जैसे मश्क से पानी का क़तरा आसानी से बाहर आ जाता है पस मलायका उस रुह को लेकर अपने हाथों में रख लेते हैं और उसे जन्नती कफ़न में लपेट देते हैं तो उससे कस्तूरी की मान्निद खुश्बू आती है।

फिर वो आसमानों की तरफ़ ऊपर चढ़ते हुये जिन फ़रिश्तों के पास से रुह को लेकर गुज़रते हैं तो वो तआज्जुब से पूछते हैं कि ये खुश्बू किसकी है तो वो कहते हैं कि ये फुलां बिन फुलां की रुह है फिर फ़रिश्ते उस रुह को लेकर आसमानों की तरफ़ जाते हैं तो उसके लिये सातों आसमानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं फ़रिश्ते उस रुह को लेकर सातवें आसमान पर पहुँचते हैं तो अल्लाह के हुक्म से एक निदा देने वाला निदा देता है कि इसका नामा-ए-आअ़माल इल्लिईन में लिखो और इसे ज़मीन की तरफ़ लौटा दो बेशक उसी में से मैंने इसको पैदा किया था और उसी में लौटाऊँगा और उसी में से दोबारा (क़यामत के दिन) फिर उठाऊँगा फिर फ़रिश्ते उसकी रुह को उसके जिस्म की तरफ़ लौटा देते हैं फिर नकीरैन का मय्यत से सवालों का सिलसिला शुरु होता है।

फिर उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं और उसके पास बैठ जाते हैं और उससे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है वो कहता है कि मेरा रब अल्लाह है फिर वो उससे पूछते हैं कि तेरा दीन कौन सा है वो कहता है कि मेरा दीन इस्लाम है फिर वो उससे

पूछते हैं ये शख़्स कौन है जो तुम्हारी तरफ़ मबऊस किये गये वो कहता है कि ये अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं वो फ़रिश्ते कहते हैं इनके मुताअ़ल्लिक़ तू क्या जानता है वो कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब की तिलाबत की उस पर ईमान लाया और इनकी तस्दीक़ की फिर आसमान से एक मुनादी करने वाला निदा देता है कि बन्दे ने सच कहा है इसके लिये जन्नत का बिछौना बिछा दो और इसको जन्नत का लिबास पहना दो और इसके लिये जन्नत की तरफ़ से एक दरवाज़ा खोल दो।

पस उसके लिये जन्नत की तरफ़ से खुश्बू और हवा आने लगती है और उसकी क़ब्र को हद्दे निगाह तक वसीअ़ कर दिया जाता है और उसके पास एक खूबसूरत चेहरे व खूबसूरत कपड़े और खूबसूरत खश्बू वाला शख़्स आता है और कहता है कि तुझे खुशख़बरी हो उन नेअ़मतों की जो तुझे खुश कर देगी यही वो दिन है जिसका तुझसे वायदा किया गया था वो शख़्स पूछेगा कि तू कौन है पस वो भलाई और ख़ैर के साथ उस चेहरे की तरफ़ मुतव्वजै होगा और कहेगा मैं तेरा नेक अ़मल हूँ फिर वो शख़्स अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब क़यामत क़ायम फ़रमां।

और काफ़िर व मुनाफ़िक़ की मौत के वक़्त उसके पास आसमान से कुछ फ़रिश्ते उतरते हैं जो उस काफ़िर के क़रीब बैठ जाते हैं उन फ़रिश्तों के पास एक सख़्त बदबूदार आग का लिबास होता है–

फिर मल्कुल मौत का फ़रिश्ता आता है और कहता है कि ऐ ख़बीस नफ़्स अल्लाह की नाराज़गी और गुस्से में निकल फिर उसके जिस्म से रूह इस तरह निकाली जाती है जैसे भीगी हुई ऊन से काँटेदार टहनी को खींचा जाये और इसी तरह उसकी रुह खींची जाती है जिससे उसकी रगें कट जाती हैं फिर उस रूह को एक बदबूदार कंबल में लपेटा जाता है फिर मलाइका उस रुह को आग के लिबास में लपेट देते हैं उस रुह पर ज़मीनों आसमान की तमाम मख़लूक़ लाअ़नत करती है जिसे इन्सानों व जिन्नातों के सिवा आसमानो ज़मीन की हर चीज़ सुनती है फिर फ़रिश्ते उस रुह को लेकर आसमान की तरफ़ जाते हैं तो उसके लिये आसमानों के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई–

इरशादे बारी तआ़ला है–

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से सरकशी की उनके लिये आसमाने (रहमत व कुबूलियत) के दरवाज़े नहीं खोले जायेंगे और न ही वो जन्नत में दाख़िल हो सकेंगे यहाँ तक कि सूई के सूराख़ में से ऊँट दाख़िल हो जाये यानी जैसे ये नामुम्किन है इसी तरह उनका जन्नत में दाख़िल होना भी नामुम्किन है और हम मुजरिमों को इसी तरह सज़ा देते है। (सू०–आअ़राफ़–40)

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है इस बन्दे की किताब सिज्जीन में लिख दो जो ज़मीन की तह में है

फिर उसकी क़ब्र में उसके पास बहुत हैबतनाक सूरत और सख़्त कड़क आवाज़ के साथ जिनकी आँखें उचक ले जाने वाली बिजली की तरह होती हैं वो दाँतों से ज़मीन चीरते हुये आते हैं और उस मय्यत को उठाकर बैठा देते हैं फिर उससे पूछते हैं तेरा रब कौन है वो कहता हाय-हाय अफ़सोस मैं नहीं जानता तो मुन्कर नकीर उस मय्यत से कहते हैं कि तूने क्यों कुछ न जाना फिर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक निदा देने वाला निदा देता है कि इसको गुर्ज़ों से मारो और वो गुर्ज़ इतने वज़नी होते हैं कि तमाम मख़लूक़ मिलकर भी उस गुर्ज़ को हिला नहीं सकती।

फिर उसकी क़ब्र में शोलों की तरह आग भड़क उठती है और उसकी क़ब्र इस तरह तंग कर दी जाती है कि उसकी एक तरफ़ की पसलियाँ दूसरी तरफ़ आ जाती है फिर उसके पास एक बदसूरत बदबूदार शख़्स आता है वो मय्यत से कहता है कि अल्लाह तआ़ला तुझे बुरा बदला दे क्योंकि तूने दुनियाँ में जब भी कोई काम किया बुरा ही किया और तूने अल्लाह की नाफ़रमानी की और वो कहता है कि तुझे खुशख़बरी हो दर्दनाक अ़ज़ाब की यही वो दिन है जिसका तुझसे वायदा किया गया था फिर वो मुर्दा पूछता है कि तुम कौन हो मैंने तुम्हारे जैसी बदसूरत शक्ल कभी नहीं देखी तो वो कहता है कि मैं तेरा बुरा अ़मल हूँ फिर उस काफ़िर के लिये जहन्नुम का दरवाज़ा खोल दिया जाता है जिससे वो दोज़ख़ में अपना ठिकाना देख लेता है।

और उसका ऐसा ही हाल रहता है यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाये और वो काफ़िर को कहता है कि ऐ परवर दिगार क़यामत क़ायम न हो।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/268-ह०–42495)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/768-ह०–12185)

फ़रिश्तों का मोमिन बन्दे की क़ब्र पर तस्बीह करना

हर इन्सान के अच्छे व बुरे आअ़माल लिखने के लिये किरामत कातिबीन फ़रिश्ते उसके दायें और बायें काँधे पर होते हैं और एक रिवायत में है कि हर इन्सान के साथ पाँच फ़रिश्ते होते हैं दो फ़रिश्ते दिन को और दो फ़रिश्ते रात को और एक फ़रिश्ता तमाम वक़्तों में से किसी भी वक़्त उससे जुदा नहीं होता जब बन्दा बैठ जाये तो एक उनमें से एक उसकी दाँयी जानिब बैठता है और दूसरा उसके बाँयी जानिब बैठता है और जब वो बन्दा चलता है तो उनमें से एक उसके आगे चलता है और दूसरा उसके पीछे चलता है और जब बन्दा सोता है तो उन दोनों में से एक फ़रिश्ता उस बन्दे के सर के पास होता है और दूसरा फ़रिश्ता उसके क़दमों के पास होता है।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है–

हर इन्सान के लिये यके बाद दीगर आने वाले (फ़रिश्ते) हैं जो उसके आगे और उसके पीछे अल्लाह के हुक्म से उसकी निगेहबानी करते हैं।
(सू०–राअ़द–13/11)

इस आयते करीमा से मुराद रात और दिन के फ़रिश्ते हैं और हदीस पाक की एक रिवायत में है–

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि दोनों कन्धों के दरमियान दो फ़रिश्ते होते हैं जो उसके अच्छे और बुरे आअ़माल लिखते हैं फिर जब बन्दे की रुह क़ब्ज़ हो जाती है और वो क़ब्र में रख दिया जाता तो किरामन कातिबीन फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं कि ऐ मेरे परवर दिगार तूने हमें अपने बन्दे पर मुक़र्रर फ़रमाया था यहाँ तक कि हमने उसके तमाम आअ़मालों को लिखा और तूने उसकी रुह क़ब्ज़ कर ली अब हमें इजाज़त दे कि हम ऊपर चले आयें तो अगर बन्दा नेक हो तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है तुम दोनों मेरे बन्दे की क़ब्र पर तस्बीह व तहलील करते रहो और मेरे बन्दे के नामा–ए–आअ़माल में लिखो यहाँ तक कि मैं उसे क़ब्र से उठाऊँ। (कंजुल उ़म्माल–8/319-ह०–42967)

मौत के वक़्त ज़ाहिर होने वाली अ़लामात

जब उसकी आँखें खुली रह जायेंगी और उसकी नाक के सूराख़ कुशादा हो जायेंगे और उसके होंठ लटक जायेंगे और उसके रुख़सार ज़र्द पड़ जायेंगे और उसकी पेशानी पसीना बहाती होगी और उसका हाल शदीद सख़्त होगा और उसकी जुबान रुक जायेगी और वो जवाब न दे सकेगा और न कलाम कर सकेगा और वो देखेगा जो आगे भेजा–

और जो पीछे छोड़ा और उसके गुज़रे अहवाल सब बातिल हो जायेंगे और उसके बदन के आ़ज़ा बेजान हो जायेंगे और उसके अहले ख़ाना और क़राबतदार सब जुदा हो जायेंगे और उसकी अ़क़्ल मुताग़य्यर हो जायेगी और वो वक़्त उस पर बहुत मुश्किल होगा और तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा।

–: मौत और रुह का बयान :–
(कुरान की रोशनी में)

कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है
हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौटाये जाओगे और जो लोग ईमान लाये और नेक आअ़माल करते रहे हम उन्हें ज़रुर जन्नत के बालाई महल्लात में जगह देंगे जिनके नीचे से नहरें बह रहीं होंगी वो उनमें हमेशा रहेंगे। (सू०–अनकबूत–29/56,57)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और जो कोई इस्लाम के सिवा किसी और दीन को चाहेगा तो वो उससे हरगिज़ कुबूल नहीं किया जायेगा और वो आख़िरत में नुकसान उठाने वालों में से होगा। (सू०–आले इमरान–3/85)

इरशादे बारी तआ़ला है–
और हमने आप से पहले किसी इन्सान को (दुनियाँ की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में) हमेशगी नहीं बख़्शी तो क्या अगर आप (यहाँ से) इन्तिक़ाल फ़रमा जाऐं तो (क्या) ये लोग हमेशा रहने वाले हैं हर जान को मौत का मज़ा चखना है और हम तुम्हें बुराई और भलाई में आज़माइश के लिये मुब्तिला करते हैं और तुम हमारी ही तरफ़ पलटाये जाओगे।
(सू०–अम्बिया–21/34,35)

इरशादे बारी तआ़ला है-

और वही है जो रात के वक़्त तुम्हारी रुहें क़ब्ज़ फ़रमा लेता है और जो कुछ तुम दिन के वक़्त कमाते हो वो जानता है फिर वो तुम्हें जगा उठाता है ताकि (तुम्हारी ज़िन्दगी की) मुअ़य्यन मिआ़द पूरी कर दी जाये फिर तुम्हारा पलटना उसी की तरफ़ है फिर वो (रोज़े महशर) तुम्हें उन (तमाम आअ़माल) से आगाह फ़रमां देगा जो तुम (उस ज़िन्दगानी में) करते रहे थे और वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है और वो तुम पर (फ़रिश्तों को बतौर) निगेहबान भेजता है यहाँ तक कि जब तुम में से किसी को मौत आती है (तो) हमारे भेजे हुये (फ़रिश्ते) उसकी रुह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वो ख़ता (या कोताही) नहीं करते। (सू०-अनआ़म-6/60,61)

इरशादे बारी तआ़ला है-

अल्लाह जानों को उनकी मौत के वक़्त क़ब्ज़ कर लेता है और उन (जानों) को जिन्हें मौत नहीं आयी है उनकी नींद की हालत में, फिर उनको रोक लेता है जिन पर मौत का हुक्म सादिर हो चुका हो और दूसरी (जानों) को मुक़र्रर वक़्त तक छोड़े रखता है बेशक इसमें लोगों के लिये निशानियाँ है जो ग़ौर व फ़िक्र करते हैं। (सू०-जुमर-39/42)

इरशादे बारी तआ़ला है-

और मौत की बेहोशी हक़ के साथ आ पहुँची (ऐ इन्सान) यही वो चीज़ है जिससे तू भागता है। (सू०-क़ाफ़-50/19)

इरशादे बारी तआ़ला है-
जब ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में (मुब्तिला) होंगे और फ़रिश्ते (उनकी तरफ़) अपने हाथ फैलाऐ हुये होंगे और (उनसे कहते होंगे) तुम अपनी जानें जिस्मों से निकालो आज तुम्हें सज़ा में ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जायेगा इस वजह से कि तुम अल्लाह पर नाहक़ बातें किया करते थे और तुम उसकी आयतों से सरकशी किया करते थे।
(सू०-अनआ़म-6/93)

इरशादे बारी तआ़ला है-
और अगर अल्लाह लोगों को उनके जुल्म (व गुनाह पर फ़ौरन) गिरफ़्त करता तो इस रुये ज़मीन पर एक भी जानदार बाक़ी न रहता लेकिन वो तो उन्हें मुक़र्रर मिआ़द तक मुहलत देता है फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ पहुँचता है तो वो न एक घड़ी पीछे हो सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।
(सू०-नह्ल-16/61)

इरशादे बारी तआ़ला है-
फ़रमां दीजिये जिस मौत से तुम भागते हो वो ज़रुर तुम्हें मिलने वाली है फिर तुम हर पोशीदा व ज़ाहिर चीज़ के जानने वाले (रब) की तरफ़ लौटाये जाओगे सो वो तुम्हें आगाह कर देगा जो कुछ तुम करते थे। (सू०-जुमआ़-62/8)

इरशादे बारी तआ़ला है–

आप (ग़मगीन न हो) उन्हें छोड़ दीजिये वो खाते (पीते) रहें और ऐश करते रहें और (उनकी) झूठी उम्मीद उन्हें (आख़िरत से) ग़ाफ़िल रखे फिर वो अ़नक़रीब (अपना अन्जाम) जान लेंगे।
(सू०–हिज्र–15/3)

–: अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को मुक़र्रर वक़्त तक ढ़ील देता है :–

इरशादे बारी तआ़ला है–

और अगर अल्लाह तआ़ला लोगों को उनके आअ़माले (बद) के बदले जो उन्होंने कमा रखे हैं (अ़ज़ाब की) गिरफ़्त में लेने लगे तो वो इस ज़मीन की पुश्त पर किसी भी चलने वाले को न छोड़े लेकिन वो उन्हें मुक़र्रर मुद्दत तक मुहलत देता है फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जायेगा तो बेशक अल्लाह अपने बन्दों को खूब देखने वाला है।
(सू०–फ़ातिर–35/45)

इरशादे बारी तआ़ला है–

सिवाये हमारी रहमत के और (ये) एक मुक़र्रर मुद्दत तक का फ़ायदा है।
(सू०–यासीन–36/44)

इरशादे बारी तआ़ला है–

ऐ हबीब मुकर्रम आप मुझे और उस शख़्स को जो

इस कलाम को झुठलाता है (उन्हें इन्तक़ाम के लिये) छोड़ दें अब हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता (तबाही की तरफ़) इस तरह ले जायेंगे कि उन्हें मालूम तक न होगा और मैं उन्हें मुहलत दे रहा हूँ बेशक मेरी तदबीर बहुत मज़बूत है। (सू०-क़लम-68/44,45)

इरशादे बारी तआ़ला है-

और अल्लाह को उनके कामों से हरगिज़ बे ख़बर न समझना जो ज़ालिम अन्जाम दे रहे हैं बस वो तो उन (ज़ालिमों) को फ़क़त उस दिन तक के लिये मुहलत दे रहा है जिसमें (ख़ौफ़ के मारे) आँखे फटी रह जायेंगी। (सू०-इब्राहीम-42)

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिम शख़्स को ढ़ील देता है (ताकि वो खूब गुनाह करे और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाये) फिर जब वो उसे पकड़ता है तो फिर वो उसे नहीं छोड़ता फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ये आयत तिलावत फ़रमाई-

''और इसी तरह आपके रब की पकड़ हुआ करती है जब वो ज़ालिम लोगों की बस्तियों को पकड़ता है बेशक उसकी पकड़ बड़ी सख़्त दर्दनाक है''।

(सू०-हूद-11/102)

(मुस्लिम-सही-6/207-ह०-6581)

(इब्ने माजा-सुनन-3/304-ह०-4018)

कोई नहीं जानता कि वो कहाँ फ़ौत होगा

इरशादे बारी तआ़ला है–

और न कोई शख़्स ये जानता है कि वो किस सरज़मीन पर मरेगा बेशक़ अल्लाह खूब जानने वाला है।

(सू०–लुक़्मान–31/34)

–: हर चीज़ फ़ना हो जायेगी सिवाऐ रब तआ़ला के :–

इरशादे बारी तआ़ला है–

जो कोई भी ज़मीन पर है सब फ़ना हो जायेगा सिर्फ आपके रब की ज़ात ही बाक़ी रहेगी जो साहिबे अ़ज़मत व जलाल और साहिबे इ़ज़्ज़त व इकराम है।

(सू०–रहमान–55/26,27)

–: अल्लाह मुजरिमों को सज़ा देगा :–

इरशादे बारी तआ़ला है–

और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है जिसे उसके रब की आयतों ज़रिये नसीहत की जाये फिर वो उससे मुँह फेर ले बेशक़ हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं।

(सू०–सज्दा–32/22)

इरशादे बारी तआ़ला है–

बेशक (आख़िरत का) जो तुमसे वायदा किया जा रहा है वो बिल्कुल सच्चा है।
(सू०–ज़ारियात–51/5)

इरशादे बारी तआ़ला है–

आप फ़रमां दें कि मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है जो तुम्हारी रुह क़ब्ज़ करता है फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाये जाओगे।
(सू०–सज्दा–32/11)

अल्लाह हर जान से भी ज़्यादा क़रीब है

इरशादे बारी तआ़ला है–

और हम उस (मरने वाले) से तुम्हारी निस्बत ज़्यादा क़रीब होते हैं लेकिन तुम (हमें) देखते नहीं।
(सू०–वाक़्या–56/85)

–: मौत को कसरत से याद करना :–

➡ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मौत को कसरत से याद किया करो क्योंकि जिस बन्दे ने मौत को कसरत से याद किया तो अल्लाह तआ़ला उसका दिल ज़िन्दा फ़रमायेगा और मौत की सख़्ती उसकी लिये आसान फ़रमायेगा (कंजुल उ़म्माल–8/236-ह०–42105)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया लज़्ज़तों को मिटाने और काटने वाली (मौत) को कसरत से याद करो।
(नसाई–सुनन–1/597-ह०–1827)
(इब्ने माजा–सुनन–3/389-ह०–4258)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/179-ह०–2307)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/129-ह०–2993)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक अन्सारी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह तमाम मोमिनों में कौन सा मोमिन सबसे अफ़ज़ल है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमाया जिसके अख़लाक़ सबसे अच्छे हों फिर अ़र्ज़ किया कि इनमें से कौन सबसे ज़्यादा अ़क्लमंद है तो फ़रमाया कि जो मौत को कसरत से याद करता हो और मौत के बाद कि लिये अच्छी तैयारी करता हो वो सबसे ज़्यादा अ़क्लमन्द है।
(इब्ने माजा –सुनन–3/389-ह०–4259)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि आख़िरत की याद करके रोओ और अगर रोना न आये तो रोने जैसी सूरत बनाओ।
(इब्ने माजा–सुनन–3/372-ह०–4196)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनियाँ से बेहतरीन बे रग़बती मौत की याद है और अफ़ज़ल इ़बादत ग़ौर व फ़िक्र है और जिसे मौत की याद ने बोझल कर दिया हो तो वो अपनी क़ब्र को जन्नत का एक बाग़ पायेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/236-ह०–42104)

–ःमौत आने से पहले मौत की तैयारीः–

➡ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने मेरा हाथ (कंधा पकड़ा) और फ़रमाया कि तू दुनियाँ में ऐसे रह जैसे कि तू अजनबी हो या रास्ता उबूर (पार करने) वाला मुसाफ़िर हो नीज़ फ़रमाया कि जब तू सुबह करे तो शाम का इन्तिज़ार न कर जब तू शाम करे तो सुबह का इन्तिज़ार न कर और अपने गुनाहों को मिटाने के लिये नेक आअ़माल कर।
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/586-ह०–6512)

➡ सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपनी आख़िरत के लिये अ़मल करो गोया कि तुम्हें कल मरना है।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/237-ह०–4211)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि दुनियाँ पीठ फेर कर जाने वाली है और आख़िरत सामने आने वाली है और इन दोनों दुनियाँ व आख़िरत में से एक हर के तालिब हैं सो तुम आख़िरत के तलबगार बनो दुनियाँ के चाहने वाले न बनो बिला शुबा आज अ़मल का मौक़ा है हिसाब नहीं है लेकिन कल हिसाब होगा अ़मल नहीं
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/326-ह०–10614)

➡ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मौत के आने से पहले मौत की तैयारी करो। (कंज़ुल उ़म्माल–8/236-ह०–42107)

➡ हज़रत शद्दात बिन औस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अक़्लमन्द वो है जो अपने नफ़्स को मुसख़्ख़र (ताबेअ़, क़ाबू) कर ले और मौत के बाद के लिये अ़मल करे और आज़िज़ वो है जो नफ़्स की ख़्वाहिश पर चले फिर अल्लाह पर आरज़ूऐं लगाये।
(इब्ने माजा–सुनन–3/389-ह०–4260)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/587-ह०–6514)

-: मौत मोमिन का तोहफ़ा है :-

➡ ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मौत मामिन का तोहफ़ा है (कंजुल ड़म्माल–8/237-ह०–4211)

➡ सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मौत मोमिन का तोहफ़ा है और दिरहम व दीनार मुनाफ़िक़ की बहार है और वो जहन्नुम के लिये उसका तोशा है।
(कंजुल ड़म्माल–8/239-ह०–42138)

➡ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान ज़िन्दगी को पसंद करता है जबकि मौत उसके लिये बेहतर है और इन्सान को माल की कसरत पसंद है जबकि थोड़ा माल रोज़े क़यामत उसके हिसाब को कम करने का ज़रिया है।
(कंजुल ड़म्माल–8/239-ह०–42141)

-: अच्छी मौत की अ़लामत :-

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाते हैं कि किसी शख़्स को देखो कि मरने के वक़्त जब उसकी आँखों से आँसू जारी हों और माथे पर पसीना आये और उसके नथुने फूल जायें तो ये अल्लाह तआ़ला की रहमत है जो उस पर नाज़िल हुई है और जब वो गला घोंटें ऊँट की–

तरह ख़रख़राये और उसका रंग फ़ीका पड़ जाये तो ये उस पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब है जो उस पर नाज़िल हुआ है।
(कंजुल उ़म्माल–8/243-ह०–42178)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे को भलाई पहुँचाना चाहता है तो मौत से पहले उसके पास एक फ़रिश्ता भेजता है जो उसे तैयार करता है और उसकी रहनुमाई करता है और उसे नेकी पर लगाता है यहाँ तक कि उसकी अच्छी हालत पर मौत होती है।
(कंजुल उ़म्माल–8/296-ह०–42785)

–: अचानक मौत राहत या अफ़सोस :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अचानक मौत मोमिन के लिये राहत और फ़ाजिर के लिये अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी की निशानी है। (कंजुल उ़म्माल–8/289-ह०–42703)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अचानक मौत मोमिन के लिये राहत है और काफ़िर के लिये सज़ा
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/610-ह०–6573)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/751-ह०–12130)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अचानक मौत मोमिन के लिये बाइसे राहत है और काफ़िर के लिये बाइसे अफ़सोस।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/751-ह०–12132)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/610-ह०–6572)

➡ हज़रत उ़बैदा बिन ख़ालिद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अचानक मौत नाराज़गी की पकड़ है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/508-ह०–3110)

(अचानक मौत काफ़िर के लिये अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी की पकड़ है क्योंकि एक तो उसकी उ़म्र अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी में गुज़री है दूसरी ये कि अचानक मौत की वजह से तौबा का जो इम्कान होता है वो भी ख़त्म हो जाता है वरना इन्सान बीमार होता है और आहिस्ता–आहिस्ता मौत की तरफ बढ़ता है तो मरने से पहले इस्लाह और तौबा करने का मौक़ा होता है जो अचानक मौत से ख़त्म हो जाता है अलबत्ता अल्लाह तआ़ला के इताअ़त गुज़ार मोमिन बन्दों का मुआ़मला इसके बरअ़क्स होता है वो तो मौत के लिये हर वक़्त तैयार रहता है इसलिये मोमिन बन्दे की अचानक मौत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नाराज़गी का इज़हार नहीं

बल्कि उसके बुलन्द दरजात का बाइस होती है इमाम बैहक़ी ने शुअ़बुल ईमान में ये रिवायत इन अल्फ़ाज़ के साथ रक़म की है ''कि अचानक मौत काफ़िर के लिये नाराज़गी और मोमिन के लिये रहमत है''

–: मौत क़यामत है :–

➡ सरकारे दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मौत क़यामत है जो तुममें से मर गया उसकी क़यामत बरपा हो गई और जो अच्छाई या बुराई होगी वो उसे देख लेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/238-ह०–4213)

–: मौत आज़माइश से बेहतर है :–

➡ हज़रत महमूद बिन लबीद (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो चीज़ों को आदम का बेटा बुरा समझता है जबकि मौत उसके लिये आज़माइश से बेहतर है और दूसरा कम माल व दौलत को बुरा समझता है जबकि कम माल व दौलत का हिसाब भी कम होगा।
(अहमद बिन हम्बल–5/427-ह०–23674)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/73)
(मजमाउज़्ज़वाइद–2/321)

मौत कहती कि मैं किसी को न छोड़ूँगी

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुम मौत को देख लो तो तुम उससे नफ़रत करने लगो हर घर वाले को मल्कुल मौत रोज़ाना दो मर्तबा याद दिलाता है और जिसकी उ़म्र की मुद्दत पूरी हो जाती है उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेता है फिर जब उसके घर वाले रोते और बिलखतें हैं तो वो कहता है तुम क्यों रो रहे हो अल्लाह की क़सम मैं तुममें से किसी को न छोड़ूँगा और अभी मैं लौट रहा हूँ लेकिन फिर तुम्हारे दरमियान आऊँगा। (कंजुल उ़म्माल–8/239-42133)

➡ हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन के लिये अल्लाह की मुलाक़ात के सिवा कोई राहत नहीं पस जिसे अल्लाह की मुलाक़ात पसंद हो। (कंजुल उ़म्माल–8/239-42137)

–: जानवर मौत के बारे में जानते तो कमज़ोर होते :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर जानवरों को मौत के बारे में इतना पता चल जाये जितना इन्सान को पता है तो इन्सान उनका मोटा गोस्त न खा सकें (यानी मौत की फ़िक्र के बाइस तमाम जानवर दुबले पतले और कमज़ोर हो जायें) (कंजुल उ़म्माल–8/239-ह०-42142)

अगर मालूम हो जाये मौत के बाद क्या होता है तो तुम खाना पीना छोड़ दो

➡ रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें ये मालूम हो जाये कि मौत के बाद तुम्हारे साथ क्या होने वाला है तो तुम कभी भी लज़ीज़ खाना न खाओ और न कभी मज़ेदार मशरूब पिओ और न कभी भी सायादार घरों में रहो और तुम ऊँची जगहों पर चलते हुये अपनी सीने पीटने लगो और तुम अपने आप पर रोओ।
(कंजुल ऊ़म्माल–8/273-ह०–42525)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुम देख लो जो कुछ तुम मौत के बाद देखोगे तो तुम कभी भी शहबत के साथ न खाओ और न ही शहबत के साथ पियो और न ही किसी ऐसे घर में दाख़िल हो जिसमें धूप से बच सको और यक़ीनन तुम मिट्टी के लिये हरीस हो जाते और अपने सीनो को पीटते और अपने आप पर रोते और कहते काश मैं एक दरख़्त होता जिससे काट दिया जाता है।
(अहमद)

-: मौत की आरज़ू न करना :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई मौत की आरज़ू न करे क्योंकि तुममें से जो कोई मर जाता है तो उसके आअमाल मुन्क़ताअ हो जाते हैं और मोमिन की उम्र ज़्यादा होने में भलाई ज़्यादा होती है।

(मुस्लिम-सही-6/279-ह०-6819)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-4/606-ह०-6564)

-: मौत की दुआ न करना :-

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी दुख के आने पर कोई शख़्स हरगिज़ मौत की दुआ न करे बल्कि उसे चाहिये कि यूँ कहे कि ऐ अल्लाह मुझे ज़िन्दा रख जब तक कि ज़िन्दगी मेरे लिये ख़ैर का बाइस हो और जब मौत मेरे लिये बेहतर हो तब मुझे वफ़ात दे।

(अबू दाऊद-सुनन-3/507-ह०-3108)
(नसाई-सुनन कुबरा-1/596-ह०-1823)
(बुख़ारी-सही-5/438-ह०-5671)
(मुस्लिम-सही-6/269-ह०-6814)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-4/607-ह०-6565)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम में से कोई मौत की आरज़ू न करे इसलिये कि अगर वो नेक है तो मुम्किन है कि उसे नेकियों की मज़ीद तौफ़ीक़ मिल जाये और जो बद है तो शायद उसे बदी से तौबा नसीब हो जाए।
(नसाई–सुनन–1/595-ह०–1821)
(बुख़ारी–सही–6/469-ह०–7235)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/606-ह०–6563)

–: अल्लाह के लिये अच्छा गुमान रखने के बाइस जहन्नुम से निजात :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने एक बन्दे को जहन्नुम में डालने का हुक्म दिया जब वो जहन्नुम के किनारे पर जाकर रुका तो उसने पीछे पलट कर देखा और कहा ऐ मेरे रब बेशक मेरा गुमान तेरे मुताअ़ल्लिक़ अच्छा था तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि इस बन्दे को लौटाओ क्योंकि मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब हूँ जो इस बन्दे ने मेरे मुताअ़ल्लिक़ किया था।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/455-ह०–9236)

–: अल्लाह तआ़ला को बन्दा उ़म्मीद के मुताबिक़ पाता :–

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) एक नौजवान के पास तशरीफ़ ले गये वो क़रीबुल मौत था तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उससे दरयाफ़्त फ़रमाया कि तुम खुद को किस हाल (व कैफ़ियत) में पाते हो उसने अ़र्ज़ किया कि अल्लाह की क़सम मुझे अल्लाह (की रहमत) की उ़म्मीद भी है और गुनाहों का ख़ौफ़ भी है तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि इस मौक़े पर जब मोमिन के दिल में ये दोनों बातें जमा होती हैं तो अल्लाह तआ़ला उसकी उ़म्मीद के मुताबिक़ उसे अ़ता फ़रमाता है और जिसका उसे डर होता है उससे उसे बेख़ौफ़ करता है।

(तिर्मिज़ी–सुनन–1/547ह०--983)

(इब्ने माजा–सुनन–3/389-ह०–4261)

(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–2/26-ह०–1001)

यानी अल्लाह तआ़ला उसे उसकी उम्मीद के मुताबिक अ़ता फ़रमाता है और गुनाहों के सबब ख़ौफ़ व डर हो तो अमान अ़ता फ़रमाता है।

(कंजुल उ़म्माल–8/245-ह०–42200)

-: अल्लाह बन्दे के गुमान के पास है :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के पास हूँ और मैं उसके साथ हूँ जब वो मुझे पुकारता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/225-ह०–2388)

-: मौत के वक़्त अल्लाह के लिये अच्छा गुमान रखना :-

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम में से कोई उस वक़्त तक न मरे सिवाये इसके कि अल्लाह तअ़ाला की ज़ाते पाक से अच्छा गुमान रखता हो (यानी ख़ात्मे के वक़्त अल्लाह तअ़ाला की रहमत से ना उम्मीद न हो बल्कि उम्मीद रखे अल्लाह के फ़ज़्ल व करम पर और गुमान रखे अपनी बख़्शिश और अपनी निजात का)।
(मुस्लिम–सही–6/405-ह०–7229)

अच्छे गुमान के बाइस बन्दे की निजात

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक शख़्स ने बहुत गुनाह किये थे जब वो मरने लगा तो उसने अपने घर वालों से कहा कि जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना फिर मेरी हड्डियों को पीसना फिर मेरी खाक कुछ हवा में उड़ा देना और कुछ दरिया में डाल देना इसलिये कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझ पर क़ादिर हो गया तो ऐसा अ़ज़ाब देगा जैसा कि मख़लूक़ में से किसी को न दिया हो उसके घर वालों ने उसके मरने के बाद ऐसा ही किया फिर अल्लाह तआ़ला ने हर हर चीज़ को जिसने उसका कुछ हिस्सा लिया (यानी पानी, ज़मीन, हवा को) हुक्म दिया कि हाज़िर करो जो तुमने लिया यहाँ तक कि वो शख़्स पूरा होकर सामने खड़ा हो गया फिर अल्लाह तआ़ला ने उससे पूछा तूने ऐसा क्यों किया तो वो बोला ऐ अल्लाह तेरे डर से मैंने ऐसा किया था तो अल्लाह तआला ने उसे बख़्श दिया।

(नसाई–सुनन–1/673-ह०–2083)
(इब्ने माजा–सुनन–3/387-ह०–4255)
(बुख़ारी–सही–3/602-ह०–3452)
(बुख़ारी–सही–6/73-ह०–6480)

–: मरने वालों को ला इलाहा इल्लल्लाह की तल्क़ीन करना :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने मरने वालों को ला इलाहा इल्लल्लाह की तल्क़ीन करो।
(इब्ने माजा–सुनन–1/493-ह०–1445)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/544-ह०–976)
(मुस्लिम–सही–2/376-ह०–2123)
(अबू दाऊद–सुनन–3/514-ह०–3117)
(नसाई–सुनन–1/597-ह०–1829)
(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/544-ह०–10962)
(बैहक़ी सुनन कुबरा–4/619-ह०–6598)

(जिन पर मौत के आसार ज़ाहिर होने लगे उस वक़्त उनके सामने ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा जाये ताकि उनका ज़हन ला–इलाहा इल्लल्लाह यानी अल्लाह तआ़ला की तौहीद की तरफ़ मुतवज्जे किया जाये हालते नज़अ़ में बाज़ औक़ात इन्सान का कलमे का पढ़ना दुश्वार होता है इसलिये उसके सामने कलमे को बराबर पढ़ा जाये)

–: जिसका आख़िरी कलाम ला इलाहा इल्लल्लाह हो उस पर जन्नत वाजिब :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका आख़िरी कलाम ला इलाहा इल्लल्लाह हो उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/454-ह०–9234)

➡ हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस हाल में मरा कि वो ला इलाहा इल्लल्लाह को जानता था और मानता था तो वो जन्नत में दाख़िल होगा।
(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/545-ह०–10974)

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका आख़िरी कलाम ला इलाहा इल्लल्लाह हो वो जन्नत में जायेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–3/514-ह०–1316)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/708-ह०–1299)

ला इलाहा इल्लल्लाह मीज़ान पर भारी

➡ सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने मरने वाले को ला–इलाहा इल्लल्लाह की तल्क़ीन करों क्योंकि ये जुबान पर हल्का है और मीज़ान पर भारी है अगर

एक पलड़े में ला इलाहा इल्लल्लाह और दूसरे पलड़े में तमाम आसमानों और तमाम ज़मीनों को रख दिया जाये तो ला इलाहा इल्लल्लाह का बजन बढ़ जायेगा।
(कंजुल उ़म्माल–8/245-ह०–42201)

ला इलाहा इल्लल्लाहा की तल्क़ीन का तरीक़ा ये है कि पास बैठने वाले लोग खुद ये कलिमा मुनासिब आवाज़ से पढ़े ताकि क़रीबुल मौत शख़्स को याद हो जाये और क़रीबुल मौत शख़्स को हस्बे अहवाल इस कलमे को इख़्तियार करने में भी कोई हर्ज नहीं है यानी मरने वाले शख़्स को अगर ये कलमा जुबान से पढ़ने में दुश्वारी हो तो वो इस कलमे को दिल में पढ़े।

मरने वाले के पास सू०–यासीन पढ़ना

➡हज़रत मुअ़क़िल बिन यसार (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मरने वालों के (यानी क़रीबुल मौत) के पास सू०–यासीन पढ़ा करो।
(इब्ने माजा–सुनन–1/494-ह०–1448)
(अबू दाऊद–सुनन–3/517-ह०–3121)
(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/543-ह०–10958)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/620-ह०–6600)

जो अल्लाह से मिलना चाहे तो अल्लाह भी उससे मिलना चाहता है

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अल्लाह तआ़ला से मिलना चाहता है तो अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलना चाहता है और जो अल्लाह तआ़ला के मिलने से ना खुश हो तो अल्लाह तआ़ला भी उसके मिलने से ना खुश होता है तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हम सब भी तो मौत को बुरा जानते हैं यानी किसी का दिल मौत को पसन्द नहीं करता है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि इसका ये मतलब नहीं है बल्कि इसका मतलब ये है कि जब मोमिन को अल्लाह तआ़ला की रहमत व खुशी और जन्नत की बशारत (खुशख़बरी) होती है तो वो अल्लाह तआ़ला से मिलना चाहता है और अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलने का मुश्ताक़ होता है और जब काफ़िर को अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब और गुस्से की बशारत होती है तो वो अल्लाह तआ़ला के मिलने को बुरा जानता है और अल्लाह तआ़ला भी उसके मिलने से नाखुश होता है।

(तिर्मिज़ी–सुनन–1/588-ह०–1067)
(मुस्लिम–सही–6/270-ह०–6822)

–: जो अल्लाह की मुलाक़ात चाहे तो अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात चाहता :–

➡ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात को दोस्त रखे तो अल्लाह तआ़ला भी उसकी मुलाक़ात को दोस्त रखता है और जो अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात को मकरूह जाने तो अल्लाह तआ़ला भी उसकी मुलाक़ात को मकरूह जानता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/180-ह०–2309)

➡ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अल्लाह तआ़ला से मिलना पसंद करता है तो अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलना पसंद करता है और जो अल्लाह तआ़ला से मिलना पसंद नहीं करता तो अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलना पसंद नहीं करता और जब ईमानदार आदमी की मौत आती है तो उसे अल्लाह तआ़ला की रज़ा और उसके यहाँ उसके इहतिराम व इकराम की उसे बशारत दी जाती है जो उसे मिलने वाली है तो उसे उससे बेहतर कोई चीज़ मालूम नहीं होती इसलिये वो अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात का ख़्वाहिश मंद होता है और अल्लाह तआ़ला भी उसकी मुलाक़ात को–

पसंद करता है और जब काफ़िर की मौत का वक़्त आता है तो उसे अल्लाह के अ़ज़ाब और उसके यहाँ मिलने वाली सज़ाओं को बताया जाता है जो उसे मिलने वाली होती हैं तो वो उसे इंन्तिहाई ना गवार गुज़रती हैं इसलिये वो अल्लाह तआ़ला से मिलने को ना पसंद करता है लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलना नहीं चाहता।
(बुख़ारी–सही–6/86-ह०–6507)

–: मोमिन को मौत की तकलीफ़ देना अल्लाह को पसंद नहीं :–

➡हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मोमिन मौत की तकलीफ़ को पसंद नहीं करता और मुझे भी उसे तकलीफ़ देना अच्छा नहीं लगता। (बुख़ारी–सही–6/84-ह०–6502)

–: बन्दे के तीन दोस्त :–

➡हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर बन्दे के तीन दोस्त होते हैं एक दोस्त कहता है कि मैं तेरे साथ हूँ जितना मुझसे चाहे ले ले ये तो उसका माल है और एक दोस्त कहता है कि मैं तेरे साथ–

उस वक़्त तक हूँ जब तक कि मौत का फ़रिश्ता नहीं आता ये उसके अह्ल व अयाल हैं और एक दोस्त कहता है कि मैं तेरे साथ हमेशा रहूँगा जहाँ तू जायेगा मै तेरे साथ चलूँगा जहाँ तू दाख़िल होगा मैं भी दाख़िल होऊँगा और जहाँ से तू निकलेगा मैं भी निकलूँगा और ये उसके आअ़माल हैं।

(कंजुल उ़म्माल–8/294-ह०–42742)

(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/745-ह०–1375)

–: मुर्दे के साथ तीन चीज़ें जाती हैं :–

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुर्दे के साथ तीन चीजें जाती हैं एक उसके अ़ज़ीज़ अक़ारिब दूसरा उसका माल और तीसरा उसके आअ़माल फिर दो वापस लौट आती हैं और एक मुर्दे के साथ रह जाती है मुर्दे के साथ उसके घर वाले और माल और आअ़माल जाते हैं तो घर वाले और माल वापस लौट आते हैं और मुर्दा अपने अच्छे और बुरे आअ़माल के साथ क़ब्र में रह जाता है।

(नसाई–सुनन–1/630-ह०–1914)

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/217-ह०–2379)

(बुख़ारी–सही–6/90-ह०–6514)

(मुस्लिम–सही–6/469-ह०–7424)

बन्दे का असल माल वो जो आगे भेजा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जान लो कि तेरा माल वो है जो (नेक आअ़माल की सूरत में) तूने आगे भेजा और जो माल तू अपने पीछे छोड़ेगा वो माल तेरा नहीं है बल्कि तेरे वारिसों का होगा।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/585-ह०–6509)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक बन्दा कहता है कि मेरा माल मेरा माल मगर उसका माल तीन तरह का होता है जो उसने खा लिया और हज़्म कर लिया और जो उसने पहन लिया उसे फाड़ लिया या बोसीदा हो गया और जो माल (सद्क़ा, ख़ैरात व राहे खुदा में) आगे भेज दिया और जो इनके अलावा है वो तमाम माल वो छ़ोड़ने वाला है और वो अल्लाह की तरफ़ जाने वाला है।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/586-ह०–6510)

–: जो माल आगे भेजा तो बन्दा उससे मिलना चाहता :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या वजह है कि मुझे मौत पसंद नहीं है तो आप–

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तेरे पास माल है तो उसे आगे भेज क्योंकि इन्सान अपने माल के साथ होता है अगर उसे पहले आगे भेज दिया तो उससे मिलना चाहेगा और अगर माल पीछे छोड़ दिया तो इन्सान उसके साथ रहना चाहता है। (कंजुल उ़म्माल–8/239-ह०–42139)

–: फ़रिश्ते कहते आगे क्या भेजा और लोग कहते पीछे क्या छोड़ा :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स मर जाता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि इसने आगे क्या भेजा और लोग कहते हैं कि इसने पीछे क्या छोड़ा।
(कंजुल उ़म्माल–8/291-ह०–42735)

मौत के बाद मोमिन आराम पाता है

➡ हज़रत अबू क़तादा अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के पास एक जनाज़ा गुज़रा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन बन्दा मरने के बाद दुनियाँ की तकलीफ़ो मशक़्क़त व उसकी अज़ि़यत से अल्लाह तआ़ला की रहमत की तरफ़ आराम व इस्तिराहत पाता है और फ़ाजिर बन्दे के मरने के बाद लोग व शहर व दरख़्त और जानवर आराम व छुटकारा पाते हैं। (बुख़ारी–सही–6/89-ह०–6512)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/26-ह०–9264)

–: मोमिन की मौत का बयान :–
(कुरान की रोशनी में)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को साबित क़दम रखता है दुनियाँ की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी। (सू०–इब्राहीम–27)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा न वो दुनियाँ में गुमराह होगा और न वो आख़िरत में मुसीबत (में गिरफ़्तार) होगा यानी वो अ़ज़ाब में मुब्तिला न होगा।
(सू०–ताहा–123)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जिनकी रूहें फ़रिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वो (नेकी व ताअ़त के बाइस) पाकीज़ा व खुश व खुर्रम हों (उनसे फ़रिश्ते क़ब्ज़े रूह के वक़्त ही कह देते हैं) कि तुम पर सलामती हो तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ उन (आअ़माले सालिहा) के बाइस जो तुम किया करते थे।
(सू०–नहल–32)

–:काफ़िर व फ़ाजिर की मौत का बयान:–
(कुरान की रोशनी में)

इरशादे बारी तआ़ाला है:–

बेशक जिन लोगों की रूह फ़रिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वो (कुफ़्र व फिस्क़ के माहौल में रहकर) अपनी जानों पर जुल्म करने वाले हैं (तो फ़रिश्ते) उनसे दरयाफ़्त करते हैं कि तुम किस हाल में थे (तुमने अपने दीन और ईमान की हिफ़ाज़त न की और न ही सर ज़मीने कुफ़्र व फ़िस्क़ को छोड़ा) वो (माअ़ज़रत के साथ) कहते हैं कि हम ज़मीन में कमज़ोर व बेबस थे (फिर) फ़रिश्ते (जवाबन) कहते हैं क्या अल्लाह तआ़ाला की ज़मीन फ़राख़ न थी कि तुम उसमें कहीं हिजरत कर जाते सो यही वो लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नुम हैं और वो बहुत ही बुरा ठिकाना है सिवाये उन वाक़ई मजबूर व बेबस मर्दों और औ़रतों और बच्चों के जो न किसी तदबीर पर कुदरत रखते हैं और न (वहाँ से निकलने का) कोई रास्ता जानते हैं सो ये वो लोग हैं कि यक़ीनन अल्लाह उनसें दर–गुज़र फ़रमायेगा और अल्लाह बड़ा मुआ़फ़ फ़रमाने वाला बड़ा बख़्शने वाला है।

(सू०–निसा–97 ता 99)

इरशादे बारी तआ़ाला है:–

फिर (उस वक़्त उन का हश्र) कैसा होगा जब फ़रिश्ते उनकी जान (इस हाल में) निकालेंगे कि

उनके चेहरों और उनकी पीठों पर ज़र्बे लगाते होंगे ये इस वजह से है कि उन्होंने उस (रबिश) की पैरवी की जो अल्लाह को नाराज़ करती है और उसकी रज़ा को नापसंद किया तो उस (अल्लाह) ने उनके (जुमला) आअ़माल अकारत कर दिये।
(सू०-मुहम्मद-47/27,28)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो निहायत सख़्ती से खींच लाते हैं और उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो (मोमिनों की जान के) बन्द निहायत नरमी से खोल देते हैं और उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो (ज़मीन व आसमान के दरमियान) तेज़ी से तैरते फिरते हैं फिर उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो मुख़्तलिफ़ उमूर की तदबीर करते हैं उस दिन (कायनात की) मुताहर्रिक चीज़ शदीद हरकत में आ जायेगी पीछे आने वाला एक और ज़लज़ला उसके पीछे आयेगा उस दिन (लोगों के) दिल ख़ौफ़ व इज़तिराब से धड़कते होंगे उनकी आँखें (ख़ौफ़ व हैबत से) झुकी होंगी (कुफ़्फ़ार) कहते हैं क्या हम पहली ज़िन्दगी की तरफ़ लौटाये जायेगे क्या जब हम बोसीदा (खोखली) हड्डियाँ हो जायेंगे (तब भी ज़िन्दा किये जायेंगे) वो कहते हैं ये (लौटना) तो बड़े ख़सारे का लौटना होगा फिर तो ये एक ही बार शदीद हैबतनाक (कायनात के तमाम अजराम का) फट जाना होगा फिर वो सब लोग यकायक खुले मैदान (हश्र) में आ मौजूद होंगे।
(सू०-नाज़िआ़त-79/1 ता 14)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और अगर आप (वो मन्ज़र) देखें (तो बड़ा ताअज्जुब करें) जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान क़ब्ज़ करते हैं वो उनके चेहरों और उन की पुश्तों पर (हथोड़े) मारते जाते हैं और (कहते हैं कि दोज़ख़ की) आग का अ़ज़ाब चख लो ये (अ़ज़ाब) उन (आअ़माले बद) के बदले में है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे और अल्लाह हरगिज़ बन्दों पर जुल्म नहीं करता। (सू०-अनफ़ाल-8/50,51)

➡ और अगर आप (उस वक़्त का मन्ज़र) देखें जब ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में (मुब्तिला) होंगे और फ़रिश्ते (उन की तरफ़) अपने हाथ फैलाये हुये होंगे और (उनसे कहते होंगे) तुम अपनी जानें जिस्मों से निकालो आज तुम्हें सज़ा में ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जायेगा इस वजह से कि तुम अल्लाह पर नाहक़ बातें किया करते थे और तुम उसकी आयतों से सरकशी किया करते थे।
(सू०-अनआ़म-6/93)

➡ यहाँ तक कि जब उनमें से किसी को मौत आ जायेगी (तो) वो कहेगा कि ऐ मेरे रब मुझे (दुनियाँ में) वापस भेज दे ताकि मैं इस (दुनियाँ) में कुछ नेक अ़मल कर लूँ जिसे मैं दुनियाँ में छोड़ आया हूँ हरगिज़ नहीं ये वो बात है जिसे वो (बतौरे हसरत) कह रहा होगा और उन के आगे उस दिन तक एक परदा (हाइल) है (जिस दिन) वो (क़ब्रों से) उठाये जायेंगे। (सू०-मोमिनून-23/99,100)

-: मोमिन की मौत का बयान :-
(अहादीस की रोशनी में)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब नेक ईमानदार की रूह बदन से निकलती है तो फ़रिश्ते उस रूह को लेकर आसमान पर जाते हैं तो आसमान वाले फ़रिश्त कहते हैं कि ये पाकीज़ा रूह ज़मीन की तरफ़ से आयी है और अल्लाह तआला तुझ पर रहमत करे और तेरे जिस्म पर रहमत करे जिसको तूने आबाद रखा था फिर उस रूह को परवर दिगार के पास ले जाते हैं तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इसको क़यामत तक के लिये ले जाओ यानी अपने मक़ाम इल्लीईन में जहाँ मामिनों की अरवाह रहती हैं और क़यामत तक वहीं रखो। (मुस्लिम-सही-6/402-ह०-7221)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने मरने वालों को ला इलाहा इल्लल्लाह की तल्क़ीन करो इस वास्ते कि मोमिन की रूह नरमी के साथ निकलती है और काफ़िर की रूह सख़्ती से निकलती है।
(कंजुल उ़म्माल-8/242-ह०-42165)

➡ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अल्लाह तआला की मुलाक़ात-

को पसंद करता है तो अल्लाह तआ़ला भी उसकी मुलाक़ात को पसंद करता है और जो अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात न चाहे तो अल्लाह तआला भी उसकी मुलाक़ात नहीं चाहता तो लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हम सब भी तो मौत को पसंद नहीं करते तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये मौत से नफ़रत का मतलब नहीं है बल्कि बात ये है कि जब मोमिन की मौत आती है तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक फ़रिश्ता आता है और जो नेअ़मतें व राहतें उस मोमिन को मिलने वाली होती हैं उनकी बशारत वो फ़रिश्ता उस मोमिन को देता है तो फिर उस मोमिन को अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात से बढ़कर कोई चीज़ महबूब नहीं होती इसलिये वो अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात को पसंद करता है और काफ़िर व फ़ाजिर की जब मौत आती है तो जो मसाइब और अ़ज़ाब उस पर आने वाले होते हैं तो उन की वजह से वो अल्लाह तआ़ला से मिलना पसंद नहीं करता (कंजुल उ़म्माल–8/245-ह०–42198)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन पेशानी के पसीने से मरता है।
(नसाई–सुनन–1/598-ह०–1831)
(इब्ने माजा–सुनन–1/495-ह०–1452)

(तिर्मिज़ी में इतना इज़ाफ़ा है कि ताजदारे कायनात

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं गधे की मौत को पसंद नहीं करता अ़र्ज़ किया गया कि गधे की मौत क्या है तो आप ने फ़रमाया कि अचानक मौत। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/546-ह०–980)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मोमिन की मौत नज़दीक होती है तो रहमत के फ़रिश्ते सफ़ेद रेशमी कपड़ा लेकर आते हैं और कहते हैं कि निकल अपने परवर दिगार की रहमत और रिज़्क़ की तरफ जो तुझसे नाराज़ नहीं है बल्कि अल्लाह तआ़ला तुझसे राज़ी है फिर वो रुह निकलती है जैसे उ़म्दाह खुश्बूदार मुश्क हो फिर फ़रिश्ते उस रुह को हाथों हाथ उठाते हैं और आसमान के दरवाज़े पर ले जाते हैं और कहते हैं क्या खुशबू है जो ज़मीन से आयी है फिर उस रुह को मोमिनों की रुहों के पास ले जाते हैं तो वो रुहें खुश हो जाती हैं जैसे तुम्हें किसी गये हुये शख़्स के आने पर खुशी होती है और वो रुहें उस रुह से पूँछती हैं कि फुँला शख़्स (यानी जिसको वो दुनियाँ में छोड़ गये थे) अब कैसा है फिर बाज़ रुहें कहती हैं कि अभी ठहरो और इसे छोड़ दो क्योंकि ये दुनियाँ के ग़म में था फिर वो रुह कहती है कि क्या वो शख़्स तुम्हारे पास नहीं आया (वो तो मर गया था) तो वो रुहें कहतीं हैं तो वो दोज़ख़ में गया होगा।
(नसाई–सुनन–1/600-ह०–1836)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स मरने के क़रीब होता है तो उसके पास फ़रिश्ते आते हैं अगर वो नेक होता है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ पाक रुह निकल जो पाक बदन में थी तू नेक है और तू खुश हो जा अल्लाह की रहमत से और खुश्बू से और अपने परवरदिगार से जो तुझसे नाराज़ नहीं और उससे बराबर यही कहते हैं यहाँ तक कि रुह बदन से निकल आती है फिर फ़रिश्ते उसको आसमान की तरफ़ ले जाते हैं तो आसमान का दरवाज़ा खुलता है तो वहाँ के फ़रिश्ते पूछते हैं कि ये कौन है तो फ़रिश्ते जवाब देते है कि ये फुलां शख़्स की रुह है फिर वो कहते हैं मरहबा पाक नफ़्स जो पाक बदन में थी अन्दर दाख़िल हो जा और खुश हो जा अल्लाह की रहमत से और खुश्बू से और उस मालिक से जो तुझसे नाराज़ नहीं है बराबर उससे यही कहा जाता है यहाँ तक कि रुह आसमान पर पहुँच जाती है जहाँ अल्लाह अज़्ज़ व जल है।

(इब्ने माजा–सुनन–3/390-ह०–4262)

-:काफ़िर व फ़ाजिर की मौत का बयान:-
(अहादीस की रोशनी में)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब काफ़िर की रुह निकलती है तो आसमान वाले कहते हैं कि ये ख़बीस बदबूदार रुह ज़मीन की तरफ़ से आयी है तो फ़रिश्ते उस पर लाअ़नत करते हैं और कहते हैं कि कोई नापाक रुह आयी है फिर हुक्म होता है कि इसको ले जाओ और इसे अपने मक़ाम यानी सिज्जीन में जहाँ काफ़िरों की रुह रहती है और क़यामत तक इस रुह को वहीं रखो रावी बयान करते हैं कि आप (सल्लललाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने एक बारीक कपड़ा जो आप ओढ़े हुये थे वो अपनी नाक पर रखा (जब काफ़िर की रुह का ज़िक्र किया और उसकी बदबू का बयान किया) (मुस्लिम-सही-6/402-ह०-7221)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब काफ़िर की मौत आती है तो अ़ज़ाब के फ़रिश्ते एक बदबूदार टाट का टुकड़ा लेकर आते हैं और कहते हैं कि ऐ रुह निकल तू अल्लाह से नाराज़ है और तुझसे अल्लाह नाराज़ है ऐ रुह निकल अल्लाह के अ़ज़ाब की तरफ़ फिर वो निकलती है जैसे सड़े मुर्दार की-

बदबू यहाँ तक कि उसे ज़मीन के दरवाज़े पर लाते हैं और कहते हैं क्या बदबू है फिर उस रुह को काफ़िरों की रुहों में ले जाते हैं।
(नसाई–सुनन–1/600-ह०–1836)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई बुरा आदमी मौत के क़रीब होता है तो फ़रिश्ते कहते हैं ऐ नापाक रुह जो नापाक बदन में थी निकल बुराई के साथ और खुश हो जा गरम पानी और पीप और इस जैसी चीज़ों से फिर उससे यही कहते रहते हैं यहाँ तक कि उसकी रुह निकल जाती है फिर उसको चढ़ाते हैं आसमान की तरफ़ मगर वहाँ का दरवाज़ा नहीं खुलता वहाँ के फ़रिश्ते पूछते हैं कि ये कौन है तो फ़रिश्ते कहते हैं कि ये फुलां शख़्स की रुह है तो वो कहते हैं इस नापाक नफ़्स के लिये मरहबा नहीं है जो नापाक बदन में थी फिर फ़रिश्ते कहते हैं कि लौट जा बुराई के साथ तेरे लिये आसमान के दरवाज़े नहीं खुलेंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/390-ह०–4262)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन की रुह नरमी से निकलती है और काफ़िर की रुह घसीटी जाती है जैसे गधे की जान निकाली जाती है और

मोमिन का कोई गुनाह बाक़ी रह जाता है जिसकी वजह से मौत के वक़्त उस पर सख़्ती की जाती है ताकि वो सख़्ती उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाये और काफ़िर की कुछ नेकियों के सबब वक़्ते मौते आसानी की जाती है ताकि उसे उसकी नेकियों का बदला (दुनियाँ में ही) दे दिया जाये।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/244-ह०–42187)

–: आसान तरीन मौत :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे हल्की मौत की मिसाल ऐसी है कि कोई काँटे दार टहनी को ऊन में से खींचा जाये तो कुछ न कुछ ऊन भी खिंची चली आती है
(कंज़ुल उ़म्माल–8/243-ह०–42174)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने मरने वालों के पास रहा करो और उन्हें ला इलाहा इल्लल्लाह की तल्क़ीन किया करो और जन्नत की बशारत दिया करो क्योंकि जांकनी के वक़्त बर्दाश्त करने वाले मर्द व अ़ौरत हैरान हो जाते हैं और शैतान जांकनी के घड़ी में इन्सान से ज़्यादा क़रीब होता है और मल्कुल मौत को देखना सौ ज़रबों से ज़्यादा सख़्त होता है और बन्दे की जान इस हालत में निकलती है कि हर रग अलैहदा–अलैहदा तकलीफ़ उठाती है।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/241-ह०–42158)

–: जान निकलती तो आँखें उसके पीछे लगी रहती :–

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अबू सलमा की अ़यादत को तशरीफ़ लाये और उनकी आँखें खुली रह गयी थीं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उनकी आँखों को बन्द कर दिया और फ़रमाया कि जब जान निकलती है तो आँखें उसके पीछे लगी रहती हैं फिर लोगों ने उनके घर में रोना शुरु कर दिया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने लिये अच्छी ही दुआ़ करो क्योंकि फ़रिश्ते तुम्हारी बातों पर आमीन कहते हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह बख़्श दे अबू सलमा को और बुलन्द कर उनका दर्जा हिदायत वालों में और उनकी क़ब्र को कुशादा कर और उसमें रोशनी कर।

(मुस्लिम–सही–2/378-ह०–2130)
(अबू दाऊद–सुनन–3/505-ह०–3118)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब रूह निकलती है तो नज़र उसका पीछा करती है क्या तुम्हें मरने वाले की खुली आँखें नज़र नहीं आती।

(कंजुल उ़म्माल–8/243-ह०–42179)

–: मय्यत की आँखें बन्द करना और भली बात कहना :–

➡ हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम अपने मुर्दों के पास जाओ तो उनकी आँखें बन्द कर दो इसलिये निगाह रूह के पीछे पीछे जाती है और भली बात कहो क्योंकि फ़रिश्ते मय्यत वालों की बात पर आमीन कहते हैं।
(इब्ने माजा–सुनन–1/495-ह०–1455)
(मुस्लिम–सही–2/379-ह०–2132)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम लोग मरीज़ या मय्यत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो क्योंकि जो कुछ तुम कहते हो मलाइका उस पर आमीन कहते हैं।
(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/542-ह०–10952)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/621-ह०–6601)

–: ताअ़ज़ियत करने का सवाब :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो मुसीबत ज़दा–

को तसल्ली व तस्कीन और दिलासा दे जिसका कोई मर गया हो तो अल्लाह तआ़ला उसको वैसा ही अज्र देगा जैसा उस मुसीबत ज़दा को देगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/591-ह०–1073)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो ईमान वाला अपने भाई की परेशानी में तसल्ली दिलाये तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसको इज़्ज़त का लिबास पहनायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/541-ह०–1601)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो किसी मुसीबत ज़दा की ताज़ियत करे तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसे अपने अ़र्श के साये तले जगह अ़ता फ़रमायेगा जिस दिन कोई साया न होगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/281-ह०–42613)

➡ नबी करीम (सल्लललाहु तआ़ला अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने किसी शख़्स की ताअ़ज़ियत की तो रोज़े क़यामत उसे जन्नत की चादर उढ़ाई जायेगी। (कंज़ुल उ़म्माल–8/282-ह०–42627)

–: मय्यत के घर वालों के लिये खाने का इहतिमाम करना :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाअ़फ़र (रज़िअल्लाहु–

तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि जब हज़रत जाअ़फ़र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) की शहादत की इत्तिलाअ़ आयी तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसललम) ने फ़रमाया कि जाअ़फ़र के घर वालों के लिये खाना पकाओ क्योंकि उनके साथ एक ऐसा मुअ़ामला पेश आ गया जिसने उनको मसरुफ़ कर रखा है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/543-ह०–1610)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/553-ह०–998)
(अबू दाऊद–सुनन–3/526-ह०–3132)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/745-ह०–1377)

मोमिन रुह की अर'वाह से मुलाक़ात

➡हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मोमिन बन्दा जांकनी की हालत में होता है तो फ़रिश्ते उसके पास खुश्बूदार सफ़ेद रेशम का लिबास लेकर आते हैं और कहते हैं कि ऐ रुह खुश होकर राहत व रज़ामन्दी की तरफ़ निकल और उस रब की तरफ़ निकल जो तुझसे नाराज़ नहीं है फिर वो उ़म्दाह खुश्बू के साथ निकलती है फिर फ़रिश्ते उस रुह को लेकर आसमानों की तरफ़ निकलते हैं तो आसमान वाले फ़रिश्ते कहते हैं कि ये ज़मीन से आने वाली रुह कितनी अच्छी है फिर उस रुह को मोमिनों की अर'वाह के पास ले जाया जाता है तो

उन मोमिनों की अर‘वाह उस मोमिन बन्दे की रुह से मिलकर बहुत खुश होती है जैसे तुम्हें किसी अपने ग़ायब के वापस आने पर ख़ुशी होती है फिर रुहें उस आने वाली रुह से पूछती हैं कि फुलां शख़्स का क्या हाल है फिर फ़रिश्ते कहते हैं कि इसे रहने दो क्योंकि ये दुनियाँ के ग़म में था फिर वो रुह कहती है कि क्या वो तुम्हारे पास नहीं आया तो वो कहते हैं कि वो मेरे पास नहीं आया उसे जहन्नुम की तरफ़ ले जाया गया होगा।

और जब काफ़िर की जांकनी का वक़्त होता है तो फ़रिश्ते बदबूदार टाट का टुकड़ा लेकर उसके पास लेकर आते हैं और कहते हैं ऐ रुह निकल अ़ज़ाब की तरफ़ और अल्लाह तआ़ाला की नाराज़गी की तरफ़ फिर वो रुह मुर्दार और बहुत बुरी बदबू के साथ निकलती है यहाँ तक कि उसे ज़मीन के दरवाज़े तक लाते हैं तो ज़मीन के फ़रिश्ते कहते हैं कि कितनी बदबूदार रुह है यहाँ तक कि उसे कुफ़्फ़ार की अर‘वाह के पास ले जाते हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/242-ह०–42169)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/710-ह०–1302)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब बन्दे की रुह क़ब्ज़ कर ली जाती है तो अल्लाह तआ़ाला के रहमत वाले बन्दे उससे यूँ मिलते हैं जैसे लोग दुनियाँ में किसी खुशख़बरी देने वाले से मिलते हैं फिर वो उसकी तरफ़ सवाल करने के लिये मुतवज्जै होते हैं और

कहते हैं कि फुलां का क्या हुआ फ़लानी का क्या हुआ तो वो एक दूसरे से कहते हैं कि अपने इस भाई को आराम करने दो क्योंकि वो दुनियाँ की मशक़्क़तों में था चुनांचा वो फिर उससे पूछते हैं कि फुलां का क्या हुआ क्या फुलां की शादी हो गई बग़ैराह सवालात करते हैं फिर वो किसी ऐसे शख़्स के बारे में पूछते हैं जिसका इन्तिक़ाल हो चुका है तो वो जवाब देता है कि वो तो फ़ौत हो गया है क्या वो तुम्हारे पास नहीं आया तो वो कहते है कि मेरे पास नहीं आया तो उसे उसके ठिकाने भड़कती हुई आग में पहुँचा दिया गया वो क्या ही बुरा ठिकाना है। (कंजुल ऊ़म्माल–8/292-ह०–42735)

–: मोमिन की रुहें सब्ज़ परिन्दों में :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिनीन की रुहें जन्नत के सब्ज़ परिन्दों में होती है जो जन्नती दरख़्तों पर होते हैं यहाँ तक कि क़यामत के दिन उन्हें उनके जिस्मों में वापस किया जायेगा। (कंजुल ऊ़म्माल–8/288-42688)

–: मय्यत पर चिल्लाकर रोना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों में दो बातें मौजूद हों तो वो कुफ़्र है एक नसब में तअ़ना करना दूसरा मय्यत पर चिल्लाकर रोना (उसके

औसाफ़ बयान करके रोना जिसको नोहा कहते हैं)
(मुस्लिम–सही–1/171-ह०–226)

–: चेहरा पीटना, गिरेबां चाक करना :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो शख़्स हममें से नहीं जो गिरेबान चाक करे और चेहरा पीटे और जाहलियत की सी बातें करे। (और एक रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम ने ऐसे शख़्स पर लाअ़नत फ़रमाई है)
(इब्ने माजा–सुनन–1/534-ह०–1584)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/554-ह०–999)
(बुख़ारी–सही–2/85-ह०–1394)
(नसाई–सुनन–1/610-ह०–1863)

–: नोहा करना जाहलियत है :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने नोहा करने वाली और सुनने वाली पर लाअ़नत फ़रमाई है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/523-ह०–3128)

➡ हज़रत अबू मालिक अशअ़री बयान करते है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने

फ़रमाया कि नोहा करना जाहलियत का काम है और नोहा करने वाली जब तौबा के बग़ैर मरे तो अल्लाह तआ़ला उसको तारकोल का लिबास पहनाऐगा और दोज़ख़ के शोलों का कुर्ता पहनाऐगा (इब्ने माजा–सुनन–1/533-ह०–1581)
(मुस्लिम–सही–2/389-ह०–2157)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो मुसीबत के वक़्त अपने रुख़सारों को पीटे और गिरेबां फाड़े और दौरे जाहलियत के नारे लगाये वो हममें से नहीं। (बुख़ारी–सही–3/635-ह०–3519)
(मुस्लिम–सही–1/199-ह०–285)

–: किस तरह का रोना जाइज़ है :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) एक जनाज़े में शरीक थे तो हज़रत उ़मर ने एक औ़रत को देखा जो तेज़ आवाज़ से रो रही थी तो हज़रत उ़मर ने उस औ़रत को रोकना चाहा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने हज़रत उ़मर को फ़रमाया कि ऐ उ़मर इसे छोड़ दो बेशक उसकी आँखें अश्कबार हैं और उसका दिल ग़म में मुब्तिला है (हाकिम–अल मुस्तदरक–11/761-ह०–406)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/620-ह०–11411)

–: हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) का रोना :–

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की गोद में जब हज़रत इब्राहीम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को लाया गया उस वक़्त हज़रत इब्राहीम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) क़रीबुल मर्ग थे और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की आँखों में आंसू जारी हो गये फिर आपसे अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह आप रो रहे हैं हालाँकि आपने रोने से मना फ़रमाया है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने नोहा करने से मना फ़रमाया है और नग़मे के वक़्त लह्व व लअ़ब की आवाज़ से मना फ़रमाया है और मुसीबत के वक़्त शैतान की आवाज़ से मना फ़रमाया है और चेहरों को नोचना और गिरेबान चाक करना और शैतान की तरह ज़ोर से चीख़ने से मना फ़रमाया और ये रहमत के आँसू हैं और जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता।

(बुख़ारी–सही–2/92-ह०–1303)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/557-ह०–1005)
(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/787-ह०–1225)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत इब्राहीम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) नज़अ़ की तकलीफ़ में

मुब्तिला हैं और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की आँखों से आँसू जारी हैं और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि आँखें बह रही हैं और दिल ग़मगीन है और ऐ इब्राहीम हम तेरी वजह से बहुत मग़मूम हैं।
(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/787-ह०–12253)

➡ हज़रत अस्मा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के साहब ज़ादे हज़रत इब्राहीम का इन्तिक़ाल हुआ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) रोने लगे तो ताअ़ज़ियत करने वाले (अबू बक्र या उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) ने कहा कि आप सबसे ज़्यादा अल्लाह तआ़ाला के हक़ को बड़ा जानने वाले हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि आँखें बरस रही हैं और दिल ग़म ज़दा है और हम ऐसी बात नहीं कहेंगे जो कि परवर दिगार की नाराज़गी का बाइस बने। (इब्ने माजा–सुनन–1/536-ह०–1589)

(जिस शख़्स को ऐसे मौक़े पर रोना न आये तो ये दिल के सख़्त होने की अ़लामत है और किसी ग़म में रोना शरीअ़त के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि दिल की नरमी और मिज़ाज की मेयाना रबी की निशानी है और चिल्लाकर तेज़ आवाज़ से रोना कपड़े फाड़ना और मुँह पर तमाचे मारना ये ख़िलाफ़े शरीअ़त है और जाहलियत के काम हैं)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को बाद वफ़ात बोसा दिया और आप रो दिये यहाँ तक कि आप के आँसू आप के रुख़सार मुबारक पर बह रह थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/549-ह०–989)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/669-ह०–6712)
(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/774-ह०–12193)

–: मय्यत पर रोने से मय्यत को अ़ज़ाब नहीं होता :–

➡ हज़रत इब्ने ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मय्यत पर अ़ज़ाब होता है उसके घर वालों के रोने से रावी ने कहा सो फ़रमाया हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने कि रहमत करे अल्लाह तआ़ला अ़ब्दुल्लाह पर उन्होंने ये बात झूठ नहीं बनायी है बल्कि उन्हें वहम हो गया और ये बात तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक यहूदी के लिये फ़रमायी थी कि वो मर गया था फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मय्यत पर अ़ज़ाब हो रहा है और उसके घर वाले रो रहे हैं। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/557-ह०–1004)
(बुख़ारी–सही–2/83-1289)(नसाई–सुनन–1/608-1859)
(मुस्लिम–सही–2/388-ह०–2156,2153)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) के सामने ये बयान किया गया कि मय्यत पर ज़िन्दा के रोने की वजह से अ़ज़ाब दिया जाता है तो आप (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि उनसे ग़लती हो गयी है बल्कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने ये फ़रमाया था कि बेशक मय्यत को अ़ज़ाब दिया जा रहा होता है और उसके घर वाले उस पर रो रहे होते हैं और फ़रमाया कुरान मजीद की ये आयते करीमा तुम्हारे लिये काफ़ी है कि ''कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा''।

(सू०–अनआ़ाम–6/164)

(बुख़ारी–सही–2/83-ह०–1288)

(मुस्लिम–सही–2/386ह०–2150)

(अबू दाऊद–सुनन–3/524-ह०–3129)

(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/786-ह०–12252)

–: खुदकुशी करने वाले को दोज़ख़ का सख़्त अ़ज़ाब दिया जायेगा :–

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

और तुम अपनी जानों को हलाक मत करो बेशक अल्लाह तुम पर मेहरबान है और जो तअ़द्दी और जुल्म से ऐसा करेगा तो हम अ़नक़रीब उसे (दोज़ख़ की) आग में डाल देंगे और ये अल्लाह पर बहुत आसान है।

(सू०–निसा–4/29,30)

-: खुदकुशी करने वाले को उसी तरह का अ़ज़ाब दिया जायेगा :-

➡ साबित बिन ज़ह्हाक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने किसी चीज़ के साथ खुदकुशी की तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसी चीज़ के साथ उसको अ़ज़ाब देगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/414-ह०–2636)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने पहाड़ से अपने आप को गिराकर खुदकुशी की तो वो जहन्नुम की आग में हमेशा हमेशा के लिये इसी तरह खुद को गिराता रहेगा और जिसने ज़हर पीकर खुदकुशी की तो उसके हाथ में ज़हर होगा और वो दोज़ख़ की आग में हमेशा हमेशा के लिये ज़हर पीकर खुदकुशी करता रहेगा और जिसने तेज़ धार आले (किसी चीज़) से खुदकुशी की वो आला उसके हाथ में होगा और वो जहन्नुम की आग में हमेशा हमेशा के लिये आले से अपना पेट फाड़ता रहेगा।
(बुख़ारी–सही–5/489-ह०–5778)
(मुस्लिम–सही–1/204-ह०–300)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1091-ह०–2043,2044)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो खुद अपना गला घौंट ले वो दोज़ख़ में अपना गला घौंटता ही रहेगा और जो शख़्स नेज़ा मारकर खुदकुशी करे वो दोज़ख़ में भी खुद को नेज़ा मारता ही रहेगा। (बुख़ारी–सही–2/123-ह०–1365)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने ज़हर पिया तो आख़िरत में उसका ज़हर उसके हाथ में होगा जिसे वो जहन्नुम का आग में हमेशा पीता रहेगा। (अबू दाऊद–सुनन–5/39-ह०–3872)

➡ हज़रत साबित बिन ज़ह्हाक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स तेज़ हथियार से खुद को मार डाले तो उसको उसी हथियार से जहन्नुम में अ़ज़ाब दिया जायेगा। (बुख़ारी–सही–2/122-ह०–1363)

खुदकुशी के बाइस सहाबी भी दोज़ख़ में

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ख़ैबर के मक़ाम पर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) और मुशरिकीन में खूब लड़ाई हुई फिर जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अपने लश्कर–

की जानिब वापस आ गये और मुशरिकीन अपने लश्कर की तरफ़ लौट गये इस दौरान में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के असहाब में से एक शख़्स ऐसा था जो जमाअ़त से अलग हो जाने वाला या तन्हा रह जाने वाले मुशरिक को नहीं छोड़ता था वो उसका पीछा करता और अपनी तलवार से उसे मौत के घाट उतार देता था उस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ चर्चा होने लगा कि वो खूब लड़ा और जितना काम उसने किया है हममें से किसी ने भी इतना काम नहीं किया है।

लेकिन नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने उसके मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि तुम आगाह रहो कि वो शख़्स दोज़ख़ी है जब वो शख़्स ज़ख़्मों से निहाल हो गया तो उसने जल्दी मरना चाहा इसलिये उसने अपनी तलवार ज़मीन पर रखी और उसकी नोक अपने सीने पर रखी फिर अपनी तलवार पर ज़ोर दिया इस तरह उसने खुदकुशी कर ली फिर एक शख़्स हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया क्या बात है तो उस शख़्स ने कहा जिस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ आपने ज़िक्र फ़रमाया था कि वो जहन्नुमी है और लोगों को ये बात बड़ी गिरां गुज़री थी चुनाँचा मैं उसकी तलाश में निकला तो देखा कि वो सख़्त ज़ख़्मी हो-

गया था और जल्दी मरना चाहता था तो उसने अपनी तलवार की नोक अपने सीने के दरमियान करके उस पर झूल गया और खुदकुशी कर ली फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी बा-ज़ाहिर लोगों के सामने अहले जन्नत वाले काम करता है हालाँकि वो जहन्नुमी होता है और इसी तरह कोई आदमी बा-ज़ाहिर लोगों के सामने अहले जहन्नुम वाले काम करता है लेकिन वो जन्नती होता है।

(बुख़ारी-सही-4/314-ह०-4203)

(बुख़ारी-सही-6/130-ह०-6607)

(मुस्लिम-सही-1/206-ह०-306)

-:खुदकुशी करने वाले पर जन्नत हराम:-

➡ हज़रत हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैह) से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि हज़रत जुन्दब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने हमें मस्जिद में हदीस बयान की जिसे मैं नहीं भूला उन्होंने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) से बयान किया कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक शख़्स को ज़ख़्म लग गया था उसने खुद को क़त्ल कर डाला तो अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया चूँकि मेरे बन्दे ने मुझसे सबक़त चाही लिहाज़ा मैंने उस पर जन्नत को हराम कर दिया है।

(बुख़ारी-सही-2/123-ह०-1364)

➡ हज़रत हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह) से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि मुझे हज़रत जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) ने हदीस बयान की कि आप (सल्लल्लाहु तआला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम में से पहले एक शख़्स को बहुत ज़ख़्म आये तो वो उनकी ताब न लाकर घबरा गया और उसने छुरी पकड़ी और अपना हाथ काट लिया उसका नतीज़ा ये हुआ कि खून बन्द न होने की वजह से उसकी मौत वाक़ैअ़ हो गई तो अल्लाह तआला ने उसके मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि मेरे बन्दे ने खुद मेरे पास आने में जल्दी की लिहाज़ा मैंने जन्नत को उस पर हराम कर दिया। (बुख़ारी–सही–3/606-ह०–3463)

–:मय्यत चारपाई पर आवाज़ देती है :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस मय्यत को उसकी चारपाई पर रखकर तीन क़दम चलाया जाता है तो वो ऐसी आवाज़ से बोलती है जिसे हर वो चीज़ सुनती है जिसे अल्लाह तआला सुनाना चाहता है ऐ लोगों दुनियाँ तुम्हें धोका न दे जैसा उसने मुझे दिया है और न ज़माना तुमसे खेले जैसे उसने मुझसे खेला है और मैं अपना सब कुछ जिनके लिये छोड़े जा रहा हूँ वो मेरे गुनाह नहीं उठाऐंगे और तुम लोग मेरे साथ चल रहे थे और अ़न्क़रीब मुझे छोड़ दोगे और अल्लाह तआला मेरा हिसाब लेगा।
(कंजुल उ़म्माल–8/256-ह०–42357)

–: मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का मल्कुल मौत को तमाचा मारना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मल्कुल मौत को मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के पास भेजा गया जब वो पास आये उन्होंने एक तमाचा रसीद किया (जिससे उसकी एक आँख फूट गयी) फ़रिश्ते ने अपने रब के पास जाकर अ़र्ज़ किया कि तूने मुझे एक ऐसे बन्दे के पास भेजा है जो मरना नहीं चाहता तो अल्लाह तआ़ला ने उनकी आँख दुरस्त कर दी और फ़रमाया कि उन (मूसा अ़लैहिस्सलाम) के पास दोबारा जाकर कहो कि अपना हाथ एक बैल की पीठ पर रखो फिर जितने भी बाल उनके हाथ के नीचे आयेंगे तो हर बाल के बदले उन्हें एक साल की ज़िन्दगी दी जायेगी इस पर हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि ऐ परवर दिगार फिर क्या होगा अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि फिर मरना होगा मूसा (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा तो फिर अभी मौत आ जाये।

(बुख़ारी–सही–2/107-ह०–1339)
(नसाई–सुनन–1/677-ह०–2093)

–: कमसिन बच्चों की मौत वालिदैन के लिये ज़रिया–ए–निजात का सबब :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ताजदारे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के तीन बच्चे जवानी से पहले मर जायें तो वो दोज़ख़ से (बचाव के लिये उसका) मज़बूत क़िला बन जायेंगे तो अबू ज़र ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल मेरे दो बच्चे मरे हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो ही सही फिर इब्ने काअ़ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया कि मेरा एक बच्चा मरा है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया एक ही सही।
(इब्ने माजा–सुनन–1/542-ह०–1606)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/585-ह०–1061)
(बुख़ारी–सही–2/65-ह०–1249)
(मुस्लिम–सही–6/234-ह०–6698)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/767-ह०–1416)
(इब्ने हिब्बान–4/89-ह०–2941)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिन दो मुसलमान ख़ाविन्द बीबी के तीन बच्चे जवानी से पहले मर जाये तो अल्लाह तआ़ला अपनी ज़ायद

रहमत से उन सब (वालिदैन और बच्चों) को जन्नत में दाख़िल करेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/542-ह०–1605)
(बुख़ारी–सही–2/131-ह०–1381)
(मुस्लिम–सही–6/234-ह०–6696)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने हम तमाम मुसलमानों को बहुत बड़ी खुशख़बरी अ़ता फ़रमाई है कि जिसका एक या दो या तीन बच्चे जवानी से पहले फ़ौत हो जायें और माँ बाप सब्र से काम लें तो अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से उन सब को जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा और जहन्नुम की आग से महफ़ूज़ रखेगा और एक रिवायत में है कि उन सब के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जायेंगे कि जिससे वो चाहें जन्नत में दाख़िल हो जायें।

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका कच्चा बच्चा गिर जाये तो वो कच्चा बच्चा अल्लाह अज़्ज़ा व जल से झगड़ा करेगा जब अल्लाह तआ़ला उसके वालिदैन को दोज़ख़ में डालेगा फिर हुक्म होगा ऐ कच्चे बच्चे ऐ झगड़ने वाले अपने माँ बाप को जन्नत में ले जा तो वो उन दोनों (अपने माँ–बाप) को जन्नत में ले जायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/543-ह०–1608)

यानी जो बच्चा मुद्दते हमल पूरी होने से पहले साक़ित हो जाये यानी जिसका हमल गिर जाये तो वो भी अपने वालिदैन की मग़फ़िरत का ज़रिया बनेगा सुब्हान अल्लाह कैसी-कैसी अ़ज़ीम मेहरबानी और करम है और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर कितनी नवाज़िशें करेगा।

-: मोमिन की जान अपने क़र्ज़ के साथ मुअ़ल्लक़ रहती है :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन की जान उसके क़र्ज़ के साथ मुअ़ल्लक़ रहती है यहाँ तक कि उसकी तरफ़ से क़र्ज़ अदा कर दिया जाये।
(इब्ने माजा-सुनन-2/217-ह०-2413)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि मोमिन का दिल व जान अपने क़र्ज़ में लगा रहता है जो उसके ऊपर क़र्ज़ होता है कि जब तक कि उसका क़र्ज़ कोई अदा न कर दे।
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/594-ह०-1078,1079)

अल्लाह के नज़दीक क़र्ज़ बड़ा गुनाह है

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक उसके मना कर्दा कबाइर के बाद सबसे बड़ा गुनाह ये है कि बन्दे पर जब मौत आये तो वो मक़रुज़ (क़र्ज़दार) हो और उसने क़र्ज़ अदायगी के लिये कुछ न छोड़ा हो।
(अबू दाऊद–सुनन–4/656-ह०–3342)

–:शहादत की दुआ़ से शहादत का दर्जा:–

➡ हज़रत सह्ल बिन हुनैफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने सिद्क़ दिल से शहादत माँगी तो अल्लाह तआ़ला उसको शहीद का दर्जा अ़ता फ़रमायेगा अगरचा वो अपने बिस्तर पर मरे।
(मुस्लिम–सही–5/174-ह०–4930)
(अबू दाऊद–सुनन–2/198-ह०–1520)
(नसाई–सुनन–2/361-ह०–3167)

–: शहीद की अक़साम :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि शहीद पाँच हैं यानी एक जो ताऊन यानी वबा से मरे दूसरा जो (पेट के अमराज़) दस्त हैज़ा वग़ैराह से मरे तीसरा

जो डूबकर मरे चौथा दबकर या दीवार या मकान के नीचे मरे पाचवाँ वो जो अल्लाह की राह में जिहाद में मरे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/586-ह०–1063)
(बुख़ारी–सही–1/435-ह०–653)
(बुख़ारी–सही–3/237-ह०–2829)
(नसाई–सुनन–2/361-ह०–31680)

–: सात क़िस्म की मौत शहादत :–

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़तीक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की राह में क़त्ल हो जाने के अलावा भी शहादत के सात असवाब हैं :–
(1) ताऊन से मरने वाला शहीद (2) पानी में डूबकर मरने वाला शहीद (3) जातिल जन्ब से मर जाने वाला शहीद है (जातिल जन्ब एक सख़्त क़िस्म की बीमारी है जिसमें फेफडों में पानी पड़ जाता है या पसली के अन्दर एक फोड़ा बन जाता है अक्सर इन्सान इस बीमारी से हलाक हो जाता है (4) पेट की तकलीफ़ से मर जाने वाला शहीद है (5) किसी मकान या दीवार के नीचे आ जाने वाला शहीद है (6) और वो औ़रत जो विलादत की तकलीफ़ (दर्दे ज़ेह) में वफ़ात पा जाये वो शहीद है (7) आग से जलकर मर जाने वाला शहीद है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/509-ह०–3111)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/709-ह०–1300)

-: सफ़र की मौत शहादत :-

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि सफ़र की मौत भी शहादत है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/545-ह०–1613)

पे़ट की बीमारी में फ़ौत होने वाला शहीद

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो पेट की बीमारी में मरा वो शहादत की मौत मरा वो अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगा और सुबह शाम जन्नत से उसका रिज़्क़ पहुँचाया जाता है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/545-ह०–1615)

माल की खातिर क़त्ल होने वाला शहीद

➡ हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अपने माल की खातिर क़त्ल कर दिया गया वो भी शहीद है। (इब्ने माजा–सुनन–2/279-ह०–2580)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/785-ह०–1418)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका माल कोई नाहक़ छीनने का इरादा करे और वो उससे लड़े और मारा जाये तो वो शहीद है और उसके लिये जन्नत है। (नसाई–सुनन–3/159-ह०–4094,4093)
(बुख़ारी–सही–2/702-ह०–2480)
(अबू दाऊद–सुनन–6/621-ह०–4771)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/786-ह०–1420)

➡ हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो मारा जाये अपने माल के लिये वो शहीद है और जो मारा जाये अपनी जान बचाने के लिये वो शहीद है और जो मारा जाये अपने दीन के लिये वो शहीद और जो अपने घर वालों को बचाने के लिये मारा जाये तो वो शहीद है। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/786-ह०–1421)
(अबू दाऊद–सुनन–6/621-ह०–4772)
(नसाई–सुनन–3/161-ह०–4102)

जुल्म से जो क़त्ल कर दिया जाये वो शहीद

➡ हज़रत अबू जाअ़फ़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो जुल्म से क़त्ल कर दिया जाये वो शहीद है।
(नसाई–सुनन–3/162-ह०–4103)

-: माल की हिफ़ाज़त में क़त्ल होने वाला शहीद :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अगर कोई शख़्स जुल्म से मेरा माल दौलत लेने के लिये आ जाये तो मुझे क्या करना चाहिये नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हें चाहिये कि उसे खुदा का ख़ौफ़ दिलाओ और उसे खुदा की क़सम दो अगर वो फिर भी न माने तो उससे झगड़ा करो अगर तुम हिफ़ाज़त करते हुये मारे गये तो तुम शहीद हो जाओगे और तुम जन्नत में दाख़िल होगे या फिर अपना माल दौलत बचा लोगे और अगर वो ज़ालिम मारा गया तो वो दोज़ख़ में जायेगा।

(नसाई–सुनन–3/158-ह०–4089,4090)

हिस्सा चहारम

(क़ब्र का बयान)

-: क़ब्र का बयान :-

(कुरान की रोशनी में)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

आप ज़ालिमों को उन (आअ़माल) से डरने वाला देखेंगे जो उन्होंने कमा रखे हैं और वो (अ़ज़ाब) उन पर वाक़ैअ़ हो कर रहेगा और जो लोग ईमान लाये और नेक आअ़माल करते रहे वो जन्नत के चमनों में होंगे उनके लिये उनके रब के पास वो (तमाम नेअ़मतें) होंगी जिनकी वो ख़्वाहिश करेंगे यही तो (अल्लाह का) बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।
(सू०-शूरा-42/22)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

जो (दुनियाँ में) नेकी करते रहे उन लोगों के लिये दुनियाँ में भी भलाई है और (आख़िरत में भी भलाई और बेहतरी है और) आख़िरत का घर तो ज़रुर ही बेहतर है और परहेज़ गारों का घर क्या ही खूब है। (सू०-नह्ल-16/30)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

वो आख़िरत का घर जिसे हमने ऐसे लोगों के लिये बनाया है जो न तो ज़मीन पर सरकशी करते हैं और न तकब्बुर और न फ़साद अंगेज़ी करते हैं और नेक अंजाम तो परहेज़ गारों के लिये है।
(सू०-क़सस-28/83)

-: अ़ज़ाबे क़ब्र बरहक़ है :-

इरशादे बारी तआ़ला है:-

तुम्हारे लिये (मरते वक़्त) तबाही है फिर (क़ब्र) में तबाही है फिर तुम्हारे लिये (रोज़े क़यामत) हलाकत है फिर (दोज़ख़ की) हलाकत है क्या इन्सान ये ख़्याल करता है कि उसे बेकार (बग़ैर हिसाबो किताब के) छोड़ दिया जायेगा क्या वो (अपनी इब्तिदा में) मनी का एक क़तरा न था जो (औ़रत के रहम में) टपका दिया जाता है फिर वो (रहम में जाल की तरह जमा हुआ) एक मुअ़ल्लक़ वुजूद बन जाता है फिर उसने (तमाम जिस्मानी आज़ा की इब्तिदाई शक़्ल को उस वुजूद में) पैदा फ़रमाया फिर उसने (उन्हें) दुरस्त किया फिर उसने उसी नुत्फ़े ही के ज़रिये दो क़िस्में बनायी मर्द और औ़रत तो क्या वो इस बात पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को फिर से ज़िन्दा करे।
(सू०-क़ियामाह-75/36 ता 40)

इरशादे बारी तआ़ला है:-

(ज़मीन की) उसी (मिट्टी) से हमने तुम्हें पैदा किया और उसी मैं हम तुम्हें लौटायेंगे और उसी से हम दूसरी मर्तबा (फिर) निकालेंगे।
(सू०-ताहा-20/54)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि आपने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़ज़ाबे क़ब्र के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ज़ाबे क़ब्र बरहक़ है इसके बाद मैंने रसूलुल्लाह को देखा कि आप हर नमाज़ के बाद अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगा करते थे।
(बुख़ारी–सही–2/127-ह०–1372)
(नसाई–सुनन–1/499-ह०–1311)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया था कि ऐ अल्लाह मैं पनाह माँगता हूँ तेरी क़ब्र के अ़ज़ाब से और पनाह माँगता हूँ जहन्नुम के अ़ज़ाब से और पनाह माँगता हूँ दज्जाल के फ़ित्ने से।
(नसाई–सुनन–1/667-ह०–2064)

क़ब्र से ज़्यादा हौलनाक मंजर नहीं देखा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बहीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब हज़रत उस्मान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) किसी क़ब्र पर खड़े होते तो इतना रोते कि आपकी दाढ़ी मुबारक तर हो जाती तो आपसे कहा जाता कि जन्नत और दोज़ख़ के तज़किरे पर तो आप इतना नहीं रोते–

जितना क़ब्र के ज़िक्र पर रो रहे हैं तो आप ने फ़रमाया कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) फ़रमाते हैं कि क़ब्र आख़िरत की पहली मन्ज़िल है और जो इससे निजात पा गया तो उसके लिये बाद वाली मन्ज़िलें आसान होंगी और अगर इससे निजात न मिली तो बाद वाली मन्ज़िलें बहुत मुश्किल और दुश्वार होंगी और नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने क़ब्र से बढ़कर हौलनाक व परेशान कुन मन्ज़र नहीं देखा।

(इब्ने माजा–सुनन–3/392-ह०–4267)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/179-ह०–2308)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/743-ह०–1373)
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/439-ह०–1781)

क़ब्र जन्नत के बाग़ो में से एक बाग़ या जहन्नुम के गढ़ों में से एक गढ़ा

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नुम के गढ़ों में से एक गढ़ा है।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/274-ह०–2460)
(कंज़ुल उ़म्माल–8/259-ह०–42397)

–: इब्ने आदम का पेट मिट्टी भरती :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर इब्ने आदम के पास माल व दौलत की दो वादियाँ हों तो वो और दो की तलाश करता है और इब्ने आदम का पेट सिर्फ़ मिट्टी ही भर सकती है। (बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/585-ह०–6508)

–: क़ब्र तन्हाई व ख़ाक का घर है :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) तशरीफ़ लाये तो आपने देखा कि कुछ लोग हँस रहे हैं तो आपने फ़रमाया अगर तुम लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली चीज़ मौत को याद करते तो तुम्हें इस बात की फुरसत नहीं मिलती जो मैं देख रहा हूँ नीज़ फ़रमाया लज़्ज़तों को क़तअ़ करने वाली मौत को ज़्यादा याद किया करो क्योंकि जब बन्दा क़ब्र में जाता है तो ये जबाने हाल से कहती है कि मैं गुरबत (मुसाफ़िरत, बे वतनी) का घर हूँ, मैं तन्हाई का घर हूँ, मैं ख़ाक का घर हूँ और जब मोमिन बन्दा दफ़नाया जाता है तो क़ब्र कहती है कि तेरा आना मुबारक हो तू अपने ही घर में आया है मेरी पीठ पर चलने वालो में से तुम मुझे ज़्यादा महबूब हो आज जब तुम मेरे

सुपुर्द किये गये हो और मेरे पास आये हो तो अ़नक़रीब तुम देखोगे कि मैं तुमसे क्या (अच्छा) सुलूक करती हूँ चुनाँचा उसकी क़ब्र उसके लिये हद्दे निगाह तक कुशादा हो जाती है और उसके लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है।

और जब फ़ाजिर व काफ़िर इन्सान दफ़न किया जाता है तो क़ब्र कहती है कि मेरी पीठ पर चलने वालों में से मेरे नज़दीक तू सबसे ज़्यादा बुरा है आज जब तू मेरे सुपुर्द किया गया है और तू मेरे पास आया है तो अ़नक़रीब तू देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या (बुरा) सुलूक करती हूँ ये कहकर क़ब्र सिमट जाती है यहाँ तक कि क़ब्र आपस में मिल जाती है और उसकी पसलियाँ एक दूसरे में दाख़िल हो जाती हैं और उसके लिये ऐसे सत्तर अज़हदा (बड़े साँप) उस पर मुसल्लत कर दिये जाते हैं कि अगर उनमें से एक अज़दहा ज़मीन में फूँक मारे तो रहती दुनियाँ तक उसमे कुछ न उगे और वो अज़हदे उसे डसते हैं और उसे नौंचते रहेंगे यहाँ तक कि उसे हिसाब के लिये उठाया जायेगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/274-ह०–2460)

–: अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह से पनाह–

माँगो दोज़ख़ के अ़ज़ाब से और अ़ज़ाबे क़ब्र से और ज़िन्दगी और मौत के फ़ित्नों से और फ़ित्ना-ए-दज्जाल से।
(नसाई-सुनन-3/623-ह०-5524)

-:क़ब्र में रहना भी गुनाहों का कफ़्फ़ारा:-

➡ हज़रत उम्मे मुबश्शिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगा करो क्योंकि मुर्दों को जो क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाता है उसे जानवर सुनते हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल-ह०-8/273-42512)
(इब्ने हिब्बान-सही-4/227-ह०-1325)

-: मीरास में सब हिस्सेदार होते हैं :-

मरने वाले की छोड़ी हुई मीरास में उसके तमाम वारिसों ने अपना-अपना हिस्सा लगा लिया लेकिन क्या किसी वारिस ने अपने मरने वाले के ज़िम्मे जो रोज़े और नमाज़ें बाक़ी थीं क्या उनमें भी किसी वारिस ने हिस्सा लगाया कि मैं अपने वालिद या वालिदा के ज़िम्मे जो रोज़े या नमाज़े हैं मैं उनकी तरफ़ से पढ़ूँगा या उनकी तरफ़ से रोज़ा रखूँगा।

-: मुर्दा जूतों की आवाज़ सुनता है :-

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दे को जब उसकी क़ब्र में रखा जाता है और उसके साथी जब वापस लौटते हैं तो मुर्दा उनके जूतों की आवाज़ को सुन रहा होता है।
(बुख़ारी–सही–2/128-ह०–1374)
(मुस्लिम–सही–4/2200-ह०–2870)
(अबू दाऊद–सुनन–6/605-ह०–4752)
(नसाई–सुनन–3/664ह०–-2053)
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–3/126-12293)
(मुस्लिम–सही–6/401-ह०–7216)
(कंजुल उ़म्माल–8/258-ह०–42379)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/760-ह०–1404)

-: मुर्दों के लिये अच्छा गुमान रखना और उन्हें बुरा न कहना :-

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुर्दों को बुरा न कहो क्योंकि जो कुछ उन्होंने आगे भेजा वो उसकी तरफ़ जा चुके।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–5/134-ह०–7187)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुर्दों को बुरा मत कहो वो तो पहुँच गये अपने आअ़मालों को जो कुछ उन्होंने आगे भेजा और उनकी ऐ़ब जोई न करो।
(नसाई–सुनन–1/630-ह०–1940)
(अबू दाऊद–सुनन–6/170-ह०–4899)
(बुख़ारी–सही–2/143-ह०–1393)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम्हारा कोई फ़ौत हो जाये तो उसकी खूबियाँ बयान करो और बुराइयाँ से बाज़ रहो।
(अबू दाऊद–सुनन–6/170-ह०–4900)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) के सामने एक मुर्दा शख़्स का ज़िक्र बुराई से हुआ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुर्दों का ज़िक्र बुराई से मत करो क्योंकि उन्होंने जो कुछ अपने आगे भेजा था वो उसके पास पहुँच गये हैं।
(नसाई–सुनन–1/630-ह०–1939)
(बुख़ारी–सही–6/90-ह०–6516)

(मरने वाला अपने किये हुये आअ़माल की जज़ा व सज़ा के लिये अगले जहान में पहुँच चुका है उसका बुरा तज़किरा करने से आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने मना फ़रमाया है इल्ला ये कि शरई ज़रुरत के तहत उनका बुरा तज़किरा किया जा सकता है ताकि लोग नसीहत हासिल करें)।

–: क़ब्र में मुर्दा कहता है कि मुझे नमाज़ पढ़ने दो :–

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मोमिन मय्यत को क़ब्र में दाख़िल किया जाता है तो उसे ऐसा नज़र आता जैसे सूरज डूबने के क़रीब हो फिर वो बैठता है और अपनी दोनों आँखों को मलते हुये कहता है कि मुझे छोड़ दो और नमाज़ पढ़ने दो। (इब्ने माजा–सुनन–3/394-ह०–4272)

–: ज़मीन इन्सानी जिस्म को खायेगी :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि ज़मीन रोजाना 70 बार पुकार कर कहती है कि ऐ बनी आदम जो चाहे खा ले अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की क़सम मैं तेरे गोश्त और तेरी खाल को खाऊँगी।
(कंजुल उ़म्माल–8/236-ह०–42107)

-: क़ब्र कीड़ों का घर या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ :-

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़ब्र रोज़ पुकार कर कहती है कि मैं बे वतनी का घर हूँ मैं तन्हाई का घर हूँ मैं कीड़ों का घर हूँ जब मोमिन बन्दा क़ब्र में दफ़न किया जाता है तो क़ब्र उससे मुख़ातिब होकर कहती है कि खुश आमदीद मेरी पुश्त पर जितने लोग चलते थे तू मुझे उनमें से प्यारा है आज जब तू मेरे पास आ गया है तो तू अ़नक़रीब अपने साथ मेरा सुलूक़ देख लेगा तो उस मोमिन बन्दे की क़ब्र हद्दे नज़र तक वसीअ़ हो जाती है और जन्नत की तरफ़ से एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है।

और जब काफ़िर बन्दा क़ब्र में दफ़न किया जाता है तो क़ब्र कहती है कि मेरी पुश्त पर चलने वालो में से तू मुझे नापसंदीदा है आज जब तू मेरे पास आया है तो तू अपने साथ मेरा सुलूक़ देखेगा फिर उस पर क़ब्र तंग होना शुरू हो जाती है यहाँ तक कि आपस में मिल जाती है और उसकी पसलियाँ आपस में एक दूसरे में घुस जाती हैं फिर उस पर सत्तर साँप मुसल्लत किये जाते है अगर उनमें से एक साँप अगर दुनियाँ में फूँक मार दे तो रहती दुनियाँ तक कोई चीज़ न उगे फिर वो साँप उस मय्यत को डसते और नौंचते हैं सो क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नुम के गढ़ों में से एक गढ़ा। (कंजुल उ़म्माल-8/237-ह०-42109)

-: क़ब्र रोज़ाना सात मर्तबा कहती है :-

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपनी क़ब्रों के लिये तैयारी करो क्योंकि क़ब्र रोज़ाना सात मर्तबा कहती है कि ऐ कमज़ोर इन्सान अपनी ज़िन्दगी में अपने आप पर रहम कर इससे पहले कि तू मेरे पास आ जाये फिर मैं तुझ पर शफ़क़त करूँ और तुझे मेरी तरफ़ से मसर्रत मिले।
(कंजुल उ़म्माल–8/239-ह०–42144)

-: क़ब्रिस्तान की आवाज़ :-

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मोमिन मरता है तो क़ब्रिस्तान मुज़य्यन हो जाता है और क़ब्रिस्तान का हर गोशा ये तमन्ना करता है कि ये मुझमें दफ़न हो और जब काफ़िर मरता है तो क़ब्रिस्तान के हर गोशे में तारीकी छा जाती है और क़ब्रिस्तान का हर गोशा उस मुर्दे से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगता है कि ये मुझमें दफ़न न हो।
(कंजुल उ़म्माल–8/258-ह०–42374)

-:क़ब्र कहती तुझे किसने धोके में रखा:-

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मय्यत को जब क़ब्र में रखा जाता

है तो क़ब्र कहती है कि ऐ इब्ने आदम तेरा बुरा हो मेरे मुताअ़ल्लिक़ तुझे किसने धोके में रखा क्या तुझे पता नहीं था कि मैं तारीकी व तन्हाई और कीड़ो मकोड़ो का घर हूँ पस अगर वो नेक होता है तो एक जवाब देने वाला कहता है ये नेक है और ये नेकी का हुक्म देता था और बुराई से रोकता था तो क़ब्र कहती है अगर ऐसा है तो मैं इसके लिये तरो ताज़गी में बदल जाती हूँ और इसकी रुह ईल्लीईन की तरफ़ परवाज़ कर जायेगी।
(कंजुल उ़म्माल–8/275-ह०–42546)

अ़ज़ाबे क़ब्र के बारे में आयत का नुजूल

➡ हज़रत बरा आ़ज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया ''युसब्बितुल्लाहुल लज़ीना आमनू........'' क़ब्र के अ़ज़ाब में उतरी है मुर्दे से पूछा जायेगा कि तेरा रब कौन है, और तेरा पैग़म्बर कौन है वो कहेगा मेरा रब अल्लाह है और मेरे पैग़म्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) हैं इस आयते करीमा से यही मुराद है कि ''अल्लाह तआ़ला साबित रखेगा ईमान वालो को ठीक बात पर दुनियाँ में भी और आखिरत में भी (यानी वो बराबर जवाब देंगे) (सू०–इब्राहीम–27) अल्लाह तआ़ला इनके दिलों को मज़बूत कर देगा और काफ़िर घबरा जायेंगे ग़लत सलत कहेंगे तो उनको अ़ज़ाब होगा (नसाई–सुनन–1/666-ह०–2061)

-: क़ब्र में सवाल जवाब :-

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब बन्दे को उसकी क़ब्र मे रख दिया जाता है और उसके साथी दफ़्न से फ़ारिग़ होकर वापस होते हैं तो वो उनके जूतों की आवाज़ सुनता है फिर उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं और उसे बिठाकर पूछते हैं कि तू किसकी इ़बादत करता था अगर अल्लाह तआ़ला उसे तौफ़ीक़ दे तो वो कहता है कि मैं अल्लाह तआ़ला की इबादत किया करता था फिर वो कहता है कि तू इस मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) के मुताअ़ल्लिक़ क्या एतक़ाद रखता था अगर वो जवाब दे कि मैं गवाही देता हूँ कि वो अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं तो उससे कहा जाता है कि तू अपने दोज़ख़ी मक़ाम को देख इसके ऐवज़ अल्लाह तआ़ला ने तुझे जन्नत में ठिकाना दिया है तो वो कहता कि मुझे छोड़ दो ताकि मै जाऊँ और अपने घर वालों को ख़ुशख़बरी दे आऊँ तो उससे कहा जाता है कि तुम आराम करो फिर नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो दोनों मक़ाम को देखता है लेकिन काफ़िर व मुनाफ़िक़ का जवाब ये होता है कि मैं कुछ नहीं जानता जो दूसरे लोग कहते हैं मैं वही कहे देता हूँ फिर उससे कहा जाता है तूने अ़क़्ल से काम न लिया फिर उसके दोनों कानों के-

दरमियान लोहे के हथोड़े से एक ज़र्ब लगाई जाती है जिससे वो चीख़ उठता है और उसकी चीख़ पुकार जिन्न व इन्सान के अलावा उसके आस पास की हर शैः सुनती है।
(बुख़ारी–सही–2/106-ह०–1338)
(बुख़ारी–सही–2/128-ह०–1374)
(अबू दाऊद–सुनन–3/581-ह०–3231)
(नसाई–सुनन–3/664-ह०–2054)
(मुस्लिम–सही–6/401ह०–-7216)
(अबू दाऊद–सुनन–6/604-ह०–4751)

–: सवाल जवाब के बाद जन्नतः–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई बन्दा क़ब्र में जाता है तो जो शख़्स नेक होता है वो अपनी क़ब्र में बिठाया जाता है तो उसको न ख़ौफ़ होता है और न उसका दिल परेशान होता है फिर उससे पूछा जाता है कि तू किस दीन पर था तो वो जवाब देता है कि दीन इस्लाम पर फिर उससे पूछा जाता है इस शख़्स के बाब में तू क्या कहता है उस वक़्त मोमिन को जमाले नबवी नज़र आता है या आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का नाम लेकर पूछा जाता है तो वो कहता है कि ये मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं जो अल्लाह के पास से हमारे पास दलील और खुली निशनियाँ लेकर आये हमने

इनकी तस्दीक़ की फिर उसके लिये एक तरफ़ से दोज़ख़ की खिड़की खोली जाती है तो वो आग देखता है फिर उससे कहा जाता है कि देख अल्लाह तआ़ला ने तुझे इससे बचाया है फिर एक जन्नत की तरफ़ से खिड़की खोली जाती है और वो वहाँ की ताज़गी और लताफ़त (ताज़गी, पाकीज़गी) को देखता है फिर उससे कहा जाता है कि देख यही तेरा ठिकाना है।

और जब बुरा आदमी क़ब्र में बिठाया जाता है तो उसका दिल परेशान और घबराया हुया होता है और उससे पूछा जाता है कि तू किस दीन पर था तो वो कहता है कि मैं नहीं जानता फिर पूछा जाता है कि इस शख़्स के बारे में तू क्या कहता है तो वो जवाब देता है कि मैंने लोगों को कुछ कहते हुये सुना था मैंने भी वैसा ही कहा फिर जन्नत की तरफ़ से एक खिड़की खोली जाती है और वो उसकी ताज़गी और बहार को देखता है फिर उससे कहा जाता है कि देख अल्लाह तआ़ला ने तुझे इससे महरुम किया है फिर एक दोज़ख़ की तरफ़ से खिड़की खोली जाती तो वो आग को देखता है जो तले ऊपर हो रही है और एक-दूसरे को तोड़ रही है फिर उससे कहा जाता है कि ये तेरा ठिकाना है और तू शक में था और उसी पर मरा और उसी पर उठेगा।

(इब्ने माजा-सुनन-3/392-ह०-4268)

–: मुर्दों को सुबह शाम ठिकाना दिखाया जाता है :–

इरशादे बारी तआ़ला है–
आतिशे दोज़ख़ के सामने ये लोग सुबह व शाम पेश किये जाते हैं।
(सू०–मोमिन–40/46)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम में से कोई मर जाता है तो सुबह शाम उसे उसका ठिकाना दिखाया जाता है अगर वो जन्नती है तो जन्नत दिखाई जाती है और अगर वो दोज़ख़ी है तो दोज़ख़ दिखाई जाती है फिर उससे कहा जाता है कि यही तेरा मक़ाम है यहाँ तक कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला तुझे उठाये।
(बुख़ारी–सही–2/130-ह०–1379)
(नसाई–सुनन–1/670-ह०–2073)
(इब्ने माजा–सुनन–3/394-ह०–4270)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/591-ह०–1072)
(बुख़ारी–सही–3/470-ह०–3240)
(बुख़ारी–सही–6/90-ह०–6515)
(मुस्लिम–सही–6/399-ह०–7211)
(कंजुल उ़म्माल–8/275-ह०–42548)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/230-ह०–3130)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई भी जन्नत में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं होगा जब तक कि दोज़ख़ में उसे उसकी जगह दिखा न दी जाये अगर वो बुराई करता था तो वो ज़्यादा शुक्र अदा करे और कोई भी शख़्स उस वक़्त तक दोज़ख़ में दाख़िल नहीं होगा जब तक जन्नत में उसे उसकी जगह दिखा न दी जाये कि अगर वो अच्छे अ़मल वाला होता तो ये उसका मक़ाम होता ताकि उसकी हसरत व नदामत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो।
(बुख़ारी–सही–6/113-ह०–6569)

–: क़ब्र में फ़ित्ने का ज़िक्र :–

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि–अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि कि एक दफ़ा ताजदारे कायनात हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) खुत्बे के लिये खड़े हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने क़ब्र के फ़ित्ने का ज़िक्र किया जिसमें इन्सान मुब्तिला होगा तो मुसलमान चीख़ें मारकर रोने लगे।
(बुख़ारी–सही–2/127-ह०–1373)

–: मोमिन को क़ब्र में पहला तोहफ़ा :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला

अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि (सालेह मोमिन के दफ़्न के बाद) मय्यत का पहला इकराम ये होता है कि उसके रुख़सत करने वालों की मग़फिरत कर दी जाती है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/22-ह०–9256)

➡ हजरत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि नेक मोमिन को उसकी क़ब्र में पहला तोहफ़ा क्या दिया जाता है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर उस शख़्स को बख़्श दिया जाता है जो जनाज़े के पीछे–पीछे जाकर और दफ़नाकर वापस लौटता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/22-ह०–9557)

क़ब्र में सवाल व जवाब और भारी गुर्ज़ की सख़्त मार के बाइस रेज़ा रेज़ा होना

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से क़ब्र के अ़ज़ाब से अमान माँगो और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने ये कलिमात तीन बार दोहराये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जब लोग मय्यत को दफ़्न करके वापस जाते हैं तो मय्यत

उनके क़दमों की आहट सुनती है जबकि उससे ये पूछा जा रहा होता है कि ऐ फुलां मन रब्बुका (तेरा रब कौन है) वमा दीनुका (तेरा दीन क्या है) व मन नबीइयुका (और तेरा नबी कौन है) और वो जवाब में कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) हैं और एक रिवायत में है कि मय्यत से पूछा जाता कि ये शख़्स कौन है जो तुममें मबऊस किये गये तो वो कहता है कि वो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) हैं फिर वो फ़रिश्ते कहते हैं तुझे कैसे इ़ल्म हुआ तो वो कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी और उस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की फिर आसमान से मुनादी करने वाला ऐ़लान करता है तहक़ीक़ मेरे बन्दे ने सच कहा है इसे जन्नत का बिस्तर बिछा दो और इसको जन्नत का लिबास पहना दो और इसकी तरफ़ जन्नत से दरवाज़ा खोल दो और जन्नत की तरफ़ से वहाँ की हवायें, राहतें और खुश्बुऐं आने लगती हैं और उसकी क़ब्र हद्दे नज़र तक वसीअ़ कर दी जाती है।

फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने काफ़िर व मुनाफ़िक़ का ज़िक्र किया कि क़ब्र में उसकी रुह उसके जिस्म में लौटाई जाती है और फ़रिश्ते उसके पास आते हैं और बिठाते हैं और उससे पूँछते हैं कि तेरा रब कौन है तो वो कहता

है हा-हा मुझे ख़बर नहीं फिर वो फ़रिश्ते पूछते हैं तेरा दीन क्या है तो वो कहता है हा-हा मुझे ख़बर नहीं फिर उससे पूँछते हैं कि ये शख़्स कौन है जो तुममें मबऊ़स किये गये तो वो कहता है हा-हा मुझे ख़बर नहीं तो मुनादी आसमान से निदा देता है कि इसने झूठ कहा इसे आग का बिस्तर बिछा दो और आग का लिबास पहना दो और इसके लिये दोज़ख़ की तरफ़ से दरवाज़ा खोल दो फिर दोज़ख़ की तरफ़ से तपिश और सख़्त गरम हवा उसकी तरफ़ आने लगती है और उसकी क़ब्र को तंग कर दिया जाता है हत्ता कि उसकी पसलियाँ एक दूसरे में घुस जाती हैं फिर उस पर एक अंधा गूँगा फ़रिश्ता मुक़र्रर कर दिया जाता है जिसके पास भारी गुर्ज़ होता है अगर उसे पहाड़ पर मारा जाये तो पहाड़ चकनाचूर हो जाये फिर उसे उस हथौड़े से मारा जाता है जिसकी आवाज़ जिन्नो और इन्सानों के अलावा मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान सारी मख़्लूक़ सुनती है और फिर वो रेज़ा रेज़ा हो जाता है और फिर उसमें दोबारा रुह लौटाई जाती है।

-: क़ब्र में आग का बिस्तर :-

इरशादे बारी तआ़ला है-

और उनके लिये दोज़ख़ की आग का बिछौना होगा और उनके ऊपर (उसी का) ओढ़ना होगा और हम ज़ालिमों को इसी तरह सज़ा देते हैं।
(आअ़राफ़-7/41)

-: क़ब्र का अ़ज़ाब जानवर सुनते हैं :-

➡ उम्मे मुबश्शिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह तअ़ाला की पनाह माँगा करो क्योंकि मुर्दों को जो क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाता है उसे जानवर सुनते हैं। (कंज़ुल उ़म्माल–8/273-ह०–42512)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/227-ह०–1325)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुर्दे को क़ब्र में जो अ़ज़ाब दिया जाता है तो उसको तमाम जानवर सुनते हैं। (नसाई–सुनन–1/669-ह०–2070)
(इब्ने अबी शैबा अल मुसन्निफ़–3/758-ह०–12159)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अहले कुबूर को जो अ़ज़ाब होता है तो तमाम जानवर उसे सुनते हैं और हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने देखा कि आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) हर नमाज़ के बाद अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह तअ़ाला की पनाह माँगा करते थे।
(बुख़ारी–सही–5/758-ह०–6366)

–: क़ब्र में 99 अज़दहे (बड़े साँप) :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि काफ़िर की क़ब्र में 99 अज़दहे अ़ज़ाब की सूरत में मुसल्लत किये जाते हैं जो उसे क़यामत तक नौंचते और डसते रहेंगे अगर उनमें से एक भी साँप ज़मीन पर किसी जगह फूँक मार दे तो रहती दुनियाँ तक इसमें कभी सब्ज़ा न उगे।
(कंजुल उ़म्माल–8/275-ह०–42550)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/224-ह०–3121)

–: क़ब्र मोमिन के लिये सब्ज़ बाग़ और काफ़िर के लिये अ़ज़ाब :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक मोमिन अपनी क़ब्र में ऐसा होता है जैसा कि वो एक सर सब्ज़ बाग़ में है और उसके लिये उसकी क़ब्र 70 हाथ कुशादा और चौदहवीं के चाँद की तरह रोशन कर दी जाती है क्या तुम जानते हो कि इस आयत का शाने नुजूल क्या है ''पस बेशक उसके लिये तंग ज़िन्दगी है'' (सू०–ताहा–20/124) फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने पूछा क्या–

तुम जानते हो कि तंग ज़िन्दगी क्या है तो सहाबा-किराम ने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसका रसूल ही बेहतर जानते हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि इससे मुराद काफ़िर को क़ब्र में दिये जाने वाला अ़ज़ाब है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि क़ब्र वाले पर 99 साँप मुसल्लत कर दिये जाते हैं और हर साँप के सात सिर हैं और वो क़यामत तक उसको काटते और नौंचते रहेंगे।
(अत्तरग़ीब-वत्तरहीब-2/440-ह०-1782)
(इब्ने हिब्बान-सही-4/224-ह०-3122)

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया कि एक दिन गुरुबे आफ़ताब के बाद नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) बाहर तशरीफ़ लाये तो आपने एक हौलनाक आवाज़ सुनी उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि यहूद को उनकी क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जा रहा है।
(बुख़ारी-सही-2/128-ह०-1375)
(नसाई-सुनन-1/667-ह०-2063)

-: क़ब्र का अ़ज़ाब अगर इन्सान सुन ले तो मुर्दों को दफ़न करना छोड़ दे :-

➡ हजरत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने क़ब्र से एक आवाज़ सुनी तो पूछा ये शख़्स कब मरा है तो लोगों ने कहा कि ये जाहलियत के ज़माने में मरा था तो ये सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) खुश हुये और फ़रमाया कि ये मुसलमान नहीं है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुम घबरा न जाते और अगर मुझे ये अंदेशा न होता कि तुम मुर्दों को दफ़्न करना छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करता कि क़ब्र का अ़ज़ाब तुमको भी सुना दे जो मैं सुन रहा हूँ।

(नसाई–सुनन–1/667-ह०–2062)
(कंजुल उ़म्माल–8/274-ह०–42513)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/439-ह०–1780)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/227-ह०–3126)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) का कुछ क़ब्रों के पास से गुज़र हुआ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई जानता है कि ये क़ब्रें किन लोगों की हैं तो एक शख़्स बोला कि मैं जानता हूँ कि ये क़ब्रें किन लोगों की हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये कब मरे थे तो वो बोला कि ये शिर्क के ज़माने में मरे थे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन क़ब्र वालों को अ़ज़ाब

हो रहा है और मुझे ये ख़्याल न होता कि तुम लोग अपने मुर्दों को दफ़न करना छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करता कि वो तुम्हें भी क़ब्र का अ़ज़ाब सुना दे जिसे मैं सुन रहा हूँ फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया तुम लोग दोज़ख़ के अ़ज़ाब से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगो और क़ब्र के अ़ज़ाब से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगो और हर क़िस्म के ज़ाहिरी व बातिनी फ़ित्नों से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगो और दज्जाल के फ़ित्नों से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगो।
(मुस्लिम–सही–6/399-ह०–7213)

पेशाब के छींटों से न बचने पर अ़ज़ाब

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने (क़ब्र के अन्दर होने वाले अ़ज़ाब व हालात से बा ख़बर होकर) फ़रमाया कि इन्हें अ़ज़ाब हो रहा है और वो किसी कबीरा गुनाह के बाइस नहीं बल्कि इनमें एक तो पेशाब के वक़्त परहेज़ नहीं किया करता था (या पेशाब से बचने में एहतियात नहीं करता था) और दूसरा चुगलियाँ बहुत खाता था फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक सब्ज़ टहनी ली और उसके

दो हिस्से करके हर क़ब्र पर एक हिस्सा गाढ़ दिया तो लोग अ़र्ज़ गुज़ार हुये या रसुलल्लाह आपने ऐसा क्यों किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तक ये टहनियाँ खुश्क न होंगी तब तक इनके अ़ज़ाब में कमी होती रहेगी। (अबू दाऊद–सुनन–1/105-ह०–20)
(मुस्लिम–सही–1/405-677) (नसाई–सुनन–1/53-31)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/114-70)(बुख़ारी–सही–2/121-1361)

–: ज़मीन और क़ब्र की निदा :–

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि हर दिन ज़मीन निदा देती है कि ऐ इब्ने आदम तू मेरी पीठ पर भागता है आख़िर तेरा ठिकाना मेरा पेट होगा और मेरी पीठ पर अल्लाह की नाफ़रमानी करता है आख़िर मेरे पेट में तुझे अ़ज़ाब होगा और मेरी पीठ पर तू हंसता है मगर मेरे पेट में रोता हुआ आयेगा और मेरी पुश्त पर हराम खाता है मगर मेरे पेट में तेरा गोश्त कीड़ों मकोड़ों की गिज़ा होगी और तू मेरी पुश्त पर खुश है मगर मेरे पेट में तू ग़म करेगा और मेरे पेट में तू गलेगा और मेरी पुश्त पर तू इतरा कर चलता है मगर मेरे पेट में आ़जिज़ बन कर आयेगा और आज तू मेरे ऊपर रोशनी में चलता हे मगर तू मेरे पेट में अंधेरे में रहेगा और आज तू अपने प्यारों के साथ है आख़िरकार तू मेरे अन्दर तन्हा रहेगा। (कुर्रातुल अबसार–67)

-: मय्यत की रुह क़ब्र की तरफ़ आने का बयान :-

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मौत के तीन दिन बाद इब्ने आदम की रूह अ़र्ज़ करती है कि ऐ परवर दिगार मुझे इज़्न बख़्श ताकि मैं जाऊँ और उस मुर्दा जिस्म को देखूँ जिसके अन्दर मैं थी तो अल्लाह तआ़ला उसे इजाज़त अ़ता फ़रमाता है पस वो अपने मुर्दा जिस्म की तरफ़ आती है और उसे दूर से देखती है उस वक़्त मय्यत के जिस्म व नाक और मुँह से पानी जारी हो रहा होता है पस वो बहुत देर तक रोती है फिर कहती है कि ऐ मेरे प्यारे जिस्म क्या तू ज़िन्दगी के उन दिनों को याद करता है और ये तो बला और बहशत व ग़म व नदामत और तकलीफ़ो परेशानी की जगह है।

फिर जब पाँच दिन गुज़रते हैं तो रुह फिर अ़र्ज़ करती है ऐ मेरे रब मुझे इज़्न बख़्श ताकि मैं अपने मुर्दा जिस्म को देखूँ तो अल्लाह तआ़ला उसे इजाज़त देता है पस वो अपने मुर्दा जिस्म की तरफ़ आती है और उसे दूर से देखती है और तहक़ीक़ उसके जिस्म और नाक व मुँह और कानों से खून व जर्द पानी और पीप बह रही होती है तो फिर रुह बहुत देर तक रोती है फिर कहती है कि ऐ मेरे प्यारे बदन क्या तुझे ज़िन्दगी के दिन याद आते हैं और ये तो ग़म व अलम और परेशानी व कीडों मकोड़ों और साँप और बिच्छुओं का घर है और-

कीड़े तेरा गोस्त खाते हैं और तेरी खाल को भी जिस्म से जुदा कर दिया है और तेरे आज़ा को मुताफ़र्रिक् कर दिया है फिर मय्यत की मौत के सात दिन बाद फिर रुह अ़र्ज़ करती है कि ऐ मेरे परवर दिगार मुझे इज़्न बख़्श ताकि मैं अपने जिस्म को देखूँ तो अल्लाह तआ़ला उसे इज़्न देता है पस वो अपनी क़ब्र की तरफ़ आती है और उसे दूर से देखती है और तहक़ीक़ उसके जिस्म में कीड़े पड़ चुके होते हैं पस फिर वो रुह बहुत रोती है और कहती है कि ऐ मेरे प्यारे जिस्म क्या तुझे ज़िन्दगी के दिन याद आते हैं कहाँ है तेरे घर वाले और कहाँ है तेरे अ़ज़ीज़ व अ़क़ारिब और तेरे दोस्त कहाँ हैं और तेरे हम साये जो तेरे हम सायगी में खुश थे। (कुर्रातुल अबसार-119)

रुह का घर वालों की ख़ैरगीरी करना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब मोमिन मरता है तो उसकी रुह उसके घर के गिर्द एक माह तक घूमती है और अपने घर वालों को देखती है कि वो उसका छोड़ा हुआ माल किस तरह आपस में बाँटते हैं और मय्यत का क़र्ज़ कैसे चुकाते हैं पस जब माह गुज़र जाता है तो वो अपनी क़ब्र के गिर्द एक साल तक घूमती है और देखती है कि उसके लिये कौन दुआ़ कर रहा है और कौन ग़म कर रहा है फिर जब साल गुज़रता है तो वो रुह ऊपर चली-

जाती है जहाँ दूसरे मोमिन की रुहें जमा रहती हैं उस दिन तक जिसमें सूर फूँका जायेगा।

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ईदैन, आशूरा और शअ़बान की रात और जुमअ़ा के रोज़ और रजब की पहली जुमेअ़रात को रुहें अपने घरों के दरवाज़ों पर खड़ी होकर कहती हैं कि इस रात में हम पर रहम करो और सद्क़ा या मुफ़लिस व मोहताज को खाना देकर हमें ईसाले सवाब करो और अगर तुम इसकी ताक़त नहीं रखते तो इस शबे मुबारक में दो रकअ़त नमाज़ (ईसाले सवाब) से हमें याद करो क्या कोई है जो हमें याद करे क्या कोई है जो हम पर रहम करे हमारे आअ़माल नामे लपेटे जा चुके हैं और तुम्हारे आअ़माल नामे अभी खुले हुये हैं और अब हम तुम्हारे मोहताज हैं इसलिये दुअ़ा के वक़्त हमें न भूलो और जब फ़ौत शुदा लोग अपने घर वालों से सद्क़ा या दुअ़ा लेते हैं तो वो ख़ुशी व मसर्रत से वापस लौटते हैं और अगर कुछ न पायें तो महरुम और ग़म ज़दा और ना उ़म्मीद होकर वापस लौटते हैं। (कुर्रातुल अबसार–123)

–: रुहें कहाँ रहती हैं :–

➡ रुहें क़ब्ज़ होने के बाद मोमिन की अरवाह (रुहें) जन्नत में सब्ज़ परिन्दों के जिस्मों में रहती है और कुफ़्फ़ार की रुहें जहन्नुम के तबक़ा सिज्जीन में रहती है और ये भी कहा गया है कि दोज़ख़ में

सियाह परिन्दों के जिस्मों में होती हैं और ये भी कहा गया है कि जब मोमिन की रूहें क़ब्ज़ हो जाती हैं तो उन्हें रहमत के फ़रिश्ते इ़ज़्ज़त व ऐजाज़ के साथ आसमान पर ले जाते हैं फिर अल्लाह तआ़ला के हुक्म से एक निदा करने वाला कहता है कि इसे इल्लीईन में लिख दो फिर इसको दुनियाँ में वापस कर दो फिर मोमिन की रुह को उसके बदन में लौटा दिया जाता है और उसके लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और वो जन्नत में अपना मक़ाम देखता है।

और जब कुफ़्फ़ार की रुहें जब निकाली जाती है तो अ़ज़ाब के फ़रिश्ते उसे आसमान की तरफ़ ले जाते हैं तो एक निदा देने वाला कहता है कि इसे इसके बदन में ले जाओ और इसकी क़ब्र तंग कर दो और इसके लिये जहन्नुम की तरफ़ का दरवाज़ा खोल दो पस वो उसमें अपना मक़ाम देखता है और जो रुहें नेअ़मतों व राहतों की अह्ल होती हैं उन्हें नेअ़मतें व राहतें दी जाती हैं और जो रुहें अ़ज़ाब की अह्ल होती हैं तो उन्हें अ़ज़ाब दिया जाता है और अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की रुहें जन्नत और लहद में अपने अपने जिस्मों में होती हैं और अपने रब को सज्दा करने वाली होती हैं और शुहदा की रुहें जन्नत में सब्ज़ परिन्दों में जहाँ चाहें वहाँ जन्नत में उड़ती फिरती हैं और छोटे बच्चों की रुहें जन्नत के गिर्द में घूमती हैं और उन मोमिनीन की रुहें जिन पर क़र्ज़ या हक़ तल्फ़ी के मुतालबे हैं उनकी रुहें फ़ज़ा में मुअ़ल्लक़

रहती हैं न वो जन्नत में पहुँच सकती हैं और न आसमान पर जा सकती हैं जब तक कि वो क़र्ज़े और हुक़ूक़ अदा न करे और फ़ुस्साक़ मुसलमानों की रुहें जो गुनाहों पर ही बिला तौबा मरे पस उनको क़ब्रों में उनके बदन के साथ अ़ज़ाब दिया जाता है और काफ़िरों व मुनाफ़िक़ों की रुहें वो राहे जहन्नुम के तबक़ा सिज्जीन में रहती हैं।
(कुर्रातुल अबसार–129 ता 133)

–: आअ़माले सालिहा अ़ज़ाबे क़ब्र से हिफ़ाज़त का ज़रिया होंगें :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक मय्यत जूतों की आवाज़ सुनता है जब लोग उसको दफ़नाकर वापस पलटते हैं फिर अगर वो नेक मोमिन हो तो नमाज़ उसके सर के पास होती है और ज़कात उसके दाहिनी जानिब और रोज़े उसके बाँयी जानिब और उसके नेक आअ़माल, सद्क़ा, सिला रहमी और लोगों के साथ एहसान उसके पाँव के पास होते हैं फिर अगर अ़ज़ाब सर की तरफ़ से आता है तो नमाज़ कहती है कि मेरी तरफ़ से दाख़िल होने का रास्ता नहीं है और अगर अ़ज़ाब बाँयी जानिब से आता तो ज़कात उसे रोक लेती है और कहती है कि मेरी तरफ़ से आने का कोई रास्ता

नहीं है फिर अगर अ़ज़ाब बाँयी जानिब से आता है तो रोज़ा कहता है कि मेरी जानिब से दाख़िल होने का कोई रास्ता नहीं है फिर अगर अ़ज़ाब उसके पैरों की तरफ़ से आता है तो उसके अच्छे आअ़माल कहते हैं कि हमारी तरफ़ से दाख़िल होने का कोई रास्ता नहीं है।

फिर फ़रिश्ते उस मय्यत से कहते है कि बैठ जा तो वो बैठ जाता है तो उसे उस वक़्त ऐसा लगता है जैसे सूरज गुरुब होने के क़रीब हो फिर फ़रिश्ते उसको कहते हैं कि जो हम तुझसे सवाल करें तुम उसका जवाब दो तो वो कहता है कि मुझे छोड़ दो ताकि मैं नमाज़ अदा कर लूँ फिर उसको कहा जाता है कि बेशक तू ये अदा कर चुका है फिर फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि तुम इस शख़्स को देखते हो जो तुम्हारी तरफ़ मबऊस किये गये हैं इनके मुताअ़ल्लिक़ तू क्या कहता है और तू इनके बारे में क्या गवाही देता है तो वो कहेगा कि ये अल्लाह के रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) हैं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं जो हमारे पास अल्लाह तअ़ाला के वाज़ेह दलाइल लेकर आये थे तो हमने उनकी तस्दीक़ की फिर फ़रिश्ते उसको कहेंगे कि इसी पर तू ज़िन्दा था और इसी पर तुझे मौत आयी और इसी पर तू दोबारा उठाया जायेगा फिर उसकी क़ब्र हद्दे निगाह लम्बी कर दी जायेगी।

और उसकी क़ब्र में उसके लिये रोशनी कर दी जायेगी फिर उसकी तरफ़ जन्नत से एक दरवाज़ा खोल दिया जायेगा और उसको कहा जायेगा कि देख जिसका अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तुझसे वायदा फ़रमाया था वो तुझे अ़ता किया गया तो उसकी खुशी में मज़ीद इज़ाफा हो जायेगा फिर एक दरवाज़ा जहन्नुम की तरफ़ खोला जायेगा और उससे कहा जायेगा कि तेरा ठिकाना ये होता अगर तू नाफ़रमानी करता फिर उसके लिये खुश्बूदार हवा चलेगी और उससे कहा जायेगा कि दुल्हन की तरह आराम से सो जा कि उसको नहीं उठाता मगर ये कि उसके घर में महबूब शख़्स यानी ख़ाविन्द यहाँ तक कि तुझे अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उठाये।

और अगर वो काफ़िर होगा तो अ़ज़ाब उसके सर की जानिब से लाया जायेगा लेकिन वो कोई रुकावट न पायेगा और न ही बाँयी व दाँयी और पैरों की तरफ़ से भी कोई रुकावट न पायेगा फिर उसको कहा जायेगा कि ये शख़्स जो तुम में मबऊ़स किये गये हैं इनके बारे में तू क्या कहता है और इनके मुताअ़ल्लिक़ तू क्या गवाही देता है तो वो कहेगा कौन सा शख़्स मैं नहीं जानता मुझे नहीं मालूम फिर उसको कहा जायेगा तू इसी पर ज़िन्दा था इसी पर तुझे मौत आयी और इसी पर तू उठाया जायेगा फिर उसके लिये दोज़ख़ की जानिब से एक दरवाज़ा खोल दिया जायेगा और उसको

कहा जायेगा कि ये तेरा ठिकाना है जिसका अल्लाह तआ़ला ने तुझसे वायदा फ़रमाया था फिर उसकी हलाकत व हसरत में इज़ाफ़ा होगा फिर उसकी तरफ़ जन्नत की जानिब से एक दरवाज़ा खोला जायेगा और उससे कहा जायेगा अगर तू नेक आअ़माल और अल्लाह की फ़रमाबरदारी करता तो तेरा ठिकाना ये होता तो उसकी हसरत व हलाकत में मज़ीद इज़ाफ़ा होगा फिर उसकी क़ब्र को तंग कर दिया जायेगा यहाँ तक कि उसकी पसलियाँ एक दूसरे में मिल जायेंगी और यही उसकी तंग जिन्दगी होगी।

(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/772-ह०–12188)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/214-ह०–3113)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/441-ह०–1784)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/758-ह०–1403)

–: क़ब्र में रीढ़ की हड्डी नहीं गलती :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़ब्र में इन्सान की हर चीज़ गल जाती है और उसका वुजूद मिट्टी खा जाती है मगर एक हड्डी जो रीढ़ की हड्डी का एक जुज़ है वो नहीं गलती क्योंकि उसे मिट्टी खा नहीं सकती और ये राई के दाने के बराबर है और इसी हड्डी से उसकी दोबारा पैदाइश और उसका जिस्म मुरक्कब होगा।
(मुस्लिम–सही–6/467-ह०–7415)
(अबू दाऊद–सुनन–6/598-ह०–4743)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/236-ह०–3138)
(इब्ने माजा–सुनन–3/391-ह०–4266)

–: रोज़े जुमअ़ा फ़ौत होने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहता है :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो रोज़े जुमअ़ा या शबे जुमअ़ा मरे तो अल्लाह तअ़ाला उसको अ़ज़ाबे क़ब्र व इम्तिहान से महफ़ूज़ रखता है (तिर्मिज़ी–सुनन–1/592-ह०–1074)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–2/444-ह०–1785)

–: रमज़ान में मरने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहता है :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसकी मौत रमज़ान में हुई वो जन्नत में जायेगा और जिसकी मौत अ़रफा में हुई वो जन्नत में जायेगा और जिसकी मौत सद्क़ा करते हुई वो जन्नत में जायेगा।
(कंजुल उ़म्माल–8/289-ह०–42701)

–: पेट के अमराज़ से मरने वाला क़ब्र के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ :–

➡ हज़रत अबू इस्हाक़ से रिवायत है कि उन्होंने बयान किया कि सुलेमान बिन सुरद ने खालिद बिन उरफुता से सुना कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसको मारा पेट ने यानी हैज़ा या बदहज़्मी या किसी और पेट की बीमारी ने तो उस पर क़ब्र में अ़ज़ाब न होगा तो उन्होंने कहा कि हमने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से सुना है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/586-ह०–1064)
(नसाई–सुनन–1/665-ह०–2056)
(इब्ने हिब्बान–सही–4/83-ह०–2933)

-: अहकामे ज़ियारते क़ुबूर :-

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने तुमको ज़ियारते क़ुबूर से मना किया था पस अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो इब्ने माजा की रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि क्योंकि इससे दुनियाँ से बे रग़बती और आख़िरत की याद हासिल होती है और अबू दाऊद में इतना इज़ाफ़ा है कि ये तुम्हें मौत की याद दिलाती है। (अबू दाऊद-सुनन-3/583-ह०-3235)
(मुस्लिम-सही-2/418-ह०-2260)
(इब्ने माजा-सुनन-1/531-ह०-1571)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/580-ह०-1054)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़ब्रों की ज़ियारत किया करो इससे तुम्हें आख़िरत की याद आयेगी और मुर्दों को गुस्ल दिया करो कि उनके जिस्म का बोसीदा पन तुम्हारे लिये नसीहत है और नमाज़े जनाज़ा पढ़ा करो कि हो सकता है कि वो तुम्हें ग़मगीन कर दे और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में ग़मगीन होना हर भलाई के आने का सबब है।
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/29-ह०-9291)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-1/753-1395,6/343-7941)
(देलमी-अल फिरदौस-2/294-ह०-3343)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब-4/175-ह०-5309)

–: हुजूर का ज़ियारते कुबूर करना और सलामती की दुआ़ फ़रमाना :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) मदीना मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो अहले कुबूर की तरफ़ मुतव्वजे होकर फ़रमाया कि ऐ अहले कुबूर तुम पर सलामती हो और अल्लाह तआ़ला मेरी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाये और तुम हमसे पहले पहुँच गये हो और हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/580-ह०–1053)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) एक रात खड़े हुये और कपड़े पहने और बाहर निकले और जन्नतुल बक़ीअ़ पहुँचे और वहाँ जितनी देर अल्लाह तआ़ला को मन्जूर था खड़े रहे फिर लौटे फिर आपने फ़रमाया यक़ीनन मैं बक़ीअ़ वालों की तरफ़ दुआ़ करने को भेजा गया था।
(नसाई–सुनन–3/661-ह०–2042)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की बारी जब उन्के के यहाँ

होती तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) रात को बक़ीअ़ की तरफ़ निकलते और फ़रमाते ऐ मुसलमानों के घर वालो तुम पर सलामती हो और हम तुम वायदा दिये गये हैं और अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो हम तुमसे मुलाक़ात करने वाले हैं ऐ अल्लाह बक़ीअ़ वालों की मग़फ़िरत फ़रमां दे।
(नसाई–सुनन–3/661-ह०–2043)

हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) जब क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते तो आप फ़रमाते कि ऐ मोमिनो तुम्हारे ऊपर सलाम है और मुसलमानों तुम पर सलाम है और मुसलमानों के घर वालो तुम पर सलाम है और अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो हम तुमसे मुलाक़ात करेंगे और तुम हमसे आगे गये हो और हम तुम्हारे पीछे हैं मैं अल्लाह तआ़ला से तुम लोगों के वास्ते और अपने वास्ते सलामती चाहता हूँ ।
(नसाई–सुनन–3/661-ह०–2044)

–: काफ़िर की क़ब्र पर खड़े न होना :–

इरशादे बारी तआ़ला है :–
और कभी इन (मुनाफ़िक़ों) में से जो कोई मर जाये तो उस (के जनाज़े) पर न नमाज़ पढ़े और न ही आप उसकी क़ब्र पर खड़े हों। (सू०–तौबा–9/84)

-: क़ब्रों की ज़ियारत और रहमत व सलामती की दुआ़ करना :-

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने (फ़ौत शुदा) भाईयो की क़ब्र की ज़ियारत किया करो और उन्हें सलाम किया करो और उनके लिये रहमत की दुआ़ किया करो बेशक इसमें तुम्हारे लिये इ़बरत है।
(देलमी-अल फ़िरदौस-2/294-ह०-3341)

-: सहाबी का हुज़ूर की क़ब्रे अनवर की ज़ियारत करना :-

➡ हज़रत दाऊद बिन अबी सालेह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक रोज़ (खलीफ़ा-ए-वक़्त) मर्वान (रोज़ा-ए-रसूल) पर आया तो उसने देखा कि एक शख़्स नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की क़ब्रे अनवर पर अपना चेहरा झुकाये खड़ा हुआ है तो मर्वान ने उस शख़्स से कहा क्या तू जानता है कि तू क्या कर रहा है जब मर्वान उस शख़्स की तरफ़ बढ़ा तो देखा कि वो सहाबी-ए-रसूल हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) थे-

तो उन्होंने जवाब में कहा हाँ मैं जानता हूँ कि मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की बारगाहे अक्दस में हाज़िर हुआ हूँ किसी पत्थर के पास नहीं आया हूँ।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/674-ह०–8571)

–: रोज़े जुमआ़ वालिदैन की क़ब्र की ज़ियारत करने वालों की मग़फ़िरत :–

➡ हज़रत मुहम्मद बिन नुअ़मान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स जुमआ़ के दिन अपने वालिदैन की या उनमें से किसी एक की क़ब्र की ज़ियारत करे तो उसकी मग़फ़िरत कर दी जाती है और उसका नाम नेको कारों में लिखा जाता है।
(मिश्कात–1/378-ह०–1674)

–: क़ब्र पर पानी छिड़कना :–

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) को सर की जानिब से क़ब्र मे दाख़िल किया गया और उनकी क़ब्र पर पानी छिड़का गया (इब्ने माजा–सुनन–1/525–1551)

–: क़ब्रों को पुख़्ता न बनाना :–

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने क़ब्रों को पुख़्ता बनाने से मना फ़रमाया। (इब्ने माजा–सुनन–1/529-ह०–1562)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/579-ह०–1052)
(मुस्लिम–सही–2/413-ह०–2245)

–: क़ब्रों पर बैठने और उस पर ताअ़मीरात करने की मुमानियत :–

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से सुना आप मना फ़रमाते थे कि क़ब्र पर बैठा जाये या उसे पुख़्ता किया जाये या उस पर कोई तामीर की जाये।
(अबू दाऊद–सुनन–3/578-ह०–3225)
(नसाई–सुनन–1/656-ह०–2032)

➡ हज़रत वासिला बिन अस्क़अ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते है कि मैंने हज़रत मरसद गनाविया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को सुना वो बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़ब्रों पर मत बैठो और न उनकी तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ो।
(अबू दाऊद–सुनन–3/579-ह०–3229)

➡ हज़रत अबू सईद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने क़ब्र पर इमारत बनाने से मना फ़रमाया। (इब्ने माजा–सुनन–1/529-ह०–1564)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने क़ब्र पर कुछ भी लिखने से मना फ़रमाया। (इब्ने माजा–सुनन–1/529-ह०–1563)

–: अंगारों पर बैठना क़ब्र पर बैठने से बेहतर है :–

➡ हज़रत अबु हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई अंगारे पर बैठे जो तुम्हें जला दे ये तुम्हारे लिये क़ब्र पर बैठने से बेहतर है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/529-ह०–1566)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/578-ह०–1050)
(मुस्लिम–सही–2/413-ह०–2248)
(अबू दाऊद–सुनन–3/579-ह०–3228)
(नसाई–सुनन–1/662-ह०–2048)

➡ हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि

मुझे किसी मुसलमान की क़ब्र पर चलने से ज़्यादा पसंद है कि मैं अंगारे या तलवार पर चलूँ और आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने क़ब्रों के दरमियान क़ज़ाये हाज़त (पेशाब व पाख़ाना) करने से मना फ़रमाया।
(इब्ने माजा–सुनन–1/529-ह०–1567)

–: क़ब्र पर निशान देही के लिये पत्थर नसब करना :–

➡ जनाब मुत्तलिब (बिन अ़ब्दुल्लाह) ने बयान किया कि जब हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की वफ़ात हुई और उनका जनाज़ा लाया गया और दफ़्न किया गया तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने एक शख़्स से फ़रमाया कि एक पत्थर लाओ मगर वो उसे उठा न सका तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैह वसल्लम) उसकी तरफ़ उठे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उसे उठाया और क़ब्र पर सर की तरफ़ रख दिया और फ़रमाया मैं इससे अपने भाई की क़ब्र को पहचान सकूँगा और मेरे अह्ल में से जो कोई भी फ़ौत होगा मैं उसे इसके क़रीब दफ़्न करूँगा।
(अबू दाऊद–सुनन–3/567-ह०–3206)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/680-ह०–6744)

➡ हज़रत अस्बग़ बिन नुबाता बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की साहब ज़ादी खातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) अपने चचा हज़रत हम्ज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की क़ब्र पर हाज़िरी देती थी और आपने उनकी क़ब्र की पहचान के लिये उसके ऊपर एक झण्डा नसब किया हुआ था ये भी ज़िक्र किया गया है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की क़ब्रे मुबारक व हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) की क़ब्रों पर भी छोटे पत्थरों की निशानियाँ रखी गई थी।
(अब्दुर्रज़्ज़ाक–अल मुसन्निफ़–3/574-ह०–6717)

मरने वाले की तरफ़ से नज़र पूरी करना

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत साअ़द बिन उबादा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) से एक मसला पूछा कि मेरी माँ ने नज़र मानी थी और वो उसको पूरा करने से पहले फ़ौत हो गई तो आप ने फ़रमाया कि तू उनकी तरफ़ से अ़दा कर दे।
(मुस्लिम–सही–4/261-ह०–4235)
(बुख़ारी–सही–6/174-ह०–6698)
(अबू दाऊद–सुनन–4/627-ह०–3307)
(नसाई–सुनन–2/572-ह०–3692,3/70-3851)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि एक ख़ातून ने मन्नत माँगी कि वो हज करेगी लेकिन उसका इन्तिक़ाल हो गया तो उस ख़ातून का भाई ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ और उस मन्नत के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम उसकी मन्नत पूरी करो। (नसाई–सुनन–2/193-ह०–2636)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक औ़रत समुन्दरी सफ़र पर गई तो उसने नज़र मानी कि अगर अल्लाह तआ़ला ने उसे निजा़त दे दी तो वो एक महीना रोज़े रखेगी चुनाँचा अल्लाह तआ़ला ने उसे निज़ात दे दी मगर उसने रोज़े न रखे हत्ता कि वो मर गई पस उसकी बेटी नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में आयी तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उसे हुक्म दिया कि वो उसकी तरफ़ से रोज़े रखे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/628-ह०–3308)
(नसाई–सुनन–3/69-ह०–3850)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हज़रत साअ़द बिन उ़बादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से एक नज़र के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया जो उनकी वालिदा के ज़िम्मे बाक़ी थी और वो नज़र पूरी करने से–

पहले वफ़ात पा गईं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने उन्हें हुक्म दिया कि वो अपनी माँ की तरफ़ से नज़र पूरी करें चुनाँचा बाद में यही तरीक़ा मसनूना क़रार पाया।
(बुख़ारी–सही–6/174-ह०–6698)
(मुस्लिम–सही–4/261-ह०–4235)
(अबू दाऊद–सुनन–4/627-ह०–3307)

–: नज़र का कफ़्फ़ारा :–

➡ हज़रत उ़क़बा बिन अ़ामिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि नज़र का कफ़्फ़ारा वही है जो क़सम का कफ़्फ़ारा है यानी दस मसाकीन को खाना खिलाना।
(मुस्लिम–सही–4/266-ह०–4253)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह तुम्हारी बे मक़सद (और ग़ैर सन्जीदा) क़समों में तुम्हारी गिरफ़्त नहीं फ़रमाता लेकिन तुम्हारी उन (सन्जीदा) क़समों पर गिरफ़्त फ़रमाता है जिन्हें तुम (इरादी तौर पर) मज़बूत कर लो (अगर तुम ऐसी क़समों को तोड़ डालो) तो उसका कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को औसत (दर्जे का) खाना खिलाना है जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या (इसी तरह) उन (मिस्कीनों) को कपड़े देना है या एक गर्दन (यानी गुलाम या बांदी को) आज़ाद

करना है फिर जिसे (ये सब कुछ) मयस्सर न हो तो तीन दिन रोज़ा रखे ये तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जब तुम (क़सम) खा लो (और फिर तोड़ बैठो) (सू०–मायदा–5/89)

–: मरने वाले को तीन चीज़ों का सवाब पहुँचता रहता है :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई इन्सान मर जाता है तो उसके आअ़माल का सिलसिला ख़त्म हो जाता है सिवाये तीन चीज़ों के (इनका अज्र उसे बराबर मिलता रहता है) एक वो सद्क़ा जिसका नफ़ा जारी रहे दूसरा वो इ़ल्म जिससे फ़ायदा उठाया जाये तीसरा वो नेक औलाद जो उसके लिये दुअ़ा करे। (नसाई–सुनन–2/5713684)
(मुस्लिम–सही–4/254-ह०–4223)
(अबू दाऊद–सुनन–3/323ह०–-2880)
(इब्ने माजा–सुनन–1/88-ह०–239)
(अहमद बिन हम्बल–अल मुस्नद–2/372-ह०–8831)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–6/278-ह०–12415)
(तबरानी–मौअ़जम औसत–4/8-3ह०–472)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/242-ह०–390)
(अबू यआला–अल मुस्नद–11/343-ह०–6457)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/247-ह०–3447)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/283-ह०–1109)

–: मरने वाले को ईसाले सवाब और उसकी तरफ़ से सद्क़ा करना :–

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में एक औ़रत हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी माँ फ़ौत हो गई है और उस पर एक माह के रोज़े वाजिब हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया ये बताओ अगर उस पर कुछ क़र्ज़ होता तो क्या तुम उसकी तरफ़ से वो क़र्ज़ अदा करती तो उस औ़रत ने कहा हाँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया पस अल्लाह तआ़ला क़र्ज़ अदा किये जाने का ज़्यादा हक़दार है।
(मुस्लिम–सही–3/146-ह०–2693)
(इब्ने माजा–सुनन–1/559-ह०–1758)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/255-ह०–8012)
(अबू दाऊद–सुनन–4/629-ह०–3310)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि मेरा बाप मर गया है अगर मैं उसकी तरफ़ से सद्क़ा करूँ तो क्या उसके गुनाह बख़्शे जायेंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– हाँ। (मुस्लिम–सही–4/253-ह०–4219)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि साअ़द बिन उ़बादा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की वालिदा फ़ौत हो गईं तो उन्होंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल मेरी वालिदा फ़ौत हो गई हैं अगर मैं अपनी माँ की तरफ़ से कोई चीज़ सद्क़ा करूँ तो वो उन्हें नफ़ा पहुँचायेगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया – हाँ ज़रुर नफ़ा पहुँचायेगा तो हज़रत साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने कहा कि मैं आपको गवाह बनाकर कहता हूँ कि मेरा एक फलदार बाग़ उनकी तरफ़ से सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सही–3/191-ह०–2756)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/403-ह०–669)
(अबू दाऊद–सुनन–3/324-ह०–2882)
(नसाई–सुनन–2/570-ह०–3683)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी वालिदा फ़ौत हो चुकी हैं अगर मैं उनकी तरफ़ से सद्क़ा करूँ तो क्या वो उन्हें नफ़ा देगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ फिर उसने कहा कि मेरा एक खजूरों का बाग़ है तो आप गवाह रहें कि मैंने उसे अपनी वालिदा की तरफ़ से सद्क़ा कर दिया।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/403-ह०–669)
(अबू दाऊद–सुनन–3/118-ह०–2882)
(नसाई–सुनन–6/252-ह०–3655)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/581-ह०–1531)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि मेरी माँ मर गई अगर मैं उसकी तरफ़ से सद्क़ा करूँ तो क्या मुझे सवाब मिलेगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया–हाँ (इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/776-ह०–12203) (मुस्लिम–सही–4/253-ह०–4220)

➡ हज़रत साअ़द बिन उ़बादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी वालिदा उम्मे साअ़द फ़ौत हो गईं हैं तो कौन सा सद्क़ा अफ़ज़ल है जो मैं उनकी तरफ़ से करूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया– पानी चुनाँचा उन्होंने एक कुआँ खुदवाया और कहा कि ये मेरी वालिदा उम्मे साअ़द की तरफ़ से है। (अबू दाऊद–सुनन–2/333-ह०–1681)

➡ हजरत साअ़द बिन उ़बादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि उन्होंने हुजर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि मेरी वालिदा फ़ौत हो गई हैं और मैं उनकी तरफ़ से कुछ सद्क़ा ख़ैरात करना चाहता हूँ इस बात पर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि ज़रुर करो हज़रत साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया कौन सा सद्क़ा अफ़ज़ल है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया पानी पिलाना (यानी प्यासे को

पानी पिलाना, ऐसी जगहों पर पानी का बन्दोबस्त करना जहाँ उसकी ज़रुरत हो) तो अभी तक मदीने में साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की सबील है। (नसाई–सुनन–5/588-ह०–3699)

बाद वफ़ात वालिदैन के हुकूक़ व उनकी तरफ़ से रोज़ा, नमाज़, हज अदा करना

➡ हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीआ (रज़ि–अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हम हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर थे कि बनू सलमा के एक मर्द हाज़िर हुये और अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल मेरे वालिदैन के इन्तिक़ाल के बाद भी उनके साथ हुस्ने सुलूक़ की कोई सूरत मेरे लिये है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया जी हाँ तुम उनके लिये दुआ़ा व अस्तग़फार करो और उनकी वफ़ात के बाद उनके वायदों को पूरा करो और उनसे मिलने वाले रिश्तेदारों की इ़ज़्ज़त व इहतिराम करो और उनके ख़ास रिश्तेदारों के साथ सिला रहमी करो। (इब्ने माजा–सुनन–3/180-ह०–3664) (अबू दाऊद–सुनन–6/840-ह०–5142)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में एक औ़रत हाज़िर

हुई और अ़र्ज़ किया कि मेरी वालिदा के ज़िम्मे दो महीने के रोज़े हैं क्या ये काफ़ी होगा कि अगर मैं उनकी तरफ़ से रोज़े रख लूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ फिर उसने अ़र्ज़ किया क्या ये काफ़ी होगा कि मैं उनकी तरफ़ से हज करूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/778-ह०–12213)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक नेकी के बाद नेकी ये है कि तू अपने वालिदैन के लिये अपनी नमाज़ के साथ–साथ उनकी तरफ़ से भी नमाज़ अदा कर और उनकी तरफ़ से भी रोज़े रख और अपने सद्क़े के साथ–साथ उनकी तरफ़ से भी सद्का कर।
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/777-ह०–12210)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो फ़ौत हो जाये और उसके ज़िम्मे रोज़े हों तो उसका वली (वारिस) उसकी तरफ़ से रोज़ा रखे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/629-ह०–3311)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) की ख़िदमत में एक औ़रत हाज़िर

हुई और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी माँ फ़ौत हो गई है और उस पर एक माह के रोज़े वाजिब हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया ये बताओ अगर उस पर कुछ क़र्ज़ होता तो क्या तुम उसकी तरफ़ से वो क़र्ज़ अदा करती तो उस औ़रत ने कहा हाँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया पस अल्लाह तआ़ला क़र्ज़ अदा किये जाने का ज़्यादा हक़दार है।
(मुस्लिम–सही–3/146-ह०–2693)
(इब्ने माजा–सुनन–1/559-ह०–1758)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/255-ह०–8012)
(अबू दाऊद–सुनन–4/629-ह०–3310)

–: इस्तग़फ़ार की फज़ीलत :–

➡ हजरत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जन्नत में मर्द का दर्जा बुलन्द कर दिया जाता है तो वो मर्द अ़र्ज़ करता है कि ये कैसे हुआ (मेरे अ़मल तो इतने न थे) तो इरशाद होता है कि तुम्हारी औलाद के तुम्हारे हक़ में इस्तग़फ़ार करने के सबब से।
(इब्ने माजा–सुनन–3/179-ह०–3660)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक किसी शख़्स

का एक दर्जा (जन्नत में) बढ़ जाता है तो अ़र्ज़ किया गया कि वो कैसे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये उस इस्तग़फ़ार की वजह से है कि जब बेटा अपने माँ-बाप के लिये उनकी वफ़ात के बाद इस्तग़फ़ार करे।
(इब्ने अबी शैबा-अल मुसन्निफ़-3/777-ह०-12207)

-: मय्यत को सवाब पहुँचता है :-

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मरने वाले की तरफ़ से रोज़ा व सद्क़ा व गुलाम आज़ाद करने का सवाब पहुँचता है
(इब्ने अबी शैबा-अल मुसन्निफ़-3/776-ह०-12204)

ज़िन्दा की तरफ़ से मय्यत को तोहफ़ा और मय्यत दुआ़ की मुन्तज़िर रहती है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि मय्यत क़ब्र में डूबने वाले फ़रियादी की तरह होती है और वो अपने घर वालों की दुआ़ओं की मुन्तज़िर रहती है और मय्यत के हक़ में वालिद की दुआ़ या माँ की दुआ़ या भाई की दुआ़ या बहन की दुआ़ या औलाद की दुआ़ या अहले ज़मीन की दुआ़ जो मय्यत को ईसाल होती है उससे मय्यत

राहत व आराम पाती है और मज़कूरा दुअ़ाओं को अल्लाह तअ़ाला मय्यत तक उसकी क़ब्र में पहाड़ों की मिस्ल दाख़िल करता है बेशक ज़िन्दा लोगों की तरफ़ से मरने वालों के हक़ मे हद्‌या और तोहफ़ा ये है कि उनके लिये इस्तग़फ़ार करना।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/30-ह०–9295)
(कंज़ुल उ़म्माल–8/319-ह०–42971)

–: क़ब्रिस्तान में सू०–इख़लास पढ़ने की फ़ज़ीलत :–

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो क़ब्रिस्तान से गुज़रा और उसने 11 मर्तबा सू०- इख़लास पढ़ा और उसका सवाब मुर्दों को बख़्श दिया तो उसे मुर्दों के बराबर सवाब मिलेगा। (कंज़ुल उ़म्माल–8/280-ह०–42596)

–: घर वालों के आअ़माल क़ब्र वालों पर पेश होते हैं :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हारे आअ़माल तुम्हारे फ़ौत शुदा घर वालों पर पेश किये जाते हैं और जब वो नेकियाँ देखते हैं तो वो खुश होते हैं और जब कोई बुराई देखते हैं तो उसे नापंसद करते हैं और जब कोई नई मय्यत क़ब्र में आती है

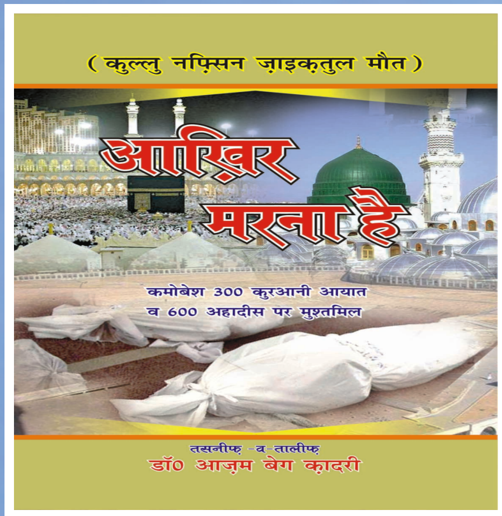
तो वो उससे अपने घर वालों का हाल पूछते हैं यहाँ तक कि मुर्दा अपनी बीबी के मुताअ़ल्लिक़ पूछता है और कोई शख़्स किसी ऐसे शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त करता है जो फ़ौत हो चुका हो तो वो कहते हैं कि मेरे पास नहीं आया पस अफ़सोस उसे उसके ठिकाने जहन्नुम के तरफ़ ले जाया गया।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/321-ह०–42979)

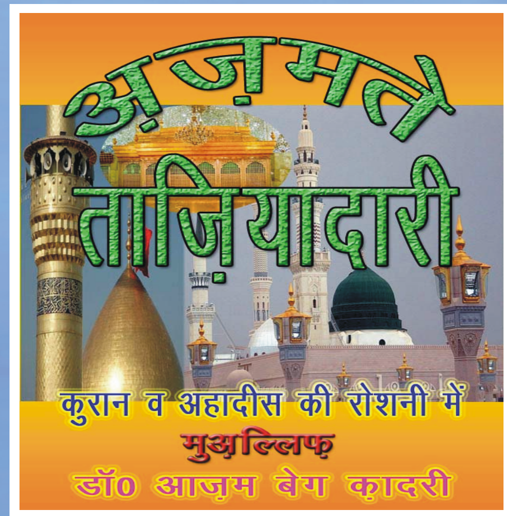
क़ब्र वाला सलाम का जवाब देता है

➡ हजरत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी जब ऐसी क़ब्र के पास से गुज़रे जिसे वो जानता हो या न जानता हो और वो उसे सलाम करे तो क़ब्र वाला उसके सलाम का जवाब देता है।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/324-ह०–42993)

हुज़ूर का क़ब्रों पर दुआ़ऐ बख़्शिश माँगना

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह वसल्लम) जब मदीना की क़ब्रों पर गुज़रे तो अपना मुँह मुबारक सामने किया और कहा कि सलाम हो तुम पर ऐ क़ब्र वालो और अल्लाह तआ़ला बख़्शे हमको और तुमको और तुम हमारे पेश ख़ेमा हो और हम तुम्हारे पीछे हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/580-ह०–1053)

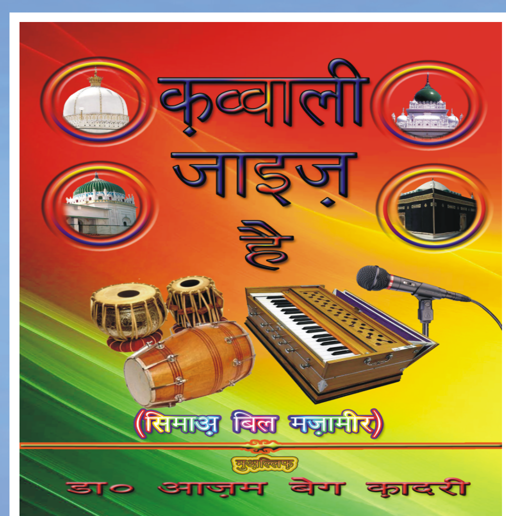












मदार बुक सेलर

मकनपुर (कानपुर) 09695661767